सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 357, नई दिल्ली । मंगलवार, 04 फरवरी 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अपने मिशन में सफल होने के लिए आपको अपने लक्ष्य के प्रति एक चित भाव से समर्पित होना पड़ेगा।

03 'केजरीवाल के स्वास्थ्य मॉडल बीमार', सीएम रेखा गुप्ता ने खोले कई राज
06 सीखने में शहर से ज्यादा समय खर्च कर रहे गांव के लोग
08 "दाल रोटी वाले": सेवा और समर्पण की अनोखी कहानी

नवनिर्मित भाजपा दिल्ली सरकार भी पूर्व आप सरकार की राह पर

संजय बाटला

नई दिल्ली। व्यवसायिक गतिविधि में शामिल वाहन व्यवसाय में जुड़े मालिकों ने खुले रूप में आम आदमी पार्टी दिल्ली सरकार का विरोध कर दिल्ली में भाजपा सरकार का गठन करवाने में अपना पूर्ण योगदान इस लिया दिया था क्योंकि आम आदमी पार्टी सरकार ने दिल्ली के व्यवसायिक वाहन मालिकों को लूटने के साथ बर्बाद करने में कोई कमी नहीं छोड़ी थी और सच्चाई आज यह सामने आ रही है की भाजपा सरकार भी उसी राह पर चल रही है और व्यवसायिक वाहन मालिकों के साथ हुए गलत को ठीक करने की जगह उसी का अनुमोदन कर वाहन मालिकों को पहले से भी अधिक परेशानियों में डाल रही हैं। जिसके पुख्ता सबूत दिख रहे हैं।

वाहन क्षेत्र में कार्यरत अस्थाई/कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारियों को नियमित करने पर भी कोई कार्यवाही नहीं की जैसा की आम आदमी पार्टी ने अपने कार्यकाल में कोई कार्यवाही नहीं की थी

बस मार्शल और सिविल डिफेंस में कार्यरत व्यक्तियों के लिए कोई नया राहत भरा फैसला लेने की कोई कोशिश नहीं की।

परिवहन आयुक्त द्वारा गैर कानूनी आदेशों की बाढ़ आप सरकार के कार्यकाल से ज्यादा भाजपा सरकार के आने पर, सिद्ध करता है की सरकार की मंशा क्या है ?

भाजपा पार्टी शायद दिल्ली का सिंहासन प्राप्त करते ही भूल गई की उन्हें ताज पहनवाने और सिंहासन दिलवाने के पीछे सबसे बड़े हाथ वाहन क्षेत्र से जुड़ी जनता का है।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com
रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/ एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण
रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ बड़ौदा दिल्ली 110042

कोलकाता की सड़कों पर नई येलो टैक्सी, पुरानी एंबेसडर गाड़ियां होंगी इतिहास

परिवहन विशेष न्यूज

कोलकाता की पहचान बन चुकी पीली टैक्सियां अब धीरे-धीरे कम होती जा रही हैं। बीते कुछ सालों में कोलकाता की येलो टैक्सियों की संख्या तेजी से घट रही थी।

कोलकाता। कोलकाता की पहचान बन चुकी पीली टैक्सियां अब धीरे-धीरे कम होती जा रही हैं। इसी को देखते हुए पश्चिम बंगाल सरकार ने एक निजी कंपनी के साथ मिलकर 20 नई येलो टैक्सियों की एक फ्लीट लॉन्च की है। लेकिन इस बार ये टैक्सियां हिंदुस्तान एंबेसडर नहीं, बल्कि मारुति सुजुकी वैगनआर मॉडल पर आधारित हैं।

बीते कुछ सालों में कोलकाता की येलो टैक्सियों की संख्या तेजी से घट रही थी। ओला-उबर जैसी ऐप-आधारित कैब सेवाओं के बढ़ने और पुराने एंबेसडर मॉडल में आधुनिक फीचर्स (जैसे AC) की कमी के कारण इनका चलन कम हो गया। इसके अलावा, डीजल से चलने वाली एंबेसडर कारों की उम्र भी पूरी हो चुकी है, जिससे इन्हें हटाने का फैसला लिया गया।

2009 के कोर्ट ऑर्डर के चलते हट रही हैं पुरानी टैक्सियां

ये बदलाव कलकत्ता हाई कोर्ट के 2009 के आदेश के तहत हो रहा है, जिसमें कहा गया था कि 15 साल से पुरानी कमर्शियल गाड़ियां कोलकाता और हावड़ा में नहीं चलेंगी। तीन साल पहले तक 20,000 से ज्यादा एंबेसडर येलो टैक्सियां सड़कों पर थीं, लेकिन 2025 के आखिर तक इनकी संख्या 2,000 से भी कम रह जाएगी। 2027-28 तक ये पूरी तरह बंद हो जाएंगी।

नए टैक्सियों को नाम दिया गया 'येलो हैरिटेज कैब्स'

मारुति सुजुकी वैगनआर मॉडल पर बनी इन नई येलो टैक्सियों को ₹येलो हैरिटेज कैब्स₹ नाम दिया गया है। पश्चिम बंगाल के परिवहन मंत्री स्नेहाशीष चक्रवर्ती ने इन्हें हरी झंडी दिखाई। एक रिपोर्ट के मुताबिक, अगले दो महीनों में 3,000 नई येलो टैक्सियां सड़कों पर आ जाएंगी। ये सभी टैक्सियां आधुनिक फीचर्स से लैस होंगी, जो पुरानी एंबेसडर गाड़ियों में नहीं थे।

अब पेट्रोल और CNG से चलेंगी येलो टैक्सियां

नई वैगनआर टैक्सियां पेट्रोल और CNG पर चलेंगी, जिससे ये ज्यादा किफायती और पर्यावरण के अनुकूल होंगी। इन्हें बुक करने के लिए पश्चिम बंगाल सरकार ने ₹यात्री साथी एप₹ लॉन्च किया है, जिससे लोग आसानी से अपनी यात्रा प्लान कर सकेंगे।

राजधानी में 1 अप्रैल से 15 साल पुराने वाहनों को पेट्रोल-डीजल नहीं मिलने पर क्या बोले विशेषज्ञ

परिवहन विशेष न्यूज

राजधानी में वायु प्रदूषण पर लगाम लगाने के लिए दिल्ली की भाजपा सरकार ने कदम बढ़ाया है। दिल्ली सरकार ने शनिवार को घोषणा की थी कि 31 मार्च के बाद राजधानी में पेट्रोल पंपों पर 15 साल से अधिक पुराने वाहनों को पेट्रोल-डीजल नहीं दिया जाएगा। एक्सपर्ट ने सरकार के इस कदम का स्वागत किया है। साथ ही नए वाहनों की बढ़ती संख्या पर रोक लगाने की सलाह दी है।

नई दिल्ली। 15 साल पुराने वाहनों को एक अप्रैल से ईंधन नहीं देने के दिल्ली सरकार के निर्णय का पर्यावरणविदों ने भी स्वागत किया है। उनका कहना है कि पुराने वाहनों को सड़कों से हटाने के एनजीटी एवं सुप्रीम कोर्ट के निर्णय पर टलते आ रहे क्रियान्वयन को लेकर भी दिल्ली सरकार का यह कदम मददगार होगा। हालांकि उनका यह भी कहना है कि राजधानी का प्रदूषण कम करने के लिए नए वाहनों की बढ़ती संख्या पर अंकुश लगाने सहित सार्वजनिक परिवहन सेवा को मजबूत करना भी उतना ही जरूरी है।

सेंटर फॉर साइंस एंड एन्वायरमेंट (सीएसई) की कार्यकारी निदेशक अनुमिता रायचौधरी का कहना है कि इसमें कोई शक नहीं कि पुराने वाहन कहीं अधिक प्रदूषण फैलाते हैं। इसीलिए एनजीटी और विभिन्न अदालतें भी उन्हें सड़कों से हटाने की वकालत करती रही हैं।

राजधानी की सेहत के लिए इन वाहनों का सड़कों से हटना बहुत जरूरी है। किंतु इतने भर से प्रदूषण कम नहीं होगा। निजी वाहनों पर बढ़ रही निर्भरता को भी कम करना होगा। साथ ही सार्वजनिक परिवहन सेवा को मजबूत और भरोसेमंद बनाना होगा।

5.81 प्रतिशत की दर से बढ़ रही वाहनों की संख्या

सफर इंडिया के पूर्व संस्थापक निदेशक गुफरान बेग भी कमोबेश ऐसी ही राय रखते हैं। उनका कहना है कि साल दर साल 5.81 प्रतिशत की दर से दिल्ली में निजी वाहनों की संख्या बढ़ती जा रही है।

सबसे ज्यादा संख्या दोपहिया वाहन और उसके बाद कारों की है। जहां तक डीजल वाहनों की बात है तो इनकी संख्या निजी वाहनों में अच्छी खासी है जो प्रदूषण में इजाफे के लिए प्रमुख रूप से जिम्मेदार है।

शोध रिपोर्ट बताती है कि दिल्ली के प्रदूषण में पीएम 10 के स्तर पर वाहनों से 14 एवं पीएम 2.5 के स्तर पर 25 से 36 प्रतिशत प्रदूषण होता है। इस पर भी बाटलनेक समस्या को और गंभीर बना देते हैं। खुद ट्रैफिक पुलिस ने दिल्ली में ऐसे 91 प्वाइंट चिन्हित किए हैं, जहां जाम लगता है और वाहनों की रफ्तार बहुत कम हो जाती है।

बिना प्रदूषण प्रमाण पत्र के रफ्तार भर रहे कितने वाहन ?

ऐसे प्वाइंट भी प्रदूषण बढ़ाने में खासे मददगार हैं। कारण, जाम के दौरान भी

और सड़कों पर वाहनों के रेंगने के क्रम में भी ईंधन जलता रहता है, इंजन भी चालू ही रहता है। स्वाभाविक रूप से इस स्थिति में प्रदूषण तो बढ़ेगा ही। चिंताजनक यह भी है कि दिल्ली में चलने वाले 60 प्रतिशत से अधिक वाहन बिना प्रदूषण प्रमाण पत्र के रफ्तार भर रहे हैं।

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के पूर्व अपर निदेशक डॉ. एस के त्यागी इस तथ्य को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि सरकारी स्तर पर अभी दिल्ली एनसीआर को एक मानकर नहीं देखा जा रहा है। दोनों के लिए कोई संयुक्त कार्ययोजना भी आज तक नहीं बन पाई है।

गंभीरता से विचार किया जाए तो रीजनल ट्रांसपोर्ट भी राजधानी के प्रदूषण में एक अहम रोल अदा करता है। जैसे, दिल्ली में सार्वजनिक वाहन सिर्फ सीएनजी से ही चल सकते हैं लेकेनि दूसरे राज्यों के डीजल वाहन भी यहां धड़ल्ले से दौड़ते रहते हैं।

दिल्ली बार्डर पर डग्गामार वाहन भी खूब रफ्तार भरते हैं। ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (ग्रेप) के पालन में सख्ती का अभाव भी हमेशा से खटकता रहा है। सख्ती नहीं होने के कारण ही विभिन्न राज्यों में सामंजस्य नहीं रहता।

वाहनों से निकलने वाली जहरीली गैस की मात्रा

कार्बन मोनोआक्साइड 217.7 टन प्रतिदिन

हाइड्रो कार्बन 66.7 टन प्रतिदिन

नाइट्रोजन आक्साइड 84.1 टन प्रतिदिन

पार्टिकुलेट मैटर 9.7 टन प्रतिदिन

सल्फर डाई आक्साइड 0.72 टन प्रतिदिन

जहरीली गैसों से स्वास्थ्य पर पड़ने वाला प्रभाव

कार्बन मोनोआक्साइड-हृदय संबंधी रोग, सिरदर्द, थकान, मानसिक बीमारियां।

नाइट्रोजन आक्साइड- फेफड़ा संबंधी बीमारी, आंख, नाक व गले से संबंधित बीमारी।

सल्फर डाई ऑक्साइड- फेफड़े को नुकसान।

पार्टिकुलेट मैटर-रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होना, यकृत व किडनी को नुकसान, तनाव, बच्चों के मानसिक विकास में बाधा।

अब सोनिया विहार पुस्ते पर नहीं लगेगा जाम, दो चरणों में काम होगा शुरू, मिलेगी जाम से राहत

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली के सोनिया विहार पुस्ते पर लगने वाले जाम से जल्द लोगों के राहत मिलेगी। इस समस्या को दूर करने के लिए दो चरणों में काम पूरा किया जाएगा। पहले चरण में यातायात को व्यवस्थित करने के लिए पुलिसकर्मियों की संख्या बढ़ाई जाएगी। इसके बाद दूसरे चरण में सोनिया विहार पुस्ते को डबल करने पर काम होगा। यहां पर एलिवेटेड सड़क बनाई जाएगी ।

> पुस्ता के जिस भाग में एनजीटी ने सड़क बनाने पर रोक लगा रखी है यहां पर एलिवेटेड सड़क बनाई जाएगी जिसमें पिलर खड़े कर सड़क का काम पूरा किया जाएगा। इसमें इस तरीके से रास्ता निकाला जाएगा। पुस्ता पर जहां पर अभी मिट्टी नहीं पड़ी है वहां मिट्टी डालकर और जो मिट्टी पड़ी है उसको सड़क बनाकर जल्द ही इस काम की शुरुआत की जाएगी।
> आपके प्रियजनों को आज ही नामांकित करें, उनका कल सुरक्षित बनाएँ
> -कपिल मिश्रा पर्यटन मंत्री, दिल्ली

नई दिल्ली। आने वाले समय में सोनिया विहार पुस्ते पर जाम नहीं लगेगा। इलाके के विधायक और पर्यटन मंत्री बने कपिल मिश्रा इसे लेकर गंभीर हैं। इस समस्या पर दो चरणों में काम करने की योजना बनाई है। उन्होंने कहा कि पहले चरण के तहत अभी सुबह और शाम के समय पुस्ता पर पुलिस कर्मियों की संख्या बढ़ाई जाएगी जो यातायात को ठीक से नियंत्रित कर सकें।

दूसरे चरण में पुस्ते को चौड़ा किए जाने की योजना है। पुस्ते के शून्य से लेकर एक पुस्ते के जिस भाग पर एनजीटी की सड़क बनाने पर रोक है। पुस्ते के इस भाग की सड़क को एलिवेटेड बनाया जाएगा, वहीं खजूरी चौक पर यातायात को जाम मुक्त किया जाएगा। अभी सोनिया विहार पुस्ते पर शाम के समय दो दो घंटे से अधिक समय तक जाम लगता है।

सोनिया विहार पुस्ता रोड सोनिया विहार और गाजियाबाद के लोनी ट्रानिका सिटी से लेकर बागपत बड़ौत आने जाने वालों के लिए एक प्रमुख मार्ग बन गया है। इसका सबसे अधिक उपयोग सोनिया विहार के लोग दिल्ली के अन्य क्षेत्रों में आवागमन के लिए करते हैं। एक से लेकर पांच पुस्ता तक बसी सोनिया विहार कॉलोनी की आबादी भी काफी बढ़ चुकी है।

बड़ी संख्या में यहां मतदाता हैं और किसी भी दल को चुनाव जिताने में इस कॉलोनी की प्रमुख भूमिका रहती है। यहां के लोगों के लिए बड़ी समस्या इस पुस्ता पर लगने वाला जाम है जो खासकर शाम के समय अधिक बढ़ जाता है।

लोग घंटों तक जाम में फंसे रहते हैं, घर देर से पहुंचते हैं और अगर सोनिया विहार से किसी को कहीं अस्पताल जाना पड़ जाता है तो उसे आवागमन करने में भयंकर समस्या होती है।

पर्यटन मंत्री कपिल मिश्रा ने खजूरी चौक पर सड़क निर्माण कार्य को देखा।

सोनिया विहार पुस्ता रोड को चौड़ा किए जाने की पिछले कई सालों से मांग उठती रही है। पिछले सालों की बात करें तो पिछले 5 सालों में इसके काम के लिए कोई प्रगति इसलिए भी नहीं हो सकी कि यहां पर दिल्ली में आम आदमी पार्टी की सरकार थी और इस इलाके के विधायक मोहन सिंह बिष्ट भाजपा से थे।

राजनीतिक विचारधारा और आपसी लड़ाई के चलते इस मामले में काम नहीं हो सका। मगर अब इस काम की उम्मीद इसलिए भी जगी है कि इस इलाके से भाजपा से चुनकर आए कपिल मिश्रा दिल्ली सरकार में कैबिनेट मंत्री भी हैं। दिल्ली में भाजपा की सरकार होने से अब इस काम में तेजी आने की उम्मीद है।

पुस्ते की बात करें तो इसके कुछ भाग में डबल किए जाने के लिए मिट्टी डाली जा चुकी है कुछ में अभी डाले जाने की जरूरत है। मगर इसके शून्य पुस्ता से एक पुस्ता तक के भाग में एनजीटी द्वारा सड़क न बनने के निर्देश हैं।

वह कहते हैं प्राथमिकता वाले कार्यों में सबसे ऊपर इस समस्या को दूर कराया जाना भी है। वह भी मानते हैं वह भी इस जाम में कई बार फंस चुके हैं। उनकी मानें तो पिछले सालों में इस समस्या के निदान के लिए कोई काम नहीं हो सका है।

खजूरी चौक पर बढ़ेगी पुलिसकर्मियों की संख्या

वह बताते हैं कि इस समस्या से जनता को दो चरणों में काम किया जाएगा। पहले चरण में सोनिया विहार पुस्ता पर जाम वाले हिस्सों सहित खजूरी चौक पर पुलिसकर्मियों की संख्या बढ़ाई जाएगी। जिससे कि यहां अव्यवस्था ना हो और इसके बाद स्थाई तौर पर जाम के निदान के लिए काम शुरू होगा।

दूसरे चरण के लिए जल्द ही टेंडर जारी किए जाएंगे। इसके अलावा सोनिया विहार सहित पूरे इलाके में गंदे पानी की निकासी की समस्या पर भी जल्द काम शुरू होगा। इलाके में काफी पहले डाली गई पानी की लाइन को कनेक्शन से जोड़ा जाएगा। सीवर लाइन डाली जाएगी।

रेवती नक्षत्र में जन्मे जातक का स्वभाव, कैरियर, रोग और उपाय

ज्योतिषाचार्य पं योगेश पौराणिक

हमारे नक्षत्र मंडल का आखरी नक्षत्र रेवती है। यह 32 तारों का समूह है जो मृदंग की आकृति के समान दिखाई देता है। रेवती नक्षत्र का योग तारा मंद कांतिवृत के समीप होने से धुंधला दिखाई देता है। रेवती शब्द का अर्थ है धनाढ्य या प्रतिष्ठित। अष्ट लक्ष्मी में जो योग लक्ष्मी है उनका संबंध रेवती नक्षत्र से ही है। रेवती नक्षत्र के नक्षत्रपति बुध ग्रह तथा अधिपति देवता पूषा(पोषण करने वाला) है। रेवती एक सात्विक नक्षत्र है । तीसरे तृतीयांश का अंतिम नक्षत्र होने के कारण रेवती को गंड मूल संज्ञक नक्षत्र माना गया है।

स्वभाव : रेवती नक्षत्र में जन्मा जातक दृढ निश्चयी, आस्थावान,धैर्य धारण करने वाला,उत्साही,आशावान, सद्गुणी,परिश्रमी,अतिभावुक, सौम्य,विनम्र,मिलनसार तथा संवेदनशील होता है। विद्वानों ने इस नक्षत्र के जन्मे जातक को पुष्ट देह वाला,शूरवीर,धनी तथा भाग्यशाली बतलाया है।

कैरियर : रेवती नक्षत्र में जन्मे जातक कलाकार,अभिनेता, चित्रकार, बस सेवा,वायु सेना,ज्योतिषी,कथावाचक,प्रबंधक,सड़क निर्माण अधिकारी,जल सेना,जल व्यापार,ड्राइवर,सुरक्षा कर्मी,पुलिस,सेना, रत्न व्यापारी आदि के क्षेत्र में कैरियर बनाकर सफलता प्राप्त करते है।

रोग : रेवती नक्षत्र में जन्मे जातकों को जुखाम,सर्दी,खांसी,छाती से सम्बन्धित रोग,वायरल फीवर,जोड़ो में दर्द, वात पीड़ा,मतिभ्रम, बहरापन आदि रोगों से जूझना पड़ सकता है।

उपाय : रेवती नक्षत्र में जन्मे लोगो को सभी प्रकार के अनिष्टों से मुक्ति हेतु भगवान विष्णु की पूजा करना चाहिए तथा गुरुवार का वृहस्पति देव का व्रत करना इन्हे सर्वथा लाभकरी सिद्ध होता है। ऐं बीज मंत्र का जाप करना इनके लिए कल्याणकारी होता है। आसमानी नीला तथा हल्का पीला रंग इनके लिए भाग्यशाली सिद्ध होता है।

श्रीकाशी विश्वनाथ महात्म्य

1. सम्पूर्ण जीवन में विश्व भर के समस्त लिंगो की आराधना करने से जो पुण्य मुश्किल से मिलता है, वही पुण्य श्रद्धापूर्वक एक बार भी विश्वेश्वर की पूजा करने से तुरंत मिल जाता है।

2. ज़ब हजारों जन्मों के कमाए हुवे पुण्य इकट्ठे होतें हैं, तब उन्ही के बदले में विश्वनाथ का दर्शन प्राप्त होता है।

3. विधानयुक्त करोड़ों गौदान करने से जो फल मिलता है, भगवान विश्वेश्वर विश्वनाथ के दर्शन से वही पुण्य प्राप्त होता है।

4. महर्षियों ने षोडशविध महादानो से जो पुण्य कहा है, वही पुण्य भगवान विश्वेश्वर पर पुष्प चढ़ा देने से मिल जाता है।

5. अश्वमेध इत्यादि समस्त यज्ञ करने से जो फल होता है, वही फल श्री काशी विश्वनाथ जी को पंचामृत से स्नान कराने से मिल जाता है।

6. हजारों वजपेय यज्ञ करने से जो पुण्य मिलता है, उसका सौ गुणा फल विश्वनाथ जी को उत्तम नैवेद्य लगाने से मिलता है।

7. जो कोई ध्वजा, छत्र,चामर इत्यादि से श्री काशी विश्वनाथ को सुसज्जित करता है, वह भूमण्डल में एकछत्र राज्य का भोग पाता है।

8. भगवान विश्वनाथ की महापूजा की सामग्री जो कोई चढ़ाता है, उसे इस संसार में कहीं पर किसी संपत्ति का अभाव नही होता।

9. इसी भांति जो मनुष्य विश्वनाथ के दूधस्नान के लिए धेनु को अर्पण करता है या नित्य गौ के दूध की व्यवस्था करता हैं , उसके पूर्व पुरुष लोग क्षीरसागर के तट पर निवास करने लगते हैं।

10. विश्वनाथ जी के मंदिर पर जो रंग एवं चित्रकारी बनवाये, तोह कैलाश में उसको चित्रों से विभुषित भवन मिलता है।

11. श्री काशी विश्वनाथ जी के पास में केवल रूद्रसूक्त के ही पाठ करने से समग्र वेदअध्ययन का पुण्य प्राप्त होता है।

यह सम्पूर्ण पंक्तिया स्कन्दपुराण के काशी खण्ड में वर्णित की गईं हैं।

दाद एक परिचय:-

यह एक प्रकार का चर्म रोग है। जब यह रोग किसी व्यक्ति को हो जाता है तो उसके शरीर की त्वचा पर छल्ले जैसे चकत्ते हो जाते हैं। दाद शरीर की त्वचा पर धब्बे के रूप में भी पाया जाता है। दाद व्यक्तियों की हथेलियों, एड़ियों, खोपड़ी, दाढ़ी तथा शरीर के किसी भी भाग में हो सकता है। दाद शरीर के जिस भाग पर होता है उस भाग पर खुजली मचती है और जब व्यक्ति इसे खुजलाने लगता है तो यह और भी फैलने लगता है।

दाद होने का कारण:-

दाद शरीर की त्वचा पर एक विशेष प्रकार के कीटाणु की उत्पत्ति के कारण होता है।

दाद रोग शरीर की ठीक प्रकार से सफाई न करने के कारण होता है। शरीर का कोई अंग अधिक पानी में भीगने लगता है तो यह रोग उस व्यक्ति को हो जाता है।

दाद का रोग एक प्रकार का तेज संक्रामक रोग है। इसलिए जिस व्यक्ति को यह रोग हो गया हो, उसके तौलियों ब्रशों तथा और भी ऐसी चीजें जिन्हें वह व्यक्ति उपयोग करता है, उन चीजों को यदि कोई अन्य व्यक्ति उपयोग करता है तो यह रोग उस दूसरे व्यक्ति को भी हो जाता है।

दाद होने पर प्राकृतिक चिकित्सा से उपचार :-

दाद रोग से पीड़ति रोगी को इस रोग का उपचार करने के लिए सबसे पहले दाद वाले भाग पर थोड़ी देर गर्म तथा थोड़ी देर ठंडी सिंकाई करके, उस पर गीली मिट्टी का लेप करना चाहिए। इससे दाद जल्दी ही ठीक हो जाता है। रोगी व्यक्ति के दाद वाले भाग को आधे घण्टे तक गर्म पानी में डुबोकर रखना चाहिए तथा इसके बाद उस पर गर्म गीली मिट्टी की पट्टी लगानी चाहिए इसके फलस्वरूप दाद कुछ ही समय में ठीक हो जाता है।

यदि दाद से बहुत अधिक दूषित द्रव्य निकल रहा हो तो दाद वाले भाग को गुनगुने पानी में कम से कम तीन बार डुबोना चाहिए और इसके बाद उस पर गर्म और ठंडी सिंकाई करनी चाहिए। रोगी व्यक्ति को प्रतिदिन रात को सोने से पहले दाद वाले स्थान पर गर्म गीली मिट्टी की पट्टी लगानी चाहिए।

चार पैसे ही क्यों ज़रूरी हैं ?

बचपन से ही बुजुर्गों से सुनते आ रहे हैं की इंसान चार पैसे कमाने के लिए मेहनत करता है या बेटा कुछ काम करोगे तो चार पैसे घर में आएँगे या आज चार पैसे होते तो कोई ऐसे ना बोलता,

आख़िर क्यों चाहिए चार पैसे ? और चार ही क्यों तीन या पाँच क्यों नहीं ? आखिर तीन पैसों से क्या कमी हो जायेगी और पांच से क्या बढ़ जायेगा ?

आइये समझते हैं चार पैसों का अर्थ ?

पहले पैसे का अर्थ है भोजन

दूसरे पैसे का अर्थ है पिछला कर्ज़ उतारना

तीसरे पैसे का अर्थ है आगे क़र्ज़ देना और चौथे पैसे को कुएं में डालना है।

चार पैसों का रहस्य

1) भोजनः-

अर्थात अपना तथा अपने परिवार पत्नी,बच्चों का भरण-पोषण करना,पेट भरने के लिए।

2) पिछला क़र्ज़ उतारनाः-

अपने माता-पिता की सेवा के लिए उनके द्वारा किए गये हमारे पालन-पोषण कर्ज़ उतारने के लिए।

3) आगे कर्ज़ देनाः-

सन्तान को पढ़ा-लिखा कर क़ाबिल बनाने के लिए ताकि आगे वृद्धावस्था में वे आपका ख़्याल रख सकें।

4) कुएं में डालने के लिएः-

अर्थात शुभ कार्य करने के लिए दान,सन्त सेवा,असहायों की सहायता करने के लिए,यानि निष्काम सेवा करना,क्योंकि हमारे द्वारा किए गये इन्हीं शुभ कर्मों का फल हमें इस जीवन के बाद मिलने वाला है। इन कार्यों के लिए हमें चार पैसों की ज़रूरत पड़ती है, यदि तीन पैसे रह गए तो कार्य पूरे नहीं होंगे और पाँचवे पैसे की ज़रूरत नहीं है।

यही है 4 पैसों का गणित

औषधि सेवन की आवश्यकता

विनापि भेषजैर्व्याधि : पथ्यादेव निवर्तते ।
न तु पथ्य विहीनस्य भेषजानां शतैरपि ॥
पथ्ये सति गदार्तस्य किमौषध निषेवणै : ।
अपथ्ये सति गदार्तस्य किमौषध निषेवणै : ॥

बिना दवा के केवल पथ्य से भी रोगी को रोग से आराम हो जाता है और पथ्यहीन रोगी का रोग हजारों दवाइयों से भी ठीक नहीं होता है, अर्थात यदि पथ्य सेवन किया जाये, तो रोगी को ओषधि सेवन की आवश्यकता ही नहीं है; क्योंकि उसका रोग बिना ओषधि सेवन किए ही आराम हो जायेगा और यदि रोगी अपथ्य सेवन करता है, तो उसको ओषधि सेवन कराना ही व्यर्थ है; क्योंकि अपथ्य सेवन करने पर हजारों प्रकार की ओषधियाँ सेवन कराने से भी रोग आराम नहीं होगा। इसी को मद्देनजर रखते हुए उर्दू की एक मशहूर कहावत है कि, एक पथ्य हजार दवा।

उदाहरणार्थ, बवासीर रोग से यदि पीड़ित रोगी मट्ठा (तक्र) का भरपूर निरन्तर (प्रतिदिन) नियम से सेवन करे, तो मस्से नष्ट हो जाते हैं और फिर जीवन में कभी दोबारा पैदा नहीं होते हैं; क्योंकि मट्ठा से बल, वर्ण और अग्नि की वृद्धि होती है। शरीर के स्त्रोत शुद्ध हो जाते हैं, इसलिए रस का संचार अच्छी तरह होता है और कफ-वात के सैकड़ों विकार नष्ट हो जाते है।

शास्त्रों के अनुसार पूजा अर्चना में वर्जित काम

01. गणेश जी को तुलसी न चढ़ाएं
02. देवी पर दुर्वा न चढ़ाएं
03. शिव लिंग पर केतकी फूल न चढ़ाएं
04. विष्णु को तिलक में अक्षत न चढ़ाएं
05. दो शंख एक समान पूजा घर में न रखें
06. मंदिर में तीन गणेश मूर्ति न रखें
07. तुलसी पत्र चबाकर न खाएं
08. द्वार पर जूते चप्पल उल्टे न रखें
09. मंदिर से वापिस लौटते समय घंटा न बजाएं
10. एक हाथ से आरती न लें
11. ब्राह्मण को बिना आसन न बिठाएं
12. स्त्री को दंडवत प्रणाम वर्जित है
13. बिना दक्षिणा ज्योतिषी से प्रश्न न पूछें
14. घर मंदिर में अंगूठे से बड़ा शिवलिंग न रखें
15. तुलसी पेड़ के पास शिवलिंग न रखें
16. गर्भवती महिला शिवलिंग स्पर्श न करे
17. स्त्री मंदिर में नारियल न फोडें
18. रजस्वला स्त्री मंदिर में प्रवेश न करें
19. सूतक में पूजा प्रतिमा स्पर्श न करें
20. शिव जी की पूरी परिक्रमा न करें
21. शिव लिंग से बहते जल को न लांघें
22. एक हाथ से प्रणाम न करें
23. दूसरे के दीपक से अपना दीपक न जलाएं
24. चरणामृत लेते समय दायें हाथ के नीचे नैपकीन रखें ताकि बूंद नीचे न गिरे
25. चरणामृत पीकर हाथों को शिर या शिखा पर न पोछें बल्कि आंखों पर लगायें शिखा पर गायत्री का निवास होता है उसे अपवित्र न करें
26. देवताओं को लोभान का धूप न करें
27. स्त्री हनुमानजी को स्पर्श न करें
28. कंवारी कन्याओं से पैर पडवाना पाप है
29. मंदिर परिसर में स्वच्छता रखे
30. मंदिर में लाईन पर लगे हुए भगवन्नामोच्चारण करते रहें
31. शराबी का मंदिर प्रवेश वर्जित है
32. मंदिर में प्रवेश के समय पहले दाहिना और निकास के समय बाया पांव रखे
33. घंटी को जोर से न बजायें
34. मंदिर जाने के लिए धोती कुर्ता रखें
35. मंदिर ज्यादा दूर नहीं है तो बिना जूते चप्पल पैदल जाना चाहिए
36. मंदिर में भगवान के दर्शन खुले नेत्रों से करें और दो मिनट बैठकर भगवान के माधुर्य रुप का दर्शन अवश्य करें
37. आरती लेने अथवा दीपक का स्पर्श करने के बाद हस्तप्रक्षालन अवश्य करें

सभी बातें हमारे ऋषि मुनियों से परंपरागत रूप से प्राप्त हुई है

धर्मो रक्षति रक्षित

राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस

भारत हर साल राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस मनाता है, ताकि राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद की स्थापना का जश्न मनाया जा सके। यह परिषद एक गैर-लाभकारी संगठन है जो राष्ट्रीय स्तर पर चलता है और दुर्घटनाओं और दुर्घटनाओं से बचने के लिए सुरक्षा उपायों को बढ़ावा देता है। इन उपायों में सड़क सुरक्षा उपाय, मानव स्वास्थ्य सुरक्षा और कार्यस्थल पर सुरक्षा शामिल हैं।

इस दिन का उद्देश्य कर्मचारियों और नागरिकों की सुरक्षित तरीके से काम करने की प्रतिबद्धता को नवीनीकृत करना और कार्यस्थल पर सुरक्षित और स्वस्थ वातावरण सुनिश्चित करना है। कुल मिलाकर, इस दिन का उद्देश्य दुर्घटनाओं से बचने के लिए उन सुरक्षा उपायों पर प्रकाश डालना है जिनका पालन किया जाना चाहिए।

राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस कब मनाया जाता है ? राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस हर साल 4 मार्च को सुरक्षा प्रोटोकॉल के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए मनाया जाता है, जिसका पालन कार्यस्थल पर दुर्घटनाओं और दुर्घटनाओं से बचने के लिए किया जाना चाहिए। इस दिन का उद्देश्य आम जनता को उन उपायों के बारे में शिक्षित करना है जिनका पालन सुरक्षित रूप से काम करने के लिए किया जाना चाहिए। राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद एक गैर-लाभकारी राष्ट्रीय निकाय है जिसका उद्देश्य स्वास्थ्य, सुरक्षा और पर्यावरण पर स्वैच्छिक दिनचर्या लाना है। 4 मार्च, 1965 को श्रम और रोजगार मंत्रालय द्वारा स्थापित, इस परिषद की कार्रवाई तब से सफल रही है जब से राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस का उत्सव मनाया गया था।

राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस का इतिहास आईएएस परीक्षा की तैयारी करने वालों को पता होना चाहिए कि इस दिन की शुरुआत भारत में पहली राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के बाद हुई थी, जिसे श्रम और रोजगार मंत्रालय द्वारा आयोजित किया गया था। कारण यह था कि परिषद को राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय सुरक्षा परिषदों की आवश्यकता महसूस हुई। यूपीएससी प्रारंभिक परीक्षा के लिए आपको यह जानना चाहिए कि राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस पहली बार 4 मार्च 1972 को परिषद के स्थापना दिवस पर मनाया गया था। राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस 2023 अपने 52वें वर्ष का प्रतीक है।

राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस के उद्देश्य: राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस विभिन्न स्वास्थ्य और पर्यावरण आंदोलनों सहित सुरक्षा के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए पूरे देश में राष्ट्रीय स्तर पर मनाया जाता है। यह दिवस विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों में सुरक्षा भूमिकाओं में प्रमुख सार्वजनिक भागीदारी के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मनाया जाता है। अभियान का आयोजन मुख्य रूप से कंपनी के मालिकों द्वारा अपने कर्मचारियों को सुरक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण संबंधी गतिविधियों में शामिल करने के लिए भागीदारी दृष्टिकोण के उपयोग को बढ़ावा देता है।

यह अभियान कार्यस्थल कर्मचारियों के बीच आवश्यकता-आधारित गतिविधियों, कानूनी आवश्यकताओं के स्व-पालन और पेशेवर SHE (सुरक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण) गतिविधियों को प्रोत्साहित करता है। यह दिवस नियोक्ताओं और कर्मचारियों सहित अन्य स्टाफ को उनकी कानूनी जिम्मेदारियों की याद दिलाकर कार्यस्थल सुरक्षा को बढ़ावा देता है।

कार्यस्थलों पर लोगों के बीच SHE गतिविधियों को बढ़ावा देने के लक्ष्य को प्राप्त करना।

एक सुरक्षा दृष्टिकोण को व्यवस्थित करके, यह हमें एक निवारक संस्कृति और वैज्ञानिक मानसिकता पैदा करके समाज की सेवा करने में सक्षम बनाता है।

"दाल रोटी वाले" : सेवा और समर्पण की अनोखी कहानी

डॉ. अंकुर शरण, सह-संस्थापक एवं प्रबंधन ट्रस्टी, ग्लोबल कन्फेडरेशन ऑफ एनजीओ (GCNGO) द्वारा विशेष साक्षात्कार

परिचय

समाज सेवा का असली अर्थ तब समझ आता है जब लोग निस्वार्थ भाव से जरूरतमंदों की सहायता करते हैं। दाल रोटी वाले (DRW) सोशल ऑर्गनाइजेशन ऐसा ही एक नाम है, जिसने 2019 में भोजन वितरण से अपने सफर की शुरुआत की और आज तक हजारों जरूरतमंदों को भोजन उपलब्ध कराया है। यह संगठन अब शिक्षा और जल संरक्षण जैसे क्षेत्रों में भी योगदान दे रहा है।

विश्व एनजीओ दिवस 2025 के अवसर पर, ग्लोबल कन्फेडरेशन ऑफ एनजीओ (GCNGO) ने समाज सेवा में अहम भूमिका निभाने वाले एनजीओ को सम्मानित किया। दाल रोटी वाले भी उनमें से एक था। आइए जानते हैं उनकी प्रेरणादायक यात्रा और भविष्य की योजनाएँ।

"दाल रोटी वाले" की यात्रा

प्रश्नः दाल रोटी वाले (DRW) सोशल ऑर्गनाइजेशन की शुरुआत कैसे हुई?

DRW टीमः हमारी शुरुआत 2019 में एक सरल उद्देश्य के साथ हुई—कोई भी भूखा न सोए। हमने विभिन्न स्थानों पर ताजा भोजन वितरित करना शुरू किया, ताकि उन लोगों तक मदद पहुँचे, जो आर्थिक रूप से भोजन खरीदने में सक्षम नहीं हैं। बीते पाँच वर्षों में हमने 1000 से अधिक बार भोजन वितरण किया है, और यह सिलसिला अनवरत जारी है।

प्रश्नः इस कार्य को करने की प्रेरणा कहाँ से मिली ?

DRW टीमः जब हम किसी भूखे व्यक्ति को भरपेट भोजन देते हैं और उनके चेहरे पर संतोष का भाव देखते हैं, तो वही हमारे लिए सबसे बड़ी प्रेरणा होती है। हम मानते हैं कि भोजन केवल पेट भरने का साधन नहीं, बल्कि एक स्नेह और सम्मान देने का तरीका भी है।

सेवा का विस्तारः भोजन से शिक्षा और जल संरक्षण तक

प्रश्नः अब DRW शिक्षा और जल संरक्षण में भी काम कर रहा है, इसके पीछे क्या सोच थी ?

DRW टीमः जब हम भोजन वितरण कर रहे थे, तब हमें यह एहसास हुआ कि केवल भोजन ही काफी नहीं है। अगर हमें समाज में स्थायी परिवर्तन लाना है, तो हमें शिक्षा और जल संरक्षण जैसे मूलभूत क्षेत्रों में भी योगदान देना होगा। इसी सोच के साथ हमने "डेली रीडिंग और राइटिंग" नामक पहल शुरू की, जिससे गरीब और वंचित बच्चों को शिक्षा मिल सके। इसी के साथ "डिपॉजिट रेन वाटर" अभियान भी शुरू किया, ताकि जल संरक्षण को बढ़ावा मिल सके।

प्रश्नः इस कार्य को करते समय किन चुनौतियों का सामना करना पड़ा ?

DRW टीमः सबसे बड़ी चुनौती संसाधनों और स्वयंसेवकों की कमी थी। हालांकि, हमने समाज के जागरूक नागरिकों को जोड़कर इन बाधाओं को पार किया। हम Societies Act के तहत पंजीकृत हैं और हमारे पास GST, 80G और दर्पण आईडी भी है, जिससे पारदर्शिता बनी रहती है।

विश्व एनजीओ दिवस 2025 पर GCNGO द्वारा सम्मानित होने का अनुभव

प्रश्नः GCNGO द्वारा सम्मानित होने पर कैसा महसूस हुआ ?

DRW टीमः यह हमारे लिए गर्व और उत्साह का क्षण था। जब समाज सेवा को पहचान और सम्मान मिलता है, तो वह कार्य करने की ऊर्जा को और बढ़ा देता है। हम GCNGO के आभारी हैं, जिन्होंने हमारी मेहनत को पहचाना और हमें इस प्रतिष्ठित सम्मान से नवाजा।

प्रश्नः समाज सेवा में योगदान देने के इच्छुक लोगों को आप क्या संदेश देना चाहेंगे ?

DRW टीमः बदलाव की शुरुआत छोटे प्रयासों से होती है। यदि आप भोजन वितरण, शिक्षा, या जल संरक्षण में योगदान दे सकते हैं, तो जरूर करें। हर छोटी कोशिश समाज में बड़ा परिवर्तन ला सकती है। हम सभी को #VolunteerShala अभियान से जुड़ने और वास्तविक स्वयंसेवक बनकर समाज की सेवा करने के लिए आमंत्रित करते हैं।

दाल रोटी वाले (DRW) सोशल ऑर्गनाइजेशन समाज सेवा का एक प्रेरणादायक उदाहरण है। भोजन वितरण से लेकर शिक्षा और जल संरक्षण तक, यह संगठन समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए निरंतर प्रयासरत है।

"समाज सेवा केवल दान देना नहीं, बल्कि अपने हिस्से की जिम्मेदारी निभाने का तरीका है।"

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने केजरीवाल सरकार के स्वास्थ्य मॉडल को लेकर किए कई खुलासे....

परिवहन विशेष न्यूज

भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक की रिपोर्ट पर चर्चा का समापन करते हुए सीएम गुप्ता ने कहा कि मरीजों को नकली दवाएं दी गईं और नकली मरीजों के नाम पर असली भुगतान किए गए। सीएम गुप्ता ने पिछली आप सरकार पर निशाना साधते हुए कहा स्वास्थ्य मॉडल के नाम पर पिछले 10 वर्षों में केवल भ्रष्टाचार किया गया।सीएम ने अस्पतालों और स्वास्थ्य विभाग की स्थिति सुधारने का वादा किया।

नई दिल्ली। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने पिछली आप सरकार के स्वास्थ्य मॉडल और अस्पतालों को 'बीमार' बताते हुए सोमवार को कहा कि स्वास्थ्य विभाग के कुप्रबंधन, नकली दवाओं के वितरण, जनता के पैसे की बर्बादी और डॉक्टरों की कमी पर सीएजी के निष्कर्ष भाजपा के दावों की पुष्टि करते हैं।

नकली मरीजों के नाम पर असली भुगतान

भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक की रिपोर्ट पर चर्चा का समापन करते हुए, सीएम गुप्ता ने कहा कि मरीजों को नकली दवाएं दी गईं और नकली मरीजों के नाम पर असली भुगतान किए गए।

सीएम गुप्ता ने पिछली आप सरकार पर निशाना साधते हुए कहा, "स्वास्थ्य मॉडल के नाम पर पिछले 10 वर्षों में केवल भ्रष्टाचार किया गया।"

सीएम ने अस्पतालों और स्वास्थ्य विभाग की स्थिति सुधारने का वादा किया। उन्होंने कहा, ₹हम प्रत्येक विभाग को कर्ज से मुक्त करने के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं और हमारे सभी मंत्री तथा विधायक हमारे द्वारा किए गए सभी वादों को पूरा करेंगे।"

धन की हेराफेरी का आरोप

सीएम गुप्ता ने पिछली आप सरकार पर शहर के अस्पतालों को बीमार बनाने और फर्जी मरीजों का इस्तेमाल कर धन की हेराफेरी करने तथा डॉक्टरों और नर्सों के रिक्त पदों को भरने में विफल रहने का आरोप लगाया।

उन्होंने कहा, "मुद्दा बजट के कम इस्तेमाल का नहीं है, मुद्दा बेड की अपर्याप्त संख्या या दवाओं की कमी का नहीं है, बल्कि मुद्दा मरीजों के उत्पीड़न और उनके साथ होने वाले दुर्व्यवहार का है।"

सीएम पिछली आप सरकार की मोहल्ला क्लिनिक योजना की आलोचना करते हुए कहा, ₹मोहल्ला क्लिनिक से जुड़ी हर चीज फर्जी थी, लेकिन केवल एक चीज असली थी और वह थी भुगतान और जनता के पैसे की बर्बादी।"

भ्रष्टाचार और चोरी, आप सरकार की आदत

उन्होंने कहा कि सभी कल्याणकारी योजनाओं में भ्रष्टाचार और चोरी की आप सरकार की आदत बन गई थी। सीएमओ का सोशल मीडिया हैंडल

भी चुरा लिया। हमें उनके खिलाफ शिकायत दर्ज कराने के लिए मजबूर होना पड़ा।

महिलाओं को 2,500 रुपये प्रति माह का भुगतान करने की मांग करते हुए विपक्षी सदस्यों ने सदन से बहिर्गमन किया। इस दौरान उन्होंने पिछली आप सरकार की विफलताओं को गिनाया और कहा कि ड्यूटी मेडिकल अधिकारियों के 234 पद रिक्त हैं, 2,000 से अधिक नर्सिंग पद रिक्त हैं तथा पैरामेडिक के 2,796 पद रिक्त हैं।

विपक्ष पर निशाना साधते हुए सीएम गुप्ता ने कहा, ₹उन्होंने विधानसभा का समय बर्बाद किया है। वे सीएजी रिपोर्ट द्वारा उजागर किए गए सच का सामना नहीं करना चाहते हैं।₹

उन्होंने पिछली सरकार द्वारा की गई फिजूलखर्ची पर भी निशाना साधते हुए कहा कि अस्पतालों के गोदाम पीपीई किट, मास्क, ऑक्सीजन सिलेंडर और अन्य उपकरणों से भरे पड़े हैं, जो बेकार पड़े हैं।

सीएम ने कैग रिपोर्ट के निष्कर्षों का हवाला देते हुए कहा, ₹कोविड के दौरान 10 रुपये का मास्क 150 रुपये में खरीदकर ठगी की गई।₹

24 अस्पताल परियोजनाएं पूरी नहीं

सीएम गुप्ता ने कहा कि पिछली सरकार के दौरान शुरू की गई 24 अस्पताल परियोजनाएं पूरी नहीं हो सकीं। कई परियोजनाओं की लागत दोगुनी हो गई हैं और ये अभी भी पूरी नहीं हो पाई हैं।

चुनाव के दौरान अरविंद केजरीवाल द्वारा यह स्वीकार किए जाने का जिक्र करते हुए कि वे यमुना की सफाई और स्वच्छ जल उपलब्ध कराने सहित अन्य वादों को पूरा करने में विफल रहे हैं, उन्होंने कहा, ₹मुझे खुशी है कि आखिरकार केजरीवाल ने सच बोलना शुरू कर दिया और अपनी विफलताओं को स्वीकार कर लिया।"

सीएम गुप्ता ने कहा कि सदन में पेश की गई दो सीएजी रिपोर्ट से ही विपक्षी सदस्य हिल गए हैं। उनमें आलोचना का सामना करने का साहस नहीं है।

स्वास्थ्य केंद्रों में गड़बड़ियों की जांच का आदेश

सीएजी रिपोर्ट पर बहस के पहले हाफ के दौरान दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री पंकज कुमार सिंह ने कहा कि सरकार सीएजी द्वारा बताए गए अस्पतालों और स्वास्थ्य केंद्रों में गड़बड़ियों की जांच का आदेश देगी और भ्रष्टाचार में शामिल एक भी व्यक्ति को बख्शा नहीं जाएगा।

पिछली आप सरकार का बचाव करने के लिए विपक्ष की नेता आतिशी ने अन्य राज्यों के कामकाज पर सीएजी की नकारात्मक टिप्पणियों को उठाने की कोशिश की, लेकिन स्पीकर विजेंद्र गुप्ता ने उनके बयान को अपुष्ट कर दिया।

सीएजी रिपोर्ट पर चर्चा के अंत में स्पीकर विजेंद्र गुप्ता ने रिपोर्ट को लोक लेखा समिति को तीन महीने में रिपोर्ट देने के लिए भेज दिया।

उन्होंने स्वास्थ्य विभाग से एक महीने के भीतर सीएजी निष्कर्षों पर कार्रवाई रिपोर्ट दाखिल करने को भी कहा।

फंड के कम उपयोग की बात

28 फरवरी को सदन में पेश की गई सीएजी ऑडिट रिपोर्ट में महामारी के दौरान फंड के कम उपयोग की बात कही गई है। कोविड से निपटने के लिए केंद्र सरकार द्वारा जारी किए गए कुल 787.91 करोड़ रुपये में से केवल 582.84 करोड़ रुपये का ही उपयोग किया गया।

रिपोर्ट में कहा गया है कि दवाइयों और आपूर्ति (जैसे पीपीई और मास्क) के लिए जारी किए गए 119.85 करोड़ रुपये में से 83.14 करोड़ रुपये का उपयोग नहीं किया गया।

कर्मचारियों की कमी एक समस्या

सीएजी रिपोर्ट में कहा गया है कि लोक नायक अस्पताल, चाचा नेहरू बाल चिकित्सालय समेत कई प्रसिद्ध अस्पतालों में कर्मचारियों की कमी एक समस्या बनी हुई है।

इसमें कहा गया है, ₹नर्सों और पैरामेडिक कर्मचारियों के कैडर में कमी क्रमशः लगभग 21 और 38 प्रतिशत है।₹

इसमें आगे बताया गया है कि 14 अस्पतालों में आईसीयू सेवाएं उपलब्ध नहीं थीं, 16 में ब्लड बैंक सेवाएं उपलब्ध नहीं थीं, 8 में ऑक्सीजन सेवाएं उपलब्ध नहीं थीं, 15 में मुर्दाघर सेवाएं उपलब्ध नहीं थीं और 12 अस्पतालों में एम्बुलेंस सेवाएं उपलब्ध नहीं थीं।

'8 मार्च को महिलाओं को मिलेंगे 2500 रुपये'....

आतिशी ने महिला सम्मान योजना की पहली किस्त के बारे में भी सवाल उठाया। उन्होंने कहा कि भाजपा के सभी विधायक और मंत्री केवल आम आदमी पार्टी और अरविंद केजरीवाल को गालियां दे रहे हैं। कोई ठोस काम नहीं किया जा रहा है और जनता के पैसे का दुरुपयोग किया जा रहा है। भाजपा ने जो वादा किया था वह अब पूरी तरह से झूठा साबित हो चुका है।

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा में विपक्ष की नेता आतिशी ने सोमवार को भाजपा सरकार पर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार ने यह सत्र सिर्फ आम आदमी पार्टी (AAP) को गाली देने के लिए बुलाया है।

आतिशी ने आरोप लगाया कि पूरे सत्र में भाजपा ने सिर्फ आम आदमी पार्टी और उसके नेता अरविंद केजरीवाल को गाली दी, जबकि सरकार ने किसी महत्वपूर्ण काम पर चर्चा नहीं की।

आतिशी ने भाजपा से सवाल पूछा, ₹क्या भाजपा सरकार ने यह सत्र 'आप' को गाली देने के लिए बुलाया?₹ उन्होंने आरोप लगाया, ₹सरकार ने पूरे सत्र में सिर्फ 'आप' को गाली दी और काम से जुड़ी कोई बात नहीं की।₹

2,500 रुपए की स्कीम पर उठा सवाल

आतिशी ने 'महिला सम्मान योजना' की पहली किस्त के बारे में भी सवाल उठाया।

उन्होंने कहा, ₹भाजपा ने वादा किया था कि महिलाओं को 2,500 रुपए की स्कीम 8 मार्च तक दी जाएगी, लेकिन अभी तक इस दिशा में कोई कदम नहीं उठाया गया है।₹

उन्होंने कहा कि चार दिनों से विधानसभा सत्र चल रहा है, लेकिन भाजपा के सभी विधायक और मंत्री केवल आम आदमी पार्टी और अरविंद केजरीवाल को गालियां दे रहे हैं। कोई ठोस काम नहीं किया जा रहा है और जनता के पैसे का दुरुपयोग किया जा रहा है। भाजपा ने जो वादा किया था, वह अब पूरी तरह से झूठा साबित हो चुका है।

8 मार्च तक पहली किस्त जमा होगी?

आतिशी ने कहा कि भाजपा ने कहा था कि 8 मार्च तक दिल्ली की हर महिला के बैंक खाते में 2,500 रुपए की पहली किस्त जमा होगी, लेकिन भाजपा का इस योजना को लागू करने का कोई इरादा नहीं दिख रहा है।

यदि भाजपा आम आदमी पार्टी को गालियां देने में समय बर्बाद करती रहेगी, तो उन्हें जनता से जुड़ी वास्तविक समस्याओं का समाधान नहीं मिलेगा।

उन्होंने आगे कहा कि हम उम्मीद करते हैं कि भाजपा अपने वादों को पूरा करेगी और दिल्ली की महिलाओं को वह राशि 8 मार्च तक देगी।

'दिल्ली सरकार के अधिकार हुए सीमित', गोपाल राय ने क्यों कह दी ये बात

आम आदमी पार्टी के नेता गोपाल राय ने दिल्ली विधानसभा में स्वास्थ्य सेवाओं पर कैग रिपोर्ट पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि दिल्ली में स्वास्थ्य सेवाएं एनसीआर के अन्य सरकारी अस्पतालों की तुलना में बेहतर हैं। उन्होंने केंद्र सरकार पर दिल्ली सरकार के अधिकारों का उल्लंघन करने का आरोप लगाया। राय ने रिपोर्ट के तीन प्रमुख हिस्सों का जिक्र किया जिसमें स्वास्थ्य सेवाओं पर पड़ने वाला असर पहला मुद्दा रहा।

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के नेता गोपाल राय ने सोमवार को दिल्ली विधानसभा में स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़ी कैग रिपोर्ट पर चर्चा करते हुए कई अहम मुद्दे उठाए। उन्होंने कहा कि इस समय पूरा ध्यान दिल्ली में स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति पर है। गोपाल राय ने रिपोर्ट के तीन प्रमुख हिस्सों का जिक्र किया, जिसमें स्वास्थ्य सेवाओं पर पड़ने वाला असर पहला मुद्दा रहा।

राय ने कहा कि रिपोर्ट से पता चला है कि दिल्ली में स्वास्थ्य सेवाओं का प्रभाव एनसीआर के अन्य सरकारी अस्पतालों की तुलना में अधिक सकारात्मक है और इसका लाभ दिल्ली के लोगों को मिला है।

दूसरे मुद्दे पर उन्होंने कहा कि रिक्तियां और सेवा वितरण दूसरा हिस्सा है। दिल्ली के अस्पतालों में कई महत्वपूर्ण पदों पर रिक्तियां हैं, जिससे स्वास्थ्य सेवाओं की प्रभावी डिलीवरी प्रभावित हुई है। इसके कारण लोगों को समय पर उचित सेवाएं नहीं मिल पाती हैं।

गोपाल राय ने गिनाए आप सरकार के काम

उन्होंने तीसरे हिस्से में उल्लेख किया कि दिल्ली में 2022 तक नए अस्पतालों और बिस्तरों के विस्तार का काम धीमा पड़ा था। गोपाल राय ने इस संदर्भ में दिल्ली सरकार की कोशिशों की सराहना की और

कहा कि आम आदमी पार्टी की सरकार ने स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए निरंतर प्रयास किए हैं।

गोपाल राय ने दिल्ली सरकार की स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर किए गए प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि दिल्ली देश का पहला राज्य है, जिसने मोहल्ला क्लीनिक जैसी योजना शुरू की और स्वास्थ्य सेवाओं को आम आदमी तक पहुंचाने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए। उन्होंने कहा, ₹हमने स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के लिए जमीनी स्तर पर काम किया है।₹ इसके अलावा, गोपाल राय ने दिल्ली सरकार के डाटा एंट्री ऑपरेटर की भर्ती को लेकर संघर्ष का भी जिक्र किया। उन्होंने बताया कि दिल्ली सरकार इस भर्ती के लिए दो साल तक सुप्रीम कोर्ट से मंजूरी प्राप्त करने के बाद ही प्रक्रिया शुरू कर सकी।

केंद्र सरकार का सौतेला व्यवहार

हालांकि, गोपाल राय ने केंद्र सरकार पर आरोप लगाते हुए कहा कि सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बावजूद भारतीय जनता पार्टी की केंद्र सरकार ने दिल्ली सरकार के अधिकारों का उल्लंघन किया और सौतेला व्यवहार किया।

राय ने कहा, "दिल्ली के चुने हुए प्रतिनिधियों को भर्ती के अधिकार देने के लिए सुप्रीम कोर्ट ने संवैधानिक आदेश दिया था। इसके बावजूद केंद्र ने दिल्ली सरकार के अधिकारों को सीमित किया।"

गैस कनेक्शन के दौरान हादसा, आग में किशोर समेत दो लोग झुलसे

जगजीवन नगर में आइजीएल हर घर में पीएनजी गैस कनेक्शन दे रहा है। सोमवार को कनेक्शन चालू करते समय एक घर में हादसा हो गया। टेस्टिंग के लिए जैसे ही टेक्नीशियन ने रसोई में चूल्हा जलाया तो आग लग गई और जोरदार धमाका हुआ जिसमें एक किशोर समेत दो लोग झुलस गए। धमाका इतना जोरदार था कि रसोई का लकड़ी का दरवाजा फटकर दूर जा गिरा।

दिल्ली। जगजीवन नगर में आइजीएल हर घर में पीएनजी गैस कनेक्शन दे रहा है। सोमवार को कनेक्शन चालू करते समय एक घर में हादसा हो गया।

टेस्टिंग के लिए जैसे ही टेक्नीशियन ने रसोई में चूल्हा जलाया तो आग लग गई और जोरदार धमाका हुआ जिसमें एक किशोर समेत दो लोग झुलस गए। धमाका इतना जोरदार था कि रसोई का लकड़ी का दरवाजा फटकर दूर जा गिरा।

झुलसे अस्पताल में भर्ती

लकड़ी से बना मुख्य दरवाजा और कमरे का दरवाजा पूरी तरह टूट गया। रसोई के सामने छत पर लगी लोहे की जाली का एक पैन भी टूटकर गिर गया। झुलसे प्रिंस (14) और टेक्नीशियन को उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। किशोर के परिजनों का आरोप है कि गैस रिसाव के कारण हादसा हुआ है।

उधर, आइजीएल का पक्ष है कि उनके कनेक्शन से कोई गैस लीक नहीं हुई, रसोई में रखे एलपीजी सिलेंडर से गैस रिसाव के कारण यह हादसा हुआ है। मानसरोवर थाना पुलिस मामले की जांच कर रही है।

टेस्टिंग के दौरान हुआ हादसा

सोमवार को प्रिंस, उसका छोटा भाई और उसके चाचा की बेटी श्वेता घर पर थे। दोपहर करीब एक बजे आईजीएल से एक टेक्नीशियन कनेक्शन चालू करने आया।

जैसे ही उसने कनेक्शन चालू किया और टेस्टिंग के लिए चूल्हा जलाने के लिए माचिस जलाई, किचन से आग का गोला उठा। तेज धमाका भी हुआ।

इसमें प्रिंस और किचन के बाहर खड़ा टेक्नीशियन झुलस गया। प्रिंस की मां रीना का आरोप है कि टेक्नीशियन ने लापरवाही बरती।

नांगलोई में कवि सम्मेलन का हुआ भव्य आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। काव्यशैली राष्ट्रीय मासिक पत्रिका एवं साहित्य श्री प्रकाशन के तत्वावधान में मुक्तक कलश एवं साहित्य श्री के रत्न का लोकार्पण एवं कवि सम्मेलन का आयोजन नागलोई रेलवे मेट्रो स्टेशन के नजदीक स्थित सुरभि स्टूडियो में किया गया। मंच की अध्यक्षता कवयित्री कीर्ति रत्न ने की एवं मुख्य अतिथि डॉ अशोक सम्राट एवं विशिष्ट अतिथि दीपाली चौधरी रहीं। मुक्तक कलश एवं साहित्य श्री के संपादक संजय कुमार गिरि ने अपने काव्यपाठ के दौरान दोनों पुस्तक में शामिल सभी रचनाकारों को शुभकामनाएं दी। इस काव्य गोष्ठी में दिल्ली एनसीआर से आए कवि एवं कवयित्रियों में राजकुमार अर्जुन, डॉ अशोक सम्राट, राजेश तंवर ,गुरमीत सिंह मीत, कालजयी घनश्याम, अशोक कुमार मीणा, सुशील कुमार, प्रो रवि शर्मा मधुप, सरिता गुप्ता, अरविंद अशर, इंजी ललित शर्मा अत्री, राजेश मंडार रहे। इनके अलावा काव्यपाठ करने वाले रचनाकारों में राजीव तनेजा, असलम बेताब ,कवि अस्तित्व इंद्रजीत इंद्र रहे। सभी रचनाकारों ने इस माह आने वाले त्यौहार होली पर एवं देश प्रेम से ओत प्रोत एवं श्रृंगार पर छुन्द, मुक्तक ,गीत ग़ज़ल एवं दोहे पढ़े। मंच का संचालन असलम बेताब ने अपने बेहतरीन अंदाज में किया। कार्यक्रम के अंत में सभी रचनाकारों को पुस्तक की प्रतियां एवं सम्मान पत्र भेंट किए गए। अंत में कार्यक्रम के आयोजक एवं साहित्य श्री प्रकाशन के मुखिया रामश्याम हसीन ने सभी अतिथियों का आभार प्रगट किया।

एसपीएम कॉलेज में श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय का भव्य वार्षिकोत्सव सम्पन

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। एसपीएम कॉलेज, पंजाबी बाग में श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय रघुवीर नगर का वार्षिकोत्सव भव्य रूप से मनाया गया। यह आयोजन सिर्फ एक सांस्कृतिक कार्यक्रम नहीं था, बल्कि भारतीय संस्कृति, संस्कृत भाषा और परंपराओं को सहेजने का एक जीवंत उदाहरण था।

इस समारोह में संस्कृत भाषा और भारतीय लोककलाओं की एक से बढ़कर एक प्रस्तुतियाँ हुई। जिसमे हरियाणवी लोक नृत्य, बिहार की सांस्कृतिक झलक, पंजाबी लोक नृत्य, संस्कृत नाटक, एकल गीत एवं काव्यावली आदि संस्कृत भाषा में गाए गए गीत और कविताएँ प्रमुख प्रस्तुतियों ने सभी का मन मोह लिया।

वार्षिकोत्सव के दौरान विद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'प्रबोधिनी' का भी भव्य लोकार्पण किया गया। यह पत्रिका संस्कृत और भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनेगी। इसके माध्यम से छात्र-छात्राएँ अपनी लेखनी और रचनात्मकता के माध्यम से अपनी संस्कृति से और अधिक गहराई से जुड़ सकेंगे। कार्यक्रम अध्यक्ष सुभाष अग्रवाल , मुख्य वक्ता अनिल कुमार गुप्ता, नवनिर्वाचित विधायक करनैल सिंह व अजय महावर कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में शामिल हुए, वहीं परेश सक्सेना (आई जी, एसएसबी) भी उपस्थित हुये। श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय के प्रधान रविंद्र गुप्ता के कुशल नेतृत्व में आयोजन सफल हुआ। इस मौके पर उपस्थित सभी अतिथियों और वक्ताओं ने एकमत से यह संदेश दिया कि संस्कृत केवल एक भाषा नहीं, बल्कि भारत की प्राचीनतम धरोहर है, जिसे सहेजना हम सभी का कर्तव्य है।

ये हैं स्वस्थ और दीर्घायु जीवन के राज़ !

आज मनुष्य की जीवनशैली में आमूलचूल परिवर्तन आए हैं। खान-पान, रहन-सहन पूरी तरह से बदल चुका है।बढ़ती जनसंख्या, विकास, औद्योगिकीकरण, जलवायु परिवर्तन के बीच आज मनुष्य भागम-भाग और दौड़-धूप भरी जिंदगी जी रहा है। मनुष्य के पास न स्वयं के लिए समय बचा है और न ही दूसरों के लिए। सोशल नेटवर्किंग साइट्स के इस जमाने में आदमी आधुनिक तकनीक और प्रौद्योगिकी के बीच जी रहा है। न चैन से सोने का समय आदमी के पास बचा है और न ही ठीक से खाने-पीने का ही। बेशक आज मेडिकल क्षेत्र में प्रगति से मनुष्य की औसत आयु में आज तेजी से इजाफा हुआ है लेकिन बावजूद इसके आज आदमी की कुल आयु में कमी आई है। पहले के जमाने में आदमी सौ बरस या इससे भी अधिक उम्र तक जीता था, जबकि आज कुल आयु साठ-पैंसठ तक ही रह गई है। लंबा और स्वस्थ जीवन आज पहले की भांति नहीं रहा है। बढ़ते प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन, खान-पान का प्रभाव मानव जीवन पर पड़ा है। हमारे यहां कहा गया है- 'जैसा खाए अन्न वैसा रहे मन।' मतलब यह है कि व्यक्ति जैसा खाना खाएगा उसका मन भी वैसा ही होगा। दूसरे शब्दों में कहें तो हम जो भी खाते हैं, जैसा भी खाते हैं, वही और वैसा ही हमारा शरीर भी बनता है।हमारे सनातन धर्म में भोजन को ईश्वर का स्वरूप माना गया है। इसीलिए हमारे शास्त्रों में भी यह कहा गया है 'अन्नं ब्रह्म' अर्थात अन्न ब्रह्म है।वर्तमान समय में पहले ही कीटनाशकों/उर्वरकों के बहुतायत प्रयोग से खाद्य पदार्थ विशुद्ध नहीं बचे हैं, वहीं यदि उनके पकाने एवं ग्रहण करने के तौर-तरीके और समय भी बदल गये हैं। आज न तो मिट्टी के बर्तनों में खाना बनाया जाता है और न ही मोटे अनाज पर हमारा ध्यान रह गया है। हम फास्ट फूड,जंक फूड की ओर बढ़ रहे हैं। डिब्बाबंद खाद्य पदार्थों की ओर हम अग्रसर हैं।विडम्बना यह भी है कि आज की युवा पीढ़ी तो भोजन बनाने व उसे ग्रहण करने के नियमों तक से अनजान है। हमारे हिन्दू धर्म में तो खास मौकों पर उपवास रखना सदियों से चला आ रहा है,जिसका धार्मिक, सांस्कृतिक और स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत महत्व है। जब हम कुछ समय के लिए खाना छोड़ देते हैं, तो हमारे शरीर के भीतर अनेक चमत्कारिक बदलाव आते हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि उपवास मनुष्य जीवन को लंबा करने का सबसे प्रभावी व सही तरीका हो सकता है। आधुनिक विज्ञान, गीता, उपनिषद और वेद सभी इस बात को सिद्ध करते हैं कि समय-समय पर उपवास करना न सिर्फ शरीर, बल्कि मन और आत्मा को भी शुद्ध करता है। दूसरे शब्दों में कहें तो व्रत/उपवास रखने से मनुष्य की आत्मशुद्धि, आत्मानुशासन और आध्यात्मिक विकास होता है। यदि हम व्रत/उपवास के लाभों की बात करें तो इससे हमारे शरीर की सफाई होती है, पाचनतंत्र बेहतर होता है, और हमारा वजन भी नियंत्रित रहता है। यहां तक कि यह हमारे तनाव, अवसाद और चिंता को कम करने में भी मदद करता है। अनेक वैज्ञानिक शोध बताते हैं कि उपवास शरीर में ऑटोफैगी को बढ़ावा देता है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि ऑटोफैगी वह प्रक्रिया है, जिसमें शरीर खुद को साफ करता है, कमजोर और क्षतिग्रस्त सेल्स को नष्ट कर नए टिश्यू के निर्माण में सहायता करता है। हमें यह याद रखना चाहिए कि आज की जीवनशैली में मनुष्य को यह चाहिए कि वह उपवास/व्रत से अपनी कोशिकाओं के स्तर पर शुद्धिकरण करे। यहां यह भी बहुत महत्वपूर्ण है कि आज का मनुष्य जीवन का एक तिहाई भाग सोने में ही बिता देता है। अन्य ३ से 4 घंटे शौचालय, स्नान, खाने पीने आदि में निकाल देता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि हम हमारे जीवन का लगभग 50% भाग सिर्फ रख-रखाव में ही निकाल देते हैं। यहां एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि आज लोगों को जितना खाना चाहिये, उससे वे बहुत ज्यादा खा रहे हैं, बस इसलिये कि उन्हें यह बताया गया है, 'तुम्हें ज्यादा खाना चाहिये नहीं, तो तुम कमज़ोर हो जाओगे।' वास्तव में, एक २५-३० साल के युवा के लिए दिन में दो बार अच्छा भोजन काफी है - एक सुबह में और एक शाम को। शाम के खाने के बाद, सोने के समय तक, कम से कम तीन घंटे का अंतराल होना चाहिये। अगर इसमें २० से ३० मिनिट की हल्की शारीरिक गतिविधि हो-जैसे बस चलना- तो कहना ग़लत नहीं होगा कि हमारा शरीर अधिकतर स्वस्थ रहेगा। वास्तव में वजन कम करने और फिट रहने के लिए इंटरमिटेंट फास्टिंग एक बेहद लोकप्रिय तरीका है। यह हमेशा से योगिक संस्कृति का हिस्सा रहा है और सच तो यह है कि यह हमारे अधिकतम स्वास्थ्य लाभ के लिए सबसे सही व सटीक तरीका भी है। जब हम कुछ समय के लिए भोजन से विराम लेते हैं, तो हमारा शरीर खुद को रिपेयर करने लगता है और इससे बुढ़ापा देर से आता है। उपवास से माइटोकॉन्ड्रियल बायोजेनेसिस बढ़ता है, जिससे ज्यादा ऐनर्जी पैदा होती है और कोशिकाओं यानी सेल्स की उम्र बढ़ती है।अनेक शोध यह भी बताते हैं कि उपवास इंसुलिन संवेदनशीलता को सुधारता है, जिससे टाइप-२ डायबिटीज का खतरा कम होता है। यह सूजन यानी इन्फ्लेमेशन को कम करता है, जिससे कैंसर और हृदय जैसे गंभीर रोगों का खतरा भी घटता है।व्रत/उपवास करने से स्टेम सेल पुनर्जीवित होते हैं, जिससे मनुष्य का इम्यून सिस्टम मजबूत होता है और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। वास्तव में सच तो यह है कि हमार शरीर और हमारा मस्तिष्क तभी सबसे बेहतर तरीके से काम करते हैं, जब हमारा पेट खाली(व्रत/उपवास के कारण) होता है। हम हमेशा इस बात का ध्यान रखते हैं कि हम जितना भी खाएं, हमारा पेट हमेशा दो से ढाई घंटे के भीतर खाली हो जाना चाहिए। शरीर में जो भी सुधार और शुद्धिकरण होना चाहिए, उसके लिए हमारे पेट का खाली होना जरूरी है। यह बहुत ही जरूरी व आवश्यक है।नहीं तो कोशिकाओं के स्तर पर शुद्धिकरण नहीं हो पाएगा। हम चीजों का ढेर लगा लेंगे और फिर हमें तमाम तरह की समस्याएं होंगी। पहली बात तो यह है कि हमारे शरीर में जड़ता बढ़ेगी। वास्तव में,
हमें इस बात को समझना चाहिए कि जब शरीर को खाने की आवश्यकता नहीं होती, तब हमें भोजन से बचना चाहिए।आजकल के समय में, हम बिना सोचे-समझे हर समय(दिन-रात ,दोपहर)खाते रहते हैं, जबकि हमारे शरीर को कुछ दिनों के लिए भोजन से आराम की आवश्यकता होती है।
उपवास/व्रत इस समझ को बढ़ाता है और शरीर के संकेतों को सुनने की क्षमता को जागृत करता है।
इस प्रकार, उपवास भोजन के प्रति हमारे दृष्टिकोण को सुधारता है और हमें अपने शरीर के साथ एक नया रिश्ता बनाने का अवसर मिलता है। वास्तव में हमारे शरीर की ऊर्जा का मुख्य स्रोत सिर्फ भोजन नहीं है, बल्कि सूर्य की रोशनी, हवा और पानी भी हमारी ऊर्जा का हिस्सा हैं। व्रत/ उपवास से शरीर को ऊर्जा की आवश्यकता पूरी करने के लिए इन प्राकृतिक स्रोतों का उपयोग करने का अवसर मिलता है। जब हम कम खाते हैं, तो शरीर में अतिरिक्त ऊर्जा का संचार होता है, जिससे हम अधिक सक्रिय और ऊर्जावान महसूस करते हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि उपवास को हमें एक जागरूक और ध्यानपूर्ण साधना के रूप में अपनाना चाहिए, ताकि इसका पूरा लाभ लिया जा सके।जब हम नियमित अंतराल पर उपवास करते हैं, तो यह शरीर के प्राकृतिक चक्र को संतुलित करता है और हमें स्वस्थ रखने में मदद करता है। उपवास/व्रत हमें दीर्घायु करते हैं लेकिन हमें भोजन पर भी ध्यान देना बहुत जरूरी है, क्यों कि आज हम आनन-फानन में ही भोजन करते हैं। भोजन पर हमारा ध्यान नहीं होता। श्रीमद्भगवतगीता में कृष्ण एक जगह कहते हैं, 'भोजन करते हुए हमारा सारा ध्यान सिर्फ भोजन पर होना चाहिए, क्योंकि भोजन सिर्फ शरीर के लिए नहीं, बल्कि आत्मा के लिए भी होता है।' वास्तव में स्वास्थ्य और खुशी पाने के लिए, व्यक्ति को संतुलित जीवन जीने की ज़रूरत है। भगवद् गीता के अध्याय 6 श्लोक 17 में भगवान श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैं 'युकाहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु,युक्तस्वप्नवबोधस्य योग भवति दु:खहा।'इसका तात्पर्य यह है है, 'जिसका आहार और क्रियाकलाप संतुलित है, जिसके कार्य उचित हैं, जिसके सोने और जागने के घंटे नियमित हैं, और जो ध्यान के मार्ग का अनुसरण करता है, वह दुख या अप्रसन्नता का नाश करने वाला है।' वास्तव में भगवान श्री कृष्ण का यह संदेश आज भी प्रासंगिक है, जिसे आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधानों और आंकड़ों के विश्लेषण द्वारा प्रमाणित किया गया है। अंत में यही कहूंगा कि, संयम और विविधता ही आज के आहार विशेषज्ञों की अवधारणा का मूलमंत्र है। खान-पान में संयम के साथ-साथ सोच, मनोरंजन और कार्यों में संयम ही स्वस्थ जीवन का रहस्य है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

गाजियाबाद में घर बसाने का मौका, नई टाउनशिप के लिए तेज हुआ काम; जानिए योजना की फुल डिटेल

परिवहन विशेष न्यूज़

हरनंदीपुरम टॉउनशिप सकीम को लेकर कैबिनेट से गाजियाबाद डेवलपमेंट अथॉरिटी को 400 करोड़ की मंजूरी मिलने के बाद योजना का काम तेज हो गया है। नई हरनंदीपुरम टाउनशिप के लिए मिलने वाली धनराशि का 75 फीसदी जमीन खरीद और विकास कार्यों पर खर्च करने के बाद अगली किस्त के लिए आवेदन किया जाएगा। इसके बाद शासन से दूसरी किस्त जारी होगी।

गाजियाबाद। मुख्यमंत्री शहरी विस्तारीकरण योजना के तहत राजनगर एक्सटेंशन के पास गाजियाबाद विकास प्राधिकरण (जीडीए) दो चरणों में हरनंदीपुरम नाम से नई टाउनशिप को बसाने की तैयारी में जुटा है।

बता दें कि योजना के लिए 20 फरवरी को लखनऊ में कैबिनेट की बैठक में गाजियाबाद विकास प्राधिकरण को पहली किस्त के रूप में 400 करोड़ रुपये मंजूर किए गए। यह रकम मार्च माह के शुरुआत में प्राधिकरण के खाते में ट्रांसफर हो जाएगी।

इसके बाद 400 करोड़ रुपये गाजियाबाद विकास प्राधिकरण अपनी ओर से मिलाकर किसानों से भूमि खरीद व नई टाउनशिप में विकास कार्यों पर खर्च करेगा।

पहले 5 गांव के किसानों से खरीदी जाएगी जमीन

गाजियाबाद विकास प्राधिकरण पहले चरण में पांच गांव की करीब 350 हेक्टेयर भूमि को इसमें शामिल करने की योजना बना रहा है। अभी दूसरे चरण के तीन गांव की जमीन को होल्ड पर रखा गया है।

पहले चरण के बाद दूसरे चरण में किसानों से सहमति के बाद जमीन की खरीद की जाएगी। हरनंदीपुरम योजना के लिए कैबिनेट से 400 करोड़ रुपये की मंजूरी मिलने के बाद नई टाउनशिप को लेकर तेजी आएगी।

पहले चरण में पांच गांव की भूमि

गांव	भूमि हेक्टेयर में
मथुरापुर	14.6010
शमशेर	86.5427
चम्पतनगर	33.9863
भनेड़ाखुर्द	9.0630
नंगला फिरोज मोहनपुर	192.6514

दूसरे चरण में तीन गांव की भूमि

गांव - भूमि हेक्टेयर में

भोवापुर - 53.6546

शाहपुर निज मोरटा - 66.4818

मोरटा - 5.1510

योजना में कई तरह की भूमि शामिल

हरनंदीपुरम योजना में कई तरह की भूमि को शामिल किया जाएगा। इसमें ग्राम समाज की करीब 27 हेक्टेयर भूमि भी शामिल है। इसके अलावा 462 किसानों के अलावा करीब 19 हेक्टेयर जमीन जीडीए ने पूर्व में ही अर्जित कर रखी है। 11 हेक्टेयर जमीन का प्राधिकरण के पास लैंड बैंक पहले से मौजूद है।

हाईटेक होगी नई टाउनशिप

नई टाउनशिप को हाईटेक तौर तरीके से बसाने की तैयारी है।

इसमें रेन वाटर हार्वेसिटिंग सिस्टम के लिए कंट्रोल रूम तैयार किया जाएगा।

यहां से ड्रेनेज और सीवरेज सिस्टम पर निगरानी होगी। पानी और बिजली बचाने और जल प्रबंधन प्रणाली एआई बेस्ड होगी। इससे पानी बर्बाद नहीं होगा।

यहां अधिक से अधिक सौर ऊर्जा का प्रयोग होगा।

घरों के रूफटाप पर सोलर पैनल लगाए जाएंगे।

सुरक्षा के लिए सीसीटीवी कैमरे की निगरानी और महिलाओं के लिए पिंक टॉयलेट होंगे।

किसानों से जमीन खरीद के लिए बन रहा प्लान

हरनंदीपुरम योजना को लेकर गाजियाबाद विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष अतुल वत्स ने बताया कि बृहस्पतिवार को लखनऊ में बैठक हुई, जिसमें शासन स्तर पर कैबिनेट की ओर से जीडीए को 400 करोड़ रुपये की मंजूरी दी गई है, जो मार्च माह के शुरुआत में जीडीए को ट्रांसफर हो जाएगी। नई टाउनशिप के लिए जीडीए की ओर से संबंधित गांव के किसानों से जमीन खरीद के लिए सहमति बनाई जा रही है।

कैब बाइक से जा रहीं कंपनी सेक्रेटरी को ट्रक ने मारी टक्कर, हुई मौत

नोएडा के सेक्टर-63 में एक दर्दनाक सड़क हादसा हो गया। इसमें एक कंपनी सेक्रेटरी की मौत हो गई। आकांक्षा गोयल नाम की महिला कैब बाइक से अपने ऑफिस जा रही थीं तभी एक ट्रक ने उन्हें पीछे से टक्कर मार दी। हादसे में आकांक्षा की मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस ने ट्रक चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है।

नोएडा। सेक्टर-63 थाना क्षेत्र के एसजेएम अस्पताल के पास से कैब बाइक से कार्यालय जा रहीं कंपनी सेक्रेटरी (सीएस) को टक्कर चालक ने लापरवाही से चलाते हुए टक्कर मार दी। हादसे में कंपनी सेक्रेटरी की मौत हो गई।

स्वजन ने ट्रक नंबर के आधार पर अज्ञात चालक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है। उधर, स्वजन ने पोस्टमार्टम के बाद रविवार को अंतिम संस्कार किया। बेटी की मौत से परिवार में कोहराम मचा हुआ है।

मूल रूप से मध्य प्रदेश ग्वालियर के गौरव गोयल ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि वह और बहन के साथ बिसरख ऐस सिटी मे रहते हैं। उनकी 27 वर्षीय बहन आकांक्षा गोयल कंपनी सेक्रेटरी थी। बहन शनिवार सुबह को बिसरख से बाइक कैब से दिल्ली लाजपतनगर अपने कार्यालय जा रही थी।

कैब बाइक को पीछे से ट्रक चालक ने मारी थी टक्कर

एसजेएम अस्पताल के पास हरियाणा नंबर के ट्रक का चालक तेज गति व लापरवाही से चलाते हुए आया। कैब बाइक चालक के साइड देने पर भी ट्रक चालक वाहन को नियंत्रित नहीं करा पाया। कैब बाइक में पीछे से टक्कर मार दी। जहां हादसे में बाइक क्षतिग्रस्त हो गई। तो उनकी बहन और कैब चालक सड़क पर गिरकर घायल हो गए लेकिन बहन ट्रक के नीचे आने से ज्यादा चोट आई।

आनन फानन में अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां पर चिकित्सकों ने आकांक्षा को मृत घोषित कर दिया। स्वजन बेटी को फोन मिला रहे लेकिन फोन नहीं उठ। ऐसे में बेटी से बात नहीं हो पाईं।

काफी देर बाद पुलिस के फोन उठाने पर डर गए और हादसे की सूचना पाकर घबरा गए। शुरुआत में यकीन ही नहीं हुआ था। उधर, आरोपित ट्रक चालक मौके से भाग गया। कैब चालक के पैर में चोट आई है और उसका उपचार चल रहा है।

थाना प्रभारी निरीक्षक अवधेश प्रताप सिंह ने बताया कि शव का पोस्टमार्टम कराकर स्वजन को सौंप दिया गया। स्वजन की तहरीर पर वाहन नंबर के आधार अज्ञात चालक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर जांच कराई जा रही है।

बेटा आईटी कंपनी तो बेटी थी सीएस

पेशे से कारोबारी पिता सुनील ने बताया कि बेटा गौरव आईटी कंपनी में नौकरी करता है जबकि बेटी आकांक्षा सीएस की पढ़ाई कर चुकी थी और दिल्ली की एक कंपनी में नौकरी कर रही थी।

बेटी को लेकर परिवार ने सपने देखे थे, लेकिन सड़क हादसे ने सारे सपने चकनाचूर कर दिए। हादसे से पूरा परिवार टूट गया है। हर कोई आकांक्षा के सरल व्यवहार और उससे जुड़ी बातों को याद कर दुखी है।

यमुना एक्सप्रेस वे पर दो घंटे तक रहा बाइकर्स का आतंक, अटकी रही यात्रियों की सांसे; ट्रैफिक पुलिस पर सवाल

जेवर में यमुना एक्सप्रेसवे पर बाइकर्स का आतंक एक बार फिर देखने को मिला। बाइकर्स के कई ग्रुप एक्सप्रेसवे पर पहुंचे और तेज रफ्तार और स्टंटबाजी शुरू कर दी। बाइकर्स ने एक्सप्रेसवे के चारों लेन पर कब्जा कर लिया और अन्य वाहन चालकों की सांसे अटकी रहीं। पुलिस की मौजूदगी के बावजूद बाइकर्स बेखौफ होकर अपने स्टंट करते रहे।

जेवर। रफ्तार और रोमांच के शौकीन बाइकर्स रविवार सुबह एक बार फिर यमुना एक्सप्रेसवे पर आतंक मचाते नजर आए। बाइकर्स रविवार सुबह कई समूहों में यमुना एक्सप्रेसवे पर पहुंचे और तेज रफ्तार व शोर के साथ रेस लगाने लगे।

बाइकर्स पलक झपकते ही गायब

बाइकर्स ने एक्सप्रेसवे की चारों लेन पर कब्जा कर लिया और उनके स्टंट व रफ्तार ने अन्य वाहन चालकों की सांसें फूलाए रखीं। इससे पहले कि कोई कुछ समझ पाता, बाइकर्स पलक झपकते ही गायब हो गए। एक्सप्रेसवे पर दो घंटे तक बाइकर्स का खूब आतंक रहा।

बाइकर्स स्टंट व रोमांचकारी रफ्तार

स्पोर्ट्स बाइकों से निकलने वाली आसमान छूती (डरावनी) आवाज एक्सप्रेसवे से कई किलोमीटर दूर तक आम लोगों को सुनाई दी, लेकिन पांच थानों की पुलिस को उनकी आवाज सुनाई नहीं दी। बाइकर्स स्टंट व रोमांचकारी रफ्तार करते हुए बेखौफ होकर अपने गंतव्य की ओर चले गए।

बाइकर्स का आतंक

ग्रेटर नोएडा से आगरा तक यमुना एक्सप्रेसवे पर सुरक्षित सफर के लिए निकले लोगों को रविवार सुबह एक बार फिर बाइकर्स का आतंक देखने को मिला। सुबह सात बजे से ही रफ्तार और रोमांच के शौकीन सैकड़ों युवा स्पोर्ट्स बाइक लेकर यमुना एक्सप्रेसवे पर पहुंच गए।

इन बाइकर्स को न तो यातायात नियमों का डर है और न ही दूसरे वाहन चालकों की सुरक्षा की परवाह। एक्सप्रेसवे पर पहुंचते ही बाइकर्स 10 से 15 बाइकों के समूह में 150 से 200 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से रेस लगाना शुरू कर देते हैं।

एनसीआर में छोटे प्लॉट खरीदने का सुनहरा मौका, सुविधाएं विकसित करने में जुटी अथॉरिटी

परिवहन विशेष न्यूज़

जीडीए प्लॉट स्कीम 2025 अगर आप एनसीआर में अपना आशियाना बसाना चाहते हैं तो गाजियाबाद विकास प्राधिकरण (जीडीए) आपको सुनहरा मौका दे रहा है। गाजियाबाद विकास प्राधिकरण इंदिरापुरम में छोटे आकार के आवासीय और कमर्शियल प्लॉट की बिक्री करने की योजना पर तेजी से काम कर रहा है। खाली पड़ी ग्रुप हाउसिंग की जमीन पर छोटे प्लॉट काट कर बिक्री की जाएगी।

गाजियाबाद। इंदिरापुरम में खाली पड़े ग्रुप हाउसिंग के भू उपयोग को परिवर्तित किया गया है। गाजियाबाद विकास प्राधिकरण (जीडीए) इंदिरापुरम विस्तार योजना में प्लॉट सृजित कर क्षेत्र को विकसित करने में जुटा है, जहां लोगों को प्लॉट खरीदने का मौका मिलेगा। इसके लिए प्राधिकरण सड़क, सीवरेज और पानी की लाइन के साथ ही विकास कार्यों में जुटा है।

छोटे प्लॉट की बिक्री से जीडीए का भरेगा खजाना

गाजियाबाद विकास प्राधिकरण के मुख्य अभियंता मानवेंद्र सिंह ने बताया कि इंदिरापुरम

में चार ग्रुप हाउसिंग के करीब 30 हजार वर्ग मीटर प्लॉट खाली थे, जिसका भू उपयोग परिवर्तित करते आवासीय किया गया।

प्राधिकरण इस योजना के तहत लेआउट के अनुसार, सड़क निर्माण के साथ ही सीवर और पेयजल लाइन आदि कार्य कराएगा।

योजना में प्लॉट के सामने मैनहोल, बिजली के खंभे, ग्रीन बेल्ट, पार्क आदि विकसित किए जाएंगे। गाजियाबाद विकास प्राधिकरण की ओर से करीब 120 प्लॉट के हिसाब से लेआउट तैयार किया गया है।

योजना को जल्द तैयार कर छोटे प्लॉट की बिक्री से गाजियाबाद विकास प्राधिकरण को आय होगी, जिससे विकास कार्य और अधिक तेजी से हो सकेंगे।

जीडीए ने 92 पात्रों को भवन का आवंटन पत्र सौंपा

गाजियाबाद विकास प्राधिकरण की ओर से 92 पात्रों को भवन का आवंटन पत्र सौंपा गया है। उक्त जानकारी देते हुए गाजियाबाद विकास प्राधिकरण के अपर सचिव प्रदीप कुमार सिंह ने बताया कि निजी विकासकर्ताओं की ओर से ईडब्ल्यूएस, एलआईजी भवन निर्माण किया है। इनमें 31 ईडब्ल्यूएस और 61 एलआईजी भवन शामिल हैं। सभी को आवंटन पत्र दे दिए गए।

उन्होंने बताया कि आवंटन पत्र हासिल करने वाले सभी लाभार्थियों से रकम जमा कराकर आवंटित भवन पर कब्जा दिया जाएगा। आवेदन करने वाले लोगों की संख्या करीब 63 थी, लेकिन लॉटरी के माध्यम से हुए ड्रा में 31 पात्रों को भवन का आवंटन हुआ। एलआईजी के लिए 99 आवेदन में 61 को लॉटरी के माध्यम से आवंटन पत्र दिया गया है।

उल्लेखनीय है कि इससे पहले, 18 फरवरी को हिंदी भवन सभागार में जीडीए की ओर से दूसरे दिन खाली प्लॉट की नीलामी की गई, जिसमें जीडीए को करीब 57 करोड़ रुपये की आय होगी।

बोलीदाताओं ने दूसरे दिन भी खरीदारी के लिए उत्साह के साथ बोली लगाई। दो दिन तक चली नीलामी प्रक्रिया के दौरान प्राधिकरण को करीब 91 से अधिक की आय होने की उम्मीद है, जिससे प्राधिकरण क्षेत्र में विकास कार्यों को रफ्तार मिलेगी।

यूक्रेन जंग मुद्दे पर 15 यूरोपियन देशों की लंदन में डिफेंस सम्मिट -नाटो तुर्की यूरोपीय यूनियन के प्रेसिडेंट शामिल!

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर दुनियाँ का हर देश यह महसूस कर रहा है कि अमेरिका में ट्रंप शासन आने के बाद दुनियाँ की परिस्थितियों में परिवर्तन हो रही है, ट्रंप के अमेरिकी फर्स्ट के विज़न के कारण ट्रंप तेजी से ऐसी परिस्थितियों लाने को आतुर हैं, ताकि अमेरिका की आर्थिक स्थिति मजबूत हो, अर्थव्यवस्था सुदृढ़ हो, यूक्रेन की खनिज में हिस्सेदारी तथा रूस के साथ दोस्ती की पींगे बढ़ाना, व्हाइट हाउस में ट्रंप जेलेंस्की विवाद इत्यादि इसी का ही एक हिस्सा माना जा सकता है, तो उधर 27 देश का संगठन यूरोपीय यूनियन, नाटो, तुर्की इत्यादि पूरी स्थिति को समझ रहे हैं, क्योंकि ईयू को पूरी प्रक्रिया में अलग- थलग किया जा रहा है, नतीजा यह है कि शुक्रवार 28 फरवरी 2025 को व्हाइट हाउस में ज़ेलेंसकी व ट्रंप की गहमाग़हमी के बाद जैलेंसकी जब सीधे ब्रिटेन लंदन पहुंचे तो उन्हें हाथों- हाथ लिया गया, ईयू नाटो तुर्की उसके साथ खड़े दिखे जबकि दो अन्य देश विरोध कर रहे थे। लंदन में यूरोपीय यूनियन देशों का यूक्रेन जंग मुद्दे पर डिफेंस समिट हुआ, जिसमें यूक्रेन की मदद की बात कीगई व अमेरिका को युद्ध समझौता प्लान देने पर बातचीत हुई। संयोगवश उसी दौरान यूरोपीय यूनियनकी अध्यक्ष 27-28 फरवरी 2025 को भारत दौरे पर थी, जहां विदेश मंत्री व पीएम से सफल चर्चा के बाद रूस ने तंज कसा कि यूरोप भारत की शरण में जा रहा है, यानें भारत का रुतबा बढ़ता हुआ दिखाई दे रहा है, ऐसा मेरा मानना है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, ट्रंप बनाम यूरोपीय यूनियन, यूरोपीय देशों में मतभेदों के बीच यूरोपीय यूनियन अध्यक्ष भारत के साथ पींगे बढ़ाने को आतुर? रूस का तंज, भारत की शरण में पूरा यूरोप? जिससे भारत की अहम भूमिका हो गई है।

साथियों बात अगर हम यूरोपीय यूनियन के चर्चा में आने व यूक्रेन को समर्थन करने की करें तो जेलेंस्की के सपोर्ट में कई यूरोपीय देश यूरोप के कई नेताओं ने जेलेंस्की के लिए अपना समर्थन जताया है। नॉर्वे, नीदरलैंड, पोलैंड, यूरोपीय यूनियन, जर्मनी, ब्रिटेन जैसे यूरोपीय देशों के अलावा कनाडा और ऑस्ट्रेलिया ने भी जेलेंस्की के लिए समर्थन जताया।जेलेंस्की शुक्रवार को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प से मिलने व्हाइट हाउस पहुंचे थे। जहां दोनों के बीच तीखी बहस हो गई। ट्रम्प-वेंस और जेलेंस्की एक-दूसरे की तरफ उंगली दिखाते नजर आए। ट्रम्प ने कई बार जेलेंस्की को फटकार भी लगाई। उन्होंने कहा कि वो तीसरा विश्वयुद्ध कराने का जुआ खेल रहे हैं।जेलेंस्की ने कहा कि जब आप युद्ध में होते हो, तो सबके साथ परेशानियां होती हैं।भविष्य में इस युद्ध का असर अमेरिका पर भी पड़ेगा।ट्रम्प यह सुनकर झुंझला गए और उन्होंने कहा कि हमें मत बताइए कि हमें क्या महसूस करना चाहिए। यूक्रेन जंग के मुद्दे पर यूरोपीय देशों की डिफेंस समिट लंदन में हुई, इस बैठक में 15 देशों के राष्ट्र प्रमुख, तुर्की के विदेश मंत्री, नाटो के महासचिव, यूरोपीय संघ और यूरोपीय काउंसिल के प्रेसिडेंट शामिल हुए। ब्रिटिश पीएम ने गले लगाकर जेलेंस्की का स्वागत किया ब्रिटिश पीएम कीर स्टार्मर ने दो बार यूक्रेनी राष्ट्रपति को गले लगाया। सबसे पहले उन्होंने जेलेंस्की के लंदन पहुंचने पर गले लगाकर उनका स्वागत किया, फिर डिफेंस समिट में जेलेंस्की के पहुंचने पर दूसरी बार गले लगाया।इससे पहले जब जेलेंस्की शनिवार को इंग्लैंड पहुंचे तो सड़कों पर लोगों ने जेलेंस्की के सपोर्ट में जोरदार नारे लगाए। स्टार्मर ने उन्हें रिसीव किया और कहा कि आपको पूरे ब्रिटेन का सपोर्ट हासिल है। हम आपके और यूक्रेन के साथ खड़े हैं, भले ही इसमें कितना भी वक्त क्यों न लग जाए। जेलेंस्की ने इस सपोर्ट के लिए उनका शुक्रिया अदा किया। यूक्रेन के सपोर्ट के मुद्दे पर यूरोपियन यूनियन के अंदर भी दरार नजर आ रही है। स्लोवाकिया के पीएम रॉबर्ट फिको का कहना है कि वो यूक्रेन को आर्थिक और सैन्य तौर पर मदद नहीं देंगे। यूक्रेन कभी भी सैन्य ताकत के दम पर रूस को बातचीत के टेबल पर नहीं ला पाएगा। इससे पहले हंगरी के प्रधानमंत्री विक्टर ओरबान ने भी जेलेंस्की के खिलाफ अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प का सपोर्ट किया है। व्हाइट हाउस में दोनों के बीच हुई बहस के बाद उन्होंने ट्रम्प को मजबूत और जेलेंस्की को कमजोर कहा था। उन्होंने ट्रम्प का धन्यवाद भी किया था। ब्रिटेन ने यूक्रेन को 24 हजार करोड़ का लोन दिया। इसके लिए शनिवार को ब्रिटिश पीएम स्टार्मर और यूक्रेनी राष्ट्रपति जेलेंस्की ने समझौते पर साइन किए

साथियों बात अगर हम व्हाइट हाउस में ट्रंप से गहमाग़हमी के बाद जैलेंसकी सीधे लंदन यात्रा पर पहुंचने की करें तो पीएम स्टार्मरनें कहा हमारी कोशिश यूक्रेन को मजबूत स्थिति में लाना है। हम यूक्रेन के लिए अपना समर्थन दोगुना कर रहे हैं।स्टार्मर ने कहा कि समिट में शामिल नेताओं ने यूक्रेन के लिए सैन्य सहायता जारी रखने और रूस पर आर्थिक दबाव बढ़ाने पर सहमति जाहिर की है। किसी भी शांति वार्ता में यूक्रेन को शामिल किया जाना चाहिए।स्टार्मर का कहना है कि किसी भी समझौते में रूस को शामिल करना जरूरी होगा, लेकिन रूस ने इससे पहले कई बार समझौतों का उल्लंघन किया है, ऐसे में हमें यह तय करना होगा कि यूक्रेन को दी जाने वाली गारंटी पर कोई असर नहीं पड़ना चाहिए। आगे के संघर्ष से बचने के लिए गारंटी की जरूरत है। इस बैठक से पहले स्टार्मर ने कहा था कि ब्रिटेन, फ्रांस और यूक्रेन मिलकर रूस-यूक्रेन जंग को रोकने के प्लान पर काम करने के लिए राजी हुए हैं। ये प्लान अमेरिका के सामने रखा जाएगा। उन्होंने कहा कि ये प्लान तभी काम करेगा जब अमेरिका अपनी सुरक्षा गारंटी पर टिका रहेगा।

साथियों बात अगर हम यूक्रेन जंग मुद्दे पर हुए डिफेंस समिट में अन्य देशों की प्रतिक्रिया की करें तो, बैठक के बाद किसने क्या कहा, (1)उर्सुला वॉन डेर लेयेनः यूरोपीय कमीशन की अध्यक्ष ने कहा कि हमें यूरोप को तत्काल हथियारबंद करना होगा। हमें डिफेंस निवेश बढ़ाना होगा। यह यूरोपीय यूनियन की सुरक्षा के लिए जरूरी है। हमें फिलहाल सबसे खराब हालात के लिए तैयार रहना चाहिए। इसे लेकर 6 मार्च को यूरोपीय परिषद में एक प्रस्ताव पेश किया जाएगा। (2) मार्क रूटेः नाटो के महासचिव ने कहा कि यूरोपीय देश सुरक्षा के लिए खर्च और यूक्रेन को सपोर्ट बढ़ाने के लिए कदम उठाएंगे। अभी तक कोई शांति समझौता नहीं हुआ है, लेकिन हमें इसके लिए तैयार रहना होगा और यह तय करना होगा कि यूरोपीय देश सुरक्षा गारंटी के साथ मदद करने के लिए तैयार हैं। (3) डोनाल्ड टस्कः पोलैंड के राष्ट्रपति ने कहा कि 'यूरोप जाग गया है' और अब यूक्रेन के लिए समर्थन और यूरोपीय यूनियन के ईस्ट बॉर्डर को मजबूत करने पर एक स्वर में बोल रहा है। (4) ओलाफ शोल्जः जर्मन चांसलर ने कहा कि आज की बैठक काफी महत्वपूर्ण थी। यह रूसी हमले से जूझ रहे यूक्रेन के लिए यूरोप का समर्थन जाहिर करने का मौका था।

साथियों बात अगर हम ट्रंप के जंग से दूर रहने की करें तो, अमेरिकी राष्ट्रपति ने साफ कर दिया है कि अगर कोई जंग छिड़ती है तो इससे अमेरिका दूर रहेगा।अब बड़ा सवाल उठता है कि यूक्रेन तो रूस से युद्ध लड़ नहीं पाएगा, तो फिर क्या यूरोपीय देश रूस से सीधा जंग लड़ेंगे। राष्ट्रपति ट्रंप ने जेलेंस्की से मुलाकात से पहले यूरोप का प्रतिनिधित्व करने आए ब्रिटेन के प्राइम मिनिस्टर कीर स्टार्मर से भी मुलाकात की थी।डोनाल्ड ट्रंप ने कहा था कि पूरे यूरोप की रूस के साथ जंग छिड़ने जा रही है और उसका सेंटर पॉइंट यूक्रेन बनेगा। वहीं इससे पहले उन्होंने फ्रांस के राष्ट्रपति इमानुएल मैक्रों से भी मुलाकात की थी। इस दौरान भी दोनों नेता सहज स्थिति में नहीं थे। अमेरिका के युद्ध से पीछे हटने के बाद जेलेंस्की जंग में अकेले पड़ गए हैं। ऐसे में यूरोपियन यूनियन के देशों को साथ आना पड़ेगा। इसके लिए उन्हें सबसे पहले यूक्रेन को सुरक्षा की गारंटी देनी होगी। हालांकि संभावना यह भी है कि अगर वह यूक्रेन को सुरक्षा की गारंटी देने पर सहमत होते हैं तो रूस यूरोपीय देशों पर हमले शुरू कर सकता है।

साथियों बात अगर हम यूरोपियन यूनियन की अध्यक्ष की 27-28 फ़रवरी 2025 को भारत यात्रा की करें तो, उनके इस यात्रा के में उनके साथ यूरोपीय संघ के कमिशनर के समूह भी थे। यह यूरोपीय संघ के कमिशनर के समूह की भारत की पहली यात्रा थी और उर्सुला वॉन डेर लेयेन की भारत की तीसरी यात्रा थी। यूरोपीय संघ के कमिशनर के समूह, 27 सदस्य वाली यूरोपीय संघ (ईयू) के देशों के आयुक्तों से बना है। यह पहली बार था कि यूरोपीय संघ के कमिशनर के समूह, यूरोप के बाहर का दौरा कर रहे थे।ईयू अध्यक्ष भारत यात्रा के दौरान, भारत-यूरोपीय संघ व्यापार और प्रौद्योगिकी परिषद की दूसरी मंत्रिस्तरीय बैठक भी नई दिल्ली में आयोजित की गई थी।ईयूअध्यक्षा ने नई दिल्ली में पीएम के साथ बैठक की और द्विपक्षीय मुद्दों पर चर्चा की।मुलाकात के बाद दोनों नेताओं ने एक संयुक्त बयान जारी किया। संयुक्त वक्तव्य की मुख्य बिन्दुः.

(1)भारत और यूरोपीय संघ 2025 में पारस्परिक रूप से लाभकारी मुक्त व्यापार समझौते को अंतिम रूप देंगे ।(2) दोनों, स्वच्छ ऊर्जा और जलवायु, जल,स्मार्ट और टिकाऊ शहरीकरण, कनेक्टिविटी और आपदा प्रबंधन के क्षेत्रों में सहयोग का विस्तार और गहरा करने पर सहमत।(3)दोनों स्वच्छ हाइड्रोजन, सौर ऊर्जा, अपतटीय पवन, टिकाऊ शहरी गतिशीलता, विमानन और रेलवे जैसे विशिष्ट क्षेत्रों में सहयोग तेज करने पर सहमत। (4) दोनों भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे (आईएमईसी) को साकार करने के लिए कदम उठाएंगे। (5)आईएमईसी को 2023 में नई दिल्ली में जी-20 शिखर सम्मेलन की बैठक के दौरान प्रस्तावित किया गया था। इसका उद्देश्य संयुक्त अरब अमीरात और सऊदी अरब के माध्यम से यूरोपीय संघ के देशों को भारत से जोड़ना है। (6)कॉरिडोर में दो परियोजनाएं हैंः भारत और खाड़ी देशों के बीच एक पूर्वी समुद्री लिंक और अरब प्रायद्वीप को यूरोप से जोड़ने वाला एक उत्तरी खंड।भारत-ईयू व्यापार और प्रौद्योगिकी परिषद (टीटीसी) की दूसरी बैठक 28 फरवरी 2025 को नई दिल्ली में आयोजित की गई। दोनों देशों के प्रतिनिधि ने इस बैठक की सह -अध्यक्षता की।टीटीसी के बारे में (1) इसकी स्थापना अप्रैल 2022 में पीएम और यूरोपीय आयोग के अध्यक्ष द्वारा की गई थी।(2) यह व्यापार, विश्वसनीय प्रौद्योगिकी और सुरक्षा से संबंधित मुद्दों पर चर्चा करने के लिए मुख्य द्विपक्षीय मंच है। (3) पहली बैठक मई 2023 में ब्रुसेल्स में आयोजित की गई थी।भारत और यूरोपीय संघ के संबंध यूरोपियन यूनियन (ईयू) 27 यूरोपियन देशों का एक समूह है। (1) भारत और यूरोपीय संघ ने 2004 में अपने संबंधों को रणनीतिक साझेदारी तक बढ़ाने पर सहमत हुए। (2) यूरोपीय संघ भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। (3) 2023 में दोनों के बीच कुल व्यापार 124 बिलियन यूरो 2023 था। (4) संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद यूरोपीय संघ भारत के लिए दूसरा सबसे बड़ा निर्यात बाजार है। (5) भारत,ईयू का 9वां सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है।(6) पिछले दशक में ईयू और भारत के बीच वस्तुओं का व्यापार लगभग 90पेर्सेंट बढ़ गया है। (7) 2023 में, ईयू और भारत के बीच सेवाओं का व्यापार 59.7 बिलियन यूरो था। (8)भारत में लगभग 6,000 यूरोपीय कंपनियाँ मौजूद हैं।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि ट्रंप बनाम यूरोपीय यूनियन।यूक्रेन जंग मुद्दे पर 15 यूरोपियन देशों की लंदन में डिफेंस सम्मिट - नाटो तुर्की यूरोपीय यूनियन के प्रेसिडेंट शामिल !ट्रंप-यूरोप में मतभेदों के बीच, यूरोपीय यूनियन अध्यक्ष भारत के साथ पींगे बनाने को आतुर? रूस का तंज भारत की शरण में पूरा यूरोप? भारत की अहम भूमिका !

हुंडई क्रेटा को मिले दो नए वेरिएंट्स, किस वेरिएंट में मिलेंगे कैसे फीचर्स, कितनी होगी कीमत

परिवहन विशेष न्यूज

साउथ कोरियाई वाहन निर्माता हुंडई की ओर से भारतीय बाजार में कई वाहनों की बिक्री की जाती है। कंपनी की ओर से मिड साइज एसयूवी सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली Hyundai Creta के दो नए वेरिएंट्स को पेश कर दिया है। इन वेरिएंट्स में किस तरह के फीचर्स को दिया जा रहा है। किस कीमत पर इनको खरीदा जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में मिड साइज एसयूवी सेगमेंट में कई निर्माताओं की ओर से उत्पादों को लाया जाता है। साउथ कोरियाई की निर्माता Hyundai की ओर से भी इस सेगमेंट में Creta को लाया जाता है। कंपनी की ओर से एसयूवी को दो नए वेरिएंट्स (Hyundai Creta new variants) के साथ पेश किया गया है। एसयूवी के दोनों नए वेरिएंट्स में किस तरह के फीचर्स को दिया गया है। इनको किस कीमत पर खरीदा जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Hyundai Creta को मिले दो नए वेरिएंट्स

हुंडई की ओर से क्रेटा एसयूवी को दो नए वेरिएंट्स के साथ लाया गया है। कंपनी की ओर से March 2025 में इन वेरिएंट्स को पेश किया गया है। इनमें से एक वेरिएंट को EX (O) नाम से पेश किया गया है और दूसरे वेरिएंट के तौर पर SX Premium को दिया गया है।

EX (O) में क्या होगी खासियत

कंपनी की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक Hyundai Creta EX (O) में पैनोरमिक सनरूफ और एलईडी रीडिंग लैंप जैसे फीचर्स को दिया गया है।

SX Premium में कैसे होंगे फीचर्स

हुंडई की ओर से क्रेटा के नए वेरिएंट के तौर पर SX Premium को भी पेश किया गया है। इस वेरिएंट में कंपनी की ओर से फ्रंट वेंटिलेटिड सीट्स, 8 वे पावर ड्राइवर सीट, बोस के प्रीमियम 8 स्पीकर ऑडियो सिस्टम जैसे फीचर्स (Creta features) को इसमें दिया गया है।

इन वेरिएंट्स को भी मिले नए फीचर्स

इसके अलावा हुंडई क्रेटा के SX (O) वेरिएंट में रेन सेंसर, रियर वायरलेस चार्जर, स्कूप्ड सीट्स को दिया गया है। S(O) वेरिएंट में स्मार्ट की के साथ मोशन सेंसर को दिया गया है। कंपनी ने अब एसयूवी को टाइटन ग्रे मैट के साथ स्टारी नाइट रंगों के विकल्प के साथ पेश किया है।

कितनी है कीमत

एसयूवी के EX (O) वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 12.97 लाख रुपये से शुरू (Creta price) होती है। इसके अलावा नए वेरिएंट के तौर पर पेश किए गए SX Premium की शुरुआती एक्स शोरूम कीमत 16.18 लाख रुपये रखी गई है। एसयूवी को नए वेरिएंट्स के साथ 20.18 लाख रुपये तक की एक्स शोरूम कीमत पर खरीदा जा सकता है।

किनसे है मुकाबला

हुंडई की ओर से क्रेटा एसयूवी को मिड साइज सेगमेंट में लाया जाता है। इस सेगमेंट में एसयूवी का सीधा मुकाबला Kia Seltos, Tata Harrier, MG Hector, Toyota Urban Cruiser Hyryder जैसी एसयूवी के साथ होता है।

लॉन्च के लिए तैयार वॉल्वो एक्सC90 एसयूवी, जानें कैसे होंगे फीचर्स और कितनी हो सकती है कीमत

परिवहन विशेष न्यूज

स्वीडन की वाहन निर्माता Volvo की ओर से बेहद सुरक्षित और फीचर्स वाली कारों को बाजार में बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। कंपनी की ओर से जल्द ही नई गाड़ी को भारतीय बाजार में लाने की तैयारी की जा रही है। किस गाड़ी को किस तरह के फीचर्स के साथ कब तक लॉन्च किया जा सकता है। आइए जानते हैं।

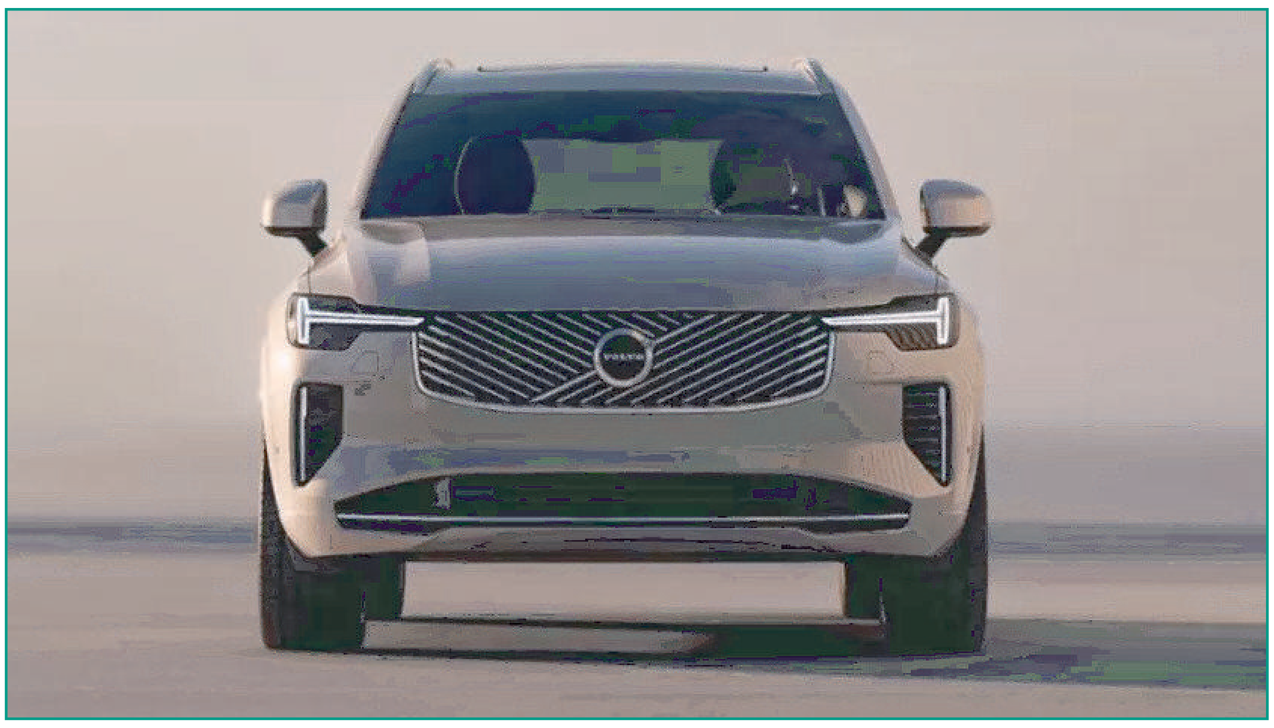

नई दिल्ली। यूरोप की प्रमुख वाहन निर्माता Volvo की ओर से कई सेगमेंट में Cars And SUVs को भारतीय बाजार में ऑफर किया जाता है। कंपनी की ओर से कल नई गाड़ी को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। किस सेगमेंट में किस तरह के फीचर्स के साथ कब तक नई गाड़ी को लॉन्च (upcoming Volvo cars) किया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

लॉन्च होगी नई गाड़ी

Volvo की ओर से पांच मार्च 2025 को औपचारिक तौर पर नई गाड़ी को भारत में लॉन्च कर दिया जाएगा। कंपनी की ओर से जिस गाड़ी को कल लॉन्च किया जाएगा उसे प्रीमियम एसयूवी सेगमेंट में लाया जाएगा। जानकारी के मुताबिक Volvo XC90 को कल भारतीय बाजार में लाया जा सकता है।

ग्लोबल स्तर पर हो चुकी है पेश

कंपनी की ओर से इस एसयूवी को साल 2024 के सितंबर महीने में ही ग्लोबल स्तर पर पेश किया जा चुका है। जिसके बाद अब इस एसयूवी के फेसलिफ्ट को भारतीय बाजार में लाने की तैयारी की जा रही है।

क्या होगा बदलाव

जानकारी के मुताबिक एसयूवी के फेसलिफ्ट वर्जन में एक्सटीरियर के साथ इंटीरियर में भी कई बदलाव होंगे और कुछ नए फीचर्स को भी इसमें जोड़ा जाएगा। एसयूवी के फेसलिफ्ट में नए डिजाइन वाली ग्रिल, टी-शेप एलईडी डीआरएल, नई हेडलाइट्स को दिया जाएगा। इसके अलावा साइड और रियर प्रोफाइल में ज्यादा बदलाव की उम्मीद कम है। इंटीरियर में बड़ा इंफोटेनमेंट सिस्टम के साथ ही फोर जोन ऑटो एसी, पैनोरमिक सनरूफ जैसे कुछ नए फीचर्स को जोड़ा जा सकता है।

कितना दमदार होगा इंजन

Volvo XC90 एसयूवी में कंपनी की ओर से दो लीटर टर्बोचार्ज इंजन दिया जाएगा। जिसके साथ 48V माइल्ड हाइब्रिड या प्लग-इन हाइब्रिड तकनीक को दिया जा सकता है। माइल्ड हाइब्रिड इंजन के साथ इसे 250 पीएस की पावर और 360 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिल सकता है। वहीं प्लग-इन तकनीक के साथ एसयूवी को 455 पीएस की पावर और 709 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलेगा। इसके साथ एसयूवी में 8स्पीड ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन को दिया जाएगा और इसमें ऑल व्हील ड्राइव को भी ऑफर किया जाएगा।

कब होगी लॉन्च

Volvo XC90 के Facelift को भारतीय बाजार में चार मार्च 2025 को लॉन्च किया जाएगा। लॉन्च के समय इसकी एक्स शोरूम कीमत एक करोड़ रुपये के आस-पास हो सकती है। बाजार में इसका मुकाबला Mercedes Benz GLE, BMW X5, Audi Q7 और Lexus RX जैसी एसयूवी के साथ होगा।

हीरो, सुजुकी सहित दो पहिया वाहन निर्माताओं ने फरवरी 2025 में कैसा किया प्रदर्शन, कितनी हुई बिक्री

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय बाजार में हर महीने लाखों की संख्या में वाहनों की बिक्री की जाती है। इनमें सबसे ज्यादा योगदान दो पहिया वाहन सेगमेंट का होता है। फरवरी 2025 के दौरान किस दो पहिया निर्माता ने कितनी यूनिट्स की बिक्री की है। कितनी यूनिट्स का एक्सपोर्ट किया है। ईयर ऑन ईयर बेसिस पर कैसा प्रदर्शन रहा है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। देश में हर महीने लाखों दो पहिया वाहनों की बिक्री होती है। जिसके बाद हर महीने की रिपोर्ट को वाहन निर्माताओं की ओर से सार्वजनिक किया जाता है। February 2025 के दौरान दो पाहिया वाहनों की ब्रिकी कैसी रही है। किस निर्माता ने बीते महीने कितनी यूनिट्स की बिक्री की है। ईयर ऑन ईयर बेसिस पर किस निर्माता ने कैसा प्रदर्शन किया है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

देश की प्रमुख दो पहिया निर्माताओं में शामिल Hero Motocorp की ओर से हर महीने लाखों की संख्या में वाहनों की बिक्री की जाती है। बीते महीने में भी कंपनी की ओर से 3.88 लाख यूनिट्स वाहनों की बिक्री की गई है। इनमें से 357296 यूनिट्स की बिक्री घरेलू बाजार में की गई है। हीरो के इलेक्ट्रिक ब्रॉन्ड विडा ने भी बीते महीने के दौरान 6200 यूनिट्स की बिक्री की है। ईयर ऑन ईयर बेसिस पर कंपनी की बिक्री में कमी आई है। फरवरी 2024 के दौरान हीरो मोटोकॉर्प ने कुल 468410 यूनिट्स की बिक्री की थी।

Suzuki के लिए कैसा रहा February 2025

जापान की प्रमुख वाहन निर्माता कंपनी सुजुकी की ओर से भारत में कई सेगमेंट में दो पहिया वाहनों की बिक्री की जाती है। कंपनी की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक बीते महीने के दौरान 90206 यूनिट्स की बिक्री की गई है। इनमें से 73455 यूनिट्स की बिक्री घरेलू बाजार में हुई है और 16751 यूनिट्स का एक्सपोर्ट किया गया है। ईयर ऑन ईयर बेसिस पर कंपनी ने 19 फीसदी की बढ़त हासिल की है। फरवरी 2024 के दौरान सुजुकी ने 83304 यूनिट्स की बिक्री की थी।

कैसा रहा Royal Enfield का प्रदर्शन

रॉयल एनफील्ड की ओर से भी कई सेगमेंट में बाइक्स की बिक्री की जाती है। कंपनी से मिली जानकारी के मुताबिक बीते महीने के दौरान 90670 यूनिट्स की बिक्री हुई है। ईयर ऑन ईयर बेसिस पर 19 फीसदी की बढ़त हासिल हुई है। निर्माता ने घरेलू बाजार में 80799 यूनिट्स की बिक्री की है और 9871 यूनिट्स का एक्सपोर्ट किया है। ईयर ऑन ईयर बेसिस पर निर्माता ने फरवरी 2024 में 75935 यूनिट्स की बिक्री की थी।

गाड़ी में विंड स्क्रीन को इन तरीकों से करें साफ, नहीं तो सफर के दौरान होगी यह परेशानी

नई दिल्ली। किसी भी कार में विंडस्क्रीन काफी जरूरी हिस्सा होती है। लेकिन सफाई के दौरान लापरवाही बरतने के कारण हम अन्य पाट्‌र्स के साथ ही विंडस्क्रीन को भी बड़ा नुकसान पहुंचाते हैं। अगर आप भी अपनी गाड़ी को साफ करते हुए विंडस्क्रीन के साथ लापरवाही करते हैं, तो इससे आपको किस तरह का नुकसान हो सकता है। गाड़ी की विंडस्क्रीन को साफ करने के लिए किन बातों का ध्यान रखना (Car Windscreen Cleaning Tips) काफी जरूरी होता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

कितनी जरूरी है विंडस्क्रीन

किसी भी गाड़ी में विंडस्क्रीन काफी जरूरी हिस्सा होती है। जब भी गाड़ी को चलाया जाता है तो विंड ब्लास्ट काफी ज्यादा हो जाता है। जिससे आंखों को खुला रख पाना काफी मुश्किल हो जाता है। ऐसे में विंडस्क्रीन ही विंड ब्लास्ट से सुरक्षित रखती है। जिस कारण इसका सही रहना काफी जरूरी हो जाता है।

ग्लास क्लीनर का रखें ध्यान

हमेशा विंडस्क्रीन को साफ रखने के लिए अच्छी क्वालिटी के ग्लास क्लीनर का उपयोग करना चाहिए। ऐसा करने से आप विंडस्क्रीन की उम्र को बढ़ा सकते हैं। लेकिन ऐसा न करने पर और खराब क्वालिटी के ग्लास क्लीनर का उपयोग करने पर विंडस्क्रीन पर स्क्रैच आने के खतरे को बढ़ा देते हैं।

माइक्रोफाइबर कपड़े से करें सफाई

आमतौर पर लोग गाड़ी की सफाई के साथ ही विंडस्क्रीन की सफाई के लिए भी सामान्य कपड़े का उपयोग करते हैं। ऐसा करने से धूल के छोटे छोटे कण साफ नहीं हो पाते। इसके अलावा भी सामान्य कपड़ा ज्यादा मुलायम नहीं होता और विंडस्क्रीन पर लगातार उपयोग से स्क्रैच आने का खतरा बढ़ जाता है।

कैसे करें वाइपर का उपयोग

विंडस्क्रीन को सबसे ज्यादा नुकसान वाइपर के गलत उपयोग से होता है। अगर वाइपर को बिना पानी चलाया जाता है तो इससे विंडस्क्रीन पर बड़े निशान पड़ जाते हैं और रात के समय विजिबिलिटी काफी ज्यादा खराब हो जाती है। इसलिए कोशिश करें कि वाइपर का उपयोग तभी करें जब विंडस्क्रीन पर पर्याप्त मात्रा में पानी या वॉशर का उपयोग किया जाए।

विंडस्क्रीन खराब होने से क्या होती है परेशानी

अगर आपकी गाड़ी की विंडस्क्रीन खराब हो जाए तो फिर गाड़ी चलाने में सबसे ज्यादा परेशानी (Windscreen Cleaning for Safe Driving) होती है। खासतौर पर रात के समय गाड़ी चलाई जाती है तो सामने की ओर से आने वाले वाहनों की लाइट फैलने लगती है और विजिबिलिटी काफी कम हो जाती है। ऐसा होने पर सुरक्षित तरीके से गाड़ी चलाने में परेशानी होती है और हादसा होने का खतरा भी बढ़ जाता है।

निसान कर रही मैग्नाइट एसयूवी के सीएनजी वर्जन को लॉन्च करने की तैयारी, जानें कब तक हो सकती है पेश

परिवहन विशेष न्यूज

जापान की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Nissan की ओर से भारतीय बाजार में एंट्री लेवल एसयूवी के तौर पर Nissan Magnite को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक निसान अपनी इस एसयूवी को CNG वर्जन के साथ लॉन्च करने की तैयारी कर रही है। इसे कब तक पेश किया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। जापानी वाहन निर्माता Nissan की ओर से भारतीय बाजार में Magnite एसयूवी को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। कंपनी की ओर से जल्द ही इस गाड़ी को CNG वर्जन के साथ लॉन्च (Nissan Magnite CNG) किया जा सकता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक निसान की ओर से कब तक सीएनजी तकनीक के साथ मैग्नाइट को लॉन्च किया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Nissan Magnite को मिलेगी CNG तकनीक

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक निसान की ओर से जल्द ही मैग्नाइट एसयूवी को सीएनजी तकनीक के साथ लाया (Magnite CNG launch) जा सकता है। कंपनी की ओर से अभी इस बारे में औपचारिक तौर पर कोई जानकारी नहीं दी गई है।

रेट्रोफिटमेंट विकल्प मिल सकता है

कंपनी की ओर से मैग्नाइट में सीएनजी को फैक्ट्री फिटेड विकल्प के साथ नहीं लाया जाएगा। इसकी जगह कंपनी रेट्रोफिटमेंट का विकल्प दे सकती है। इसी के साथ गाड़ी की वारंटी को भी उसी तरह से दिया जाएगा, जिस तरह से कंपनी अपनी पेट्रोल एसयूवी पर ऑफर करती है।

मौजूदा इंजन के साथ मिलेगी सीएनजी

रिपोर्ट्स के मुताबिक एसयूवी को सीएनजी के साथ लाया जाएगा, लेकिन इसके इंजन में किसी भी तरह का बदलाव नहीं किया जाएगा। मौजूदा एक लीटर नेचुरल एस्पिरेटिड इंजन के साथ ही सीएनजी को दिया जाएगा। इसके साथ एसयूवी में सिर्फ 5स्पीड मैनुअल ट्रांसमिशन को ही दिया जाएगा।

कब तक हो सकती है लॉन्च

निसान की ओर से औपचारिक तौर पर इसकी घोषणा होना बाकी है। लेकिन जानकारी के मुताबिक कंपनी की ओर से मैग्नाइट के सीएनजी वर्जन को मार्च के आखिर तक या अप्रैल के शुरू में लॉन्च किया जा सकता है।

कितनी होगी कीमत

Nissan Magnite एसयूवी को सिर्फ पेट्रोल इंजन के साथ लाया जाता है। इसके बेस वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 6.14 लाख रुपये से शुरू हो जाती है। इस इंजन के साथ सीएनजी को दिया जाता है तो उसकी कीमत में करीब 70 से 80 हजार रुपये तक की बढ़ोतरी हो सकती है। नेचुरल एस्पिरेटिड इंजन वाले एक से ज्यादा वेरिएंट्स में सीएनजी को दिया जा सकता है।

किनसे है मुकाबला

निसान की ओर से मैग्नाइट को सब फोर मीटर कॉम्पैक्ट एसयूवी सेगमेंट में लाया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Maruti Breeza, Hyundai Venue, Renault Kiger, Tata Punch, Kia Syros, Kia Sonet, Mahindra XUV 3XO जैसी एसयूवी के साथ होता है। इसके अलावा इसे कुछ प्रीमियम हैचबैक और कॉम्पैक्ट सेडान कारों से भी चुनौती मिलती है।

बच्चों में बढ़ता डिप्रेशन: क्या खराब पेरेंटिंग है जिम्मेदार?

विजय गर्ग

माता-पिता और बच्चों के बीच बढ़ती दूरी के कारण पारिवारिक संबंधों में दूरियां बढ़ रही हैं। पहले जहां संयुक्त परिवारों में बच्चों को दादा-दादी, चाचा- चाची से भी सीखने का अवसर मिलता था, वहीं आज एकल परिवारों में माता-पिता अपने करियर और निजी जीवन में इतने व्यस्त हो गए हैं कि बच्चों को पर्याप्त समय नहीं दे पाते। इस वजह से बच्चों में भावनात्मक अस्थिरता बढ़ रही है और वे सोशल मीडिया, दोस्तों, या अन्य बाहरी साधनों से अपना मानसिक सहारा खोजने लगते हैं, जो हमेशा सही दिशा में नहीं होता।

आज की युवा पीढ़ी एक अजीब सी मानसिक उलझन में फंसी हुई है। एक ओर वे अपने करियर को लेकर अत्यधिक चिंतित हैं, तो दूसरी ओर उनका झुकाव भौतिकतावादी जीवनशैली की ओर बढ़ता जा रहा है। माता-पिता और बच्चों के बीच की दूरी बढ़ रही है, जिसके चलते बच्चे सही मार्गदर्शन से वंचित रह जाते हैं। नैतिक मूल्यों में गिरावट, बड़ों का सम्मान न करना, नाइट कल्चर को अपनाना, व्यवहारिक ज्ञान की कमी ये सभी समस्याएं कहीं न कहीं हमारे पेरेंटिंग के ढांचे पर सवाल उठाती हैं। करियर की चिंता, पैसे का आकर्षण आज का युवा अपने भविष्य को लेकर असुरक्षित है। करियर बनाने की दौड़ में वे मानसिक महसूस करता दबाव में रहते हैं, और इसी तनाव के कारण वे अवसाद (डिप्रेशन) का शिकार हो रहे हैं। माता-पिता भी इस स्थिति को समझने के बजाय, बच्चों को केवल आर्थिक सहायता देकर अपनी जिम्मेदारी पूरी मान लेते हैं। हालांकि, पैसों की आपूर्ति से जीवन तो चल सकता है, परंतु सही मार्गदर्शन और भावनात्मक सहयोग न मिलने से बच्चे अकेलापन महसूस करने लगते हैं। बच्चों में व्यवहारिक ज्ञान की कमी स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। वे सामाजिक संबंधों को समझने में असमर्थ हो रहे हैं, आत्मकेंद्रित हो गए हैं, और केवल अपने फायदे को प्राथमिकता देने लगे हैं। इसका एक मुख्य कारण यह भी है कि माता-पिता स्वयं भी बच्चों के साथ कम समय बिताते हैं और उन्हें नैतिक मूल्यों की शिक्षा नहीं दे पाते। नतीजा यह होता है कि बच्चे बड़ों का सम्मान नहीं करते, अनुशासनहीन हो जाते हैं, और अपनी इच्छाओं को ही सर्वोपरि मानने लगते हैं। परिवार में बढ़ती दूरी

माता-पिता और बच्चों के बीच बढ़ती दूरी के कारण पारिवारिक संबंधों में दूरियां बढ़ रही हैं। पहले जहां संयुक्त परिवारों में बच्चों को दादा-दादी, चाचा- चाची से भी सीखने का अवसर मिलता था, वहीं आज एकल परिवारों में माता-पिता अपने करियर और निजी जीवन में इतने व्यस्त हो गए हैं कि बच्चों को पर्याप्त समय नहीं दे पाते। इस वजह से बच्चों में भावनात्मक अस्थिरता बढ़ रही है और वे सोशल मीडिया, दोस्तों, या अन्य बाहरी साधनों से अपना मानसिक सहारा खोजने लगते हैं, जो हमेशा सही दिशा में नहीं होता।

नाइट कल्चर का प्रभाव

आजकल नाइट कल्चर का प्रभाव बढ़ रहा है। देर रात तक बाहर रहना, अनावश्यक पार्टी करना, इंटरनेट और सोशल मीडिया पर ज्यादा

समय बिताना बच्चों की मानसिक और शारीरिक सेहत पर बुरा प्रभाव डाल रहा है। माता-पिता इस पर नियंत्रण नहीं कर पा रहे, क्योंकि वे या तो अधिक लिबरल बनना चाहते हैं या फिर अपनी व्यस्तता के कारण इस पर ध्यान नहीं देते। इससे बच्चों में अनुशासन की भावना कम होती जा रही है, जो अवसाद और तनाव को और बढ़ाने का काम कर रही है। अब यहां प्रश्न यह उठता है कि इन तमाम समस्याओं से निजात पाने के लिए क्या कर सकते हैं।

माता-पिता बच्चों संग समय बितायें

सिर्फ पैसों से ही बच्चों की जरूरतें पूरी नहीं होतीं, उन्हें माता-पिता का समय और प्यार भी चाहिए। उनके साथ नियमित रूप से बातचीत करें और उनकी समस्याओं को समझने की कोशिश करें।

सही मार्गदर्शन दें

करियर और पैसे की अहमियत समझाना जरूरी है, लेकिन इसके साथ-साथ नैतिकता और जीवन मूल्यों का ज्ञान देना भी आवश्यक है। व्यावहारिक शिक्षा दें

बच्चों को केवल किताबी ज्ञान ही नहीं, बल्कि व्यावहारिक ज्ञान भी दें। उन्हें सिखाएं कि कैसे दूसरों के साथ व्यवहार करना चाहिए और समाज में अच्छे संबंध कैसे बनाए रखें।

संस्कारों पर जोर दें

बड़ों का सम्मान करना, अनुशासन का पालन करना, और सही-गलत में अंतर समझना बच्चों को घर से ही सीखना चाहिए। नाइट कल्चर पर नियंत्रण रखें: बच्चों को अनुशासन में रखें और समय की पाबंदी सिखाएं। उन्हें समझाएं कि पर्याप्त नींद और दिनचर्या का सही पालन उनके मानसिक स्वास्थ्य के लिए जरूरी है। अगर सभी माता-पिता पैसे देने के साथ-साथ यह भी जिम्मेदारी अगर उठाएं तो भविष्य हमारा उज्ज्वल होगा।

समझने की बात यहां यह है कि बच्चों में बढ़ते अवसाद के लिए कई कारण जिम्मेदार हो सकते हैं, लेकिन खराब पेरेंटिंग इसमें एक प्रमुख भूमिका निभाती है। माता-पिता को केवल आर्थिक रूप से नहीं, बल्कि मानसिक और भावनात्मक रूप से भी बच्चों का समर्थन करना चाहिए। यदि आज की युवा पीढ़ी को सही मार्गदर्शन नहीं मिला, तो आने वाला भविष्य अंधकारमय हो सकता है। इसलिए, माता- पिता को अपने बच्चों के साथ मजबूत रिश्ता बनाना होगा, उन्हें नैतिक मूल्यों, आध्यात्मिक ज्ञान और व्यवहारिक ज्ञान से संपन्न करना होगा, ताकि वे मानसिक रूप से मजबूत और जीवन में सफल बन सकें।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब

सीखने में शहर से ज्यादा समय खर्च कर रहे गांव के लोग

विजय गर्ग

हाल ही में किए गए एक देशव्यापी सर्वे में यह बात सामने आई है कि सीखने में शहर से ज्यादा समय गांव के लोग खर्च कर रहे हैं। वर्ष 2024 में शहरी क्षेत्रों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों ने सीखने की गतिविधियों अर्थात समय के उपयोग में अपना ज्यादा समय व्यतीत किया।

अपनी विभिन्न दैनिक गतिविधियों के लिए लोग अपना समय कैसे आवंटित करते हैं- इसी विषय पर आधारित सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय की ओर से आयोजित सर्वेक्षण में मंत्रालय ने सीखने की गतिविधि को औपचारिक शिक्षा पर बिताए गए समय के रूप में परिभाषित किया है। इसमें स्कूल/विश्वविद्यालय में उपस्थिति, पाठ्येतर गतिविधियां, होमवर्क और अन्य चीजें शामिल हैं। इसमें सीखने से संबंधित यात्रा का समय भी शामिल है।

मंत्रालय की ओर से पहला टाइम यूज सर्वे (टीयूएस) जनवरी और दिसंबर, 2019 के दौरान किया गया था, जबकि दूसरा सर्वेक्षण जनवरी - दिसंबर 2024 के बीच आयोजित किया गया। इसमें छह वर्ष और उससे अधिक उम्र वाले लोगों के लिए समय के उपयोग की जानकारी एकत्र की गई थी। दूसरे संस्करण के सर्वे से पता चला है कि पिछले पांच वर्षों में महिलाओं ने पुरुषों के साथ सीखने की गतिविधियों पर बिताए जाने वाले समय के अंतर को कम कर दिया है। महिलाओं ने सीखने में जहां 84 मिनट का समय व्यतीत किया, वहीं पुरुषों द्वारा बिताया गया समय पिछले पांच वर्षों में 102 मिनट से घटकर 94 मिनट रह गया।

यहां उल्लेखनीय बात यह है कि 2019 की तुलना में 2024 में शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में सीखने की गतिविधि पर बिताया गया समय कम हो गया।

सर्वे रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि वर्ष 2024 में शहरी क्षेत्रों में लोगों ने सीखने पर प्रतिदिन 87 मिनट खर्च किए, जबकि 2019 में उन्होंने 95 मिनट खर्च किए थे। इसी तरह, वर्ष 2024 में ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों ने सीखने पर रोजाना औसतन 90 मिनट खर्च किए, जबकि 2019 में यह आंकड़ा 92 मिनट था।

फणीश्वरनाथ रेणु: साहित्य की वह मशाल, जो आज भी जल रही है

फणीश्वरनाथ रेणु की लेखनी हिंदी साहित्य में एक ऐसी मशाल है, जो ग्रामीण भारत के अंधेरे कोने में प्रकाश फैलाती है। उनकी जयंती का अवसर केवल उनकी स्मृति को नमन करने का नहीं, बल्कि उस अनमोल साहित्यिक विरासत को पुनर्जनन देने का है, जिसने समाज की नब्ज को छुआ और उसे शब्दों में ढाला। रेणु वह कालजयी साहित्यकार हैं, जिन्होंने गांव की मिट्टी से उठती आवाजों को, खेतों में बहते पसीने को और लोक जीवन की सादगी को अपनी रचनाओं में अमर कर दिया। उनकी कलम ने न केवल कहानियां लिखीं, बल्कि एक संपूर्ण युग को जीवित कर दिखाया। यह लेख उनकी जयंती पर उनके जीवन, साहित्य और उसकी महत्ता को एक सकारात्मक और प्रभावी नजरिए से देखने का प्रयास है।

फणीश्वरनाथ रेणु का जन्म 4 मार्च 1921 को बिहार के अररिया जिले के औराही हिंगना गांव में हुआ था। उनके पिता शीलनाथ मंडल स्वतंत्रता संग्राम के सिपाही थे, जिनसे रेणु को सामाजिक चेतना और संघर्ष की प्रेरणा मिली। उनकी शिक्षा पटना और काठमांडू में हुई, लेकिन उनकी आत्मा हमेशा गांव की चौपालों, खेतों और नदियों के किनारे बसती रही। स्वतंत्रता आंदोलन और किसान आंदोलन में उनकी सक्रियता ने उनके साहित्य को एक ठोस धरातल दिया। रेणु ने अपने अनुभवों को शब्दों में पिरोया और ग्रामीण जीवन की सच्चाई को बिना किसी लाग-लपेट के सामने रखा।

रेणु का साहित्य ग्रामीण भारत का एक जीवंत दस्तावेज है। उनकी सबसे चर्चित कृति मैला आंचल हिंदी साहित्य में क्षेत्रीय उपन्यास की नींव रखने वाली रचना है। इस उपन्यास में बिहार के पूर्णिया क्षेत्र के मेरीगंज गांव की कहानी है, जहां सामाजिक कुरीतियां, गरीबी और मानवीय संवेदनाएं एक साथ सांस लेती हैं। रेणु ने इसमें ग्रामीण जीवन के हर रंग को समेटा—चाहे वह जातिगत भेदभाव हो, अंधविश्वास हो या प्रेम और करुणा की छोटी-छोटी कहानियां। उनकी अन्य रचनाएं जैसे परती परिकथा, ठुमरी, और कहानी संग्रह ठेस भी समाज के हाशिए पर खड़े लोगों की आवाज बनीं। इन रचनाओं में रेणु ने यह साबित किया कि साहित्य केवल अभिजात्य वर्ग का शगल नहीं, बल्कि आम जन की पीड़ा और आकांक्षाओं का माध्यम भी हो सकता है।

उनकी लेखन शैली की सबसे बड़ी विशेषता उनकी भाषा में लोक जीवन का समावेश है। रेणु ने हिंदी को मैथिली, भोजपुरी और अन्य बोलियों के रंगों से सजाया। उनकी रचनाओं में लोकगीत, मुहावरे और ग्रामीण परिवेश की बोलचाल इस तरह घुलमिल गए हैं कि पाठक कहानी को पढ़ते हुए उसे जीने लगता है। उदाहरण के लिए, मैला आंचल में डॉ. प्रशांत और कमली का प्रेम ग्रामीण परिवेश में एक नई संवेदना का प्रतीक बनता है, जो पाठक के मन को गहरे तक प्रभावित करता है। उनकी यह शैली हिंदी साहित्य को एक नया आयाम देती है, जो उसे परंपरागत ढांचे से बाहर निकालकर जन-जन तक पहुंचाती है।

रेणु के साहित्य की महत्ता केवल इसकी सौंदर्यात्मकता में नहीं, बल्कि इसके सामाजिक संदेश में भी निहित है। उन्होंने अपनी रचनाओं में समाज के ज्वलंत मुद्दों—जातिवाद, शोषण, शिक्षा की कमी और गरीबी—को उजागर किया। उनकी कहानियां समाज को बदलने का आह्वान करती हैं। वे यह मानते थे कि साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज में जागरूकता लाना भी है। उनकी रचना तीसरी कसम (मारे गए गुलफाम) इसका जीवंत उदाहरण है, जिसने साहित्य और सिनेमा दोनों में अपनी अमिट छाप छोड़ी। यह कहानी एक नर्तकी और बैलगाड़ी चालक के बीच के प्रेम को दर्शाती है, जो सादगी और गहराई का अनुपम संगम है।

रेणु का साहित्य आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना अपने समय में था। ग्रामीण भारत आज भी उन समस्याओं से जूझ रहा है, जिन्हें रेणु ने अपनी रचनाओं में उठाया था। उनकी लेखनी हमें अपनी जड़ों से जुड़े रहने और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझने की प्रेरणा देती है। वे नई पीढ़ी को यह सिखाते हैं कि साहित्य के जरिए समाज की कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया जा सकता है। उनका मानना था कि लेखक का दायित्व केवल लिखना नहीं, बल्कि समाज को दिशा देना भी है।

रेणु की जयंती पर हमें उनके साहित्य को फिर से पढ़ने और उससे प्रेरणा लेने की जरूरत है। उनकी रचनाएं हमें यह याद दिलाती हैं कि सच्चा साहित्य वही है, जो समाज के दुख-दर्द को अपनी आवाज दे और उसे बेहतर बनाने की दिशा में कदम बढ़ाए। रेणु ने अपने साहित्य से यह साबित किया कि शब्दों में वह ताकत होती है, जो दिलों को छू सकती है और समाज को बदल सकती है। उनकी यह विरासत हमें गर्व करने और उसका अनुसरण करने के लिए प्रेरित करती है। उनकी जयंती पर यह संकल्प लेना चाहिए कि हम उनके विचारों को जीवित रखेंगे और उनके साहित्य की रोशनी को आगे बढ़ाएंगे।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

तपती धरती बढ़ती परेशानियां

विजय गर्ग

हमारे सौरमंडल में पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है, जहां जीवन के लिए सभी अनुकूल परिस्थितियां मौजूद हैं। पृथ्वी पर तापमान की अनुकूलता, वायु और जल की उपलब्धता तथा जीवन के लिए जरूरी पोषक तत्त्वों की मौजूदगी हमारे जीवन सुखद बनाया है। इन वजहों से पृथ्वी पर मानव जीवन की हर तरह की गतिविधि संभव हुई है। वर्ष 1800 के आसपास वैज्ञानिकों को लगने लगा कि जीवाश्म ईंधन को ऊर्जा स्रोत रूप में इस्तेमाल करने की वजह से जलवायु में परिवर्तन हो रहा है। सत्रहवीं सदी के शुरू में यूरोप में वाष्प इंजन के आविष्कार बाद औद्योगी की गति तेज हुई।। मशीनों के बूते बड़े पैमाने पर उत्पाद लगा। इन उत्पादों की खपत खपत और और कच्चे माल की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए पूरी दुनिया में नए बाजार की तलाश शुरू हुई। कारखानों में ऊर्जा की जरूरतों को पूरा करने के लिए बड़े पैमाने पर जीवाश्म ईंधन और खनिज पदार्थों का प्रयोग किया जाने लगा। पर्यावरण नुकसान की कीमत पर प्रकृति का बेरहमी से शोषण उस वक्त से शुरू हुआ संयुक्त राष्ट्र ने भी इस बात की पुष्टि की है कि जीवाश्म ईंधन के प्रयोग से निकलने वाली गैसों से पृथ्वी के तापमान वृद्धि हो रही है।

1970 के दशक में वैज्ञानिकों ने पर्याप्त साक्ष्यों आधार पर बताया वैश्विक की वजह से पृथ्वी की सतह का तापमान लगातार बढ़ रहा है। वैज्ञानिक दृष्टि से वैश्विक ताप का अर्थ है ग्रीन हाउस गैसों के बढ़ते स्तर के कारण पृथ्वी की सतह तापमान में वृद्धि, जबकि जलवायु परिवर्तन का अर्थ पृथ्वी की जलवायु में होने वाला दीर्घकालिक रसायनशास्त्री जेम्स लवलाक सूक्ष्मजीव विज्ञानी लिन और परिवर्तन से है।। वर्ष 1972 में ब्रिटिश रसायन होने वाल मार्गुलिस ने 'गया परिकल्पनाए प्रस्तुत किया। 'या' एक ग्रीक देवी का नाम है। इस परिकल्पना का नाम जेम्स लवलाक ने उपन्यासकार और नोबेल विजेता विलियम गोल्डिंग के सुझाव पर रखा था। इस परिकल्पना जीवंत प्रणाली है।। इसमें जैवि पुरस्कार बताया गया कि पृथ्वी एक और अजैविक दोनों घटक शामिल हैं। वर्ष 2000 में जेम्स लवला ने कार्बन

डाइआक्साइड की अधिक मात्रा में मौजूदगी को पर्यावरण के लिए हानिकारक बताया था। आज वायुमंडल में 52 फीसद कार्बन डाइआक्साइड की मात्रा बढ़ गई है। पृथ्वी की सतह का तापमान 2.5 फारेनहाइट तक बढ़ चुका है। रसायन वैज्ञानिक वालेस ब्रोकर का कहना है कि वैश्विक तापमान में वृद्धि या जलवायु परिवर्तन की अनुक्रम में वर्षा वार्मिंग तुलना और समुद्र के स्तर स्तर में होने वाले परिवर्तन का मानव जीवन गहरा प्रभाव पड़ने की संभावना है। नासा के वैज्ञानिक 'ग्लोबल 'पर हर महीने रपट जारी करते हैं। पिछले वर्ष की रपट में नासा के वैज्ञानिकों ने अप्रैल 2024 को सबसे गर्म महीने के रूप में दर्ज किया था। इसके पहले वर्ष 2023 में उन्होंने बताया कि बीसवीं सदी के औसत तापमान की तुलना में 1.18 डिग्री सेल्सियस ज्यादा तापमान की वृद्धि हुई है। वैज्ञानिकों यह भी अनुमान लगाया है कि 2035 तक वैश्विक तापमान में 0.3 से 0.7 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हो सकती है।

इन तथ्यों के आलोक में यह बात स्पष्ट है कि आने वाला हर अगला वर्ष अब कितना चुनौतीपूर्ण होगा। भारत में भी ऋतु चक्र में बदलाव की वजह से कहीं अति वृष्टि और कहीं अनावृष्टि जैसी स्थितियां पैदा हो रही हैं। आने वाला हर साल पिछले साल की तुलना में बढ़ते तापमान की वजह से मानव जीवन के साथ-साथ जलचर, थलचर और नभचर के लिए भी मुश्किल होता जा रहा है। इस साल जनवरी में ठंड का अंतराल बहुत छोटा रहा। जनवरी के अंत और फरवरी की शुरुआत में, खासकर बसंत पंचमी के बाद, मौसम में अचानक ऐसा परिवर्तन आया कि बसंत ऋतु के आगमन का जैसे पता ही नहीं चला। ऐसा लग रहा है कि हम सीधे शरद ऋतु से ग्रीष्म ऋतु में प्रवेश कर गए हैं। बसंत ऋतु की मस्ती, उल्लास - आनंद और मादकता हमारे जीवन से जैसे गायब है।

पृथ्वी पर बढ़ते तापमान का खेती-किसानी पर भी व्यापक असर पड़ने की संभावना है। अक्तूबर के बाद और रबी की बुआई के समय आमतौर पर मौसम शुष्क रहा। सरकारी आंकड़े बता रहे हैं कि पिछले साल की तुलना इस साल गेहूं की बुआई के रकबे में 12 लाख हेक्टेयर और दलहनी फसलों की बुआई के रकबे में आठ लाख हेक्टेयर की वृद्धि हुई है। बढ़ तापमान की वजह इसे रबी की फसलों का उत्पादन प्रभावित हो सकता है। खासकर गेहूं की पैदावार पर बढ़ते तापमान व का असर होना स्वाभाविक है। जाहिर है कि भारत की खाद्यान्न सुरक्षा भी भारता भी इससे अवश्य प्रभावित होगी। युद्ध की वजह से दुनिया की खाद्यान्न आपूर्ति श्रृंखला पहले रूस-यूक्रेन डांवाडोल है। मगर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपने पहले शासकीय आदेश में पेरिस समझौते की शर्तें मानने से कर दिया रात मानने से इनकार

पेरिस समझौता हर देश हर देश के लिए एक निश्चित समय सीमा के तहत वैधानिक जिम्मेदारी तय करता है। राष्ट्रपति ट्रंप खुद को ऐसी वैधानिक हदबंदी से परे मानते हैं। इससे वैश्विक स्तर पर जलवायु संकट का सामना करने के लिए हरित जलवायु कोष में वित्तीय संसाधन जुटाने के अभियान को धक्का लगेगा। यहां यह ध्यान रखना जरूरी है कि चीन के बाद कार्बन उत्सर्जन के मामले में अमेरिका दूसरे स्थान पर है। पर्यावरण की सेहत लगातार खराब हो रही है। ऐसे ज्वलंत मुद्दे पर अमेरिका की बेफिक्री समझ से परे है। हिंदी कवि जयशंकर प्रसाद की ये पंक्तियां दुनिया की तबाही से बेखबर ऐसे देश के नेतृत्व और व्यवहार को बयान करती है-' अपने में सब कुछ भर कैसे व्यक्ति विकास करेगा / यह एकांत स्वार्थ भीषण है अपना नाश करेगा।'

साठ के दशक के अर्थशास्त्री ईएफ शूमाकर का कहना है कि औद्योगिक उत्पादन करते समय उन साधनों का उपयोग करना चाहिए, जिनका नवीकरण और दोबारा उत्पादन किया जा सके। 'उपयोग करो और फेंक दो' के बजाय उसे दोबारा उपयोग किया जा सके। शूमाकर यह भी मानते हैं कि पेट्रोलियम पदार्थों, कोयला और लोहे पर आधारित क्षणभंगुर सभ्यता से निश्चित ही वह सभ्यता बेहतर होगी, जो प्रकृति से सामंजस्यपूर्ण रिश्ता कायम करते हुए यह समझ विकसित कर सके कि आत्मसंयम, स्वयं आरोपित सीमा बंधन और अपनी सीमाओं का ज्ञान जीवनरक्षक गुण हैं।। आर्थिक विकास एक सीमा तक ही लाभदायक है, जीवन में जटिलता का संचार एक सीमा तक ही संभव है। दक्षता और उत्पादकता के लिए प्रयास एक सीमा तक ही तक ही ठीक है। है। पुनः प्राप्त किए जा सकने वाले साधनों का उपयोग एक सीमा तक करना ही बुद्धिमानी है। इस संदर्भ में यह में यह सुझाव भी गार करने भी गौर करने लायक है कि परिवर्तन का सामना करने के लिए हमें अपनी जीवन शैली, जीवन दृष्टि और जीवन का ध्येय बदलना होगा। जलवायु परिवर्तन का सवाल आज एक विकट वैश्विक समस्या के रूप हमारे सामने खड़ा है। ऐसे समय में हमें महात्मा गांधी की यह चेतावनी याद आती है- एक समय आएगा जब अपनी जरूरतों को कई गुना बढ़ाने की अंधी दौड़ में लगे लोग, जब अपने किए को देखेंगे, तब कहेंगे कि अरे हमने यह क्या किया।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब

फिल्मों पर तरह-तरह की जिम्मेदारियां

विजय गर्ग

अभी तक यह जिम्मेदारी वेद-पुराणों और शास्त्रों पर थी कि वे सब कुछ बता देते थे। हर ज्ञान वहां था। बात चाहे विज्ञान की हो, गणित की हो, ज्योतिष की हो या फिर चाहे लोकाचार की ही क्यों न हो। हमें बता दिया जाता था कि सब कुछ हमारे शास्त्रों में है। सभ्यता और संस्कार तो वहां खैर भरे ही पड़े थे। फिर इतिहास बताने का जिम्मा भी उन्हीं पर डाल दिया गया। सब शास्त्रों में लिखा है। लेकिन इधर इतिहास बताने की जिम्मेदारी फिल्मों पर भी आ गयी है। पिछले कुछ दिनों से देशभक्ति का पाठ पढ़ाने की जिम्मेदारी भी उन्हीं पर है। वर्क लोड के लिहाज से कहा जा सकता है फिल्मों पर जिम्मेदारियां बहुत बढ़ गयी हैं। यह ठीक है कि व्हाट्सएप भी इस जिम्मेदारी को कुछ साझा करता है। कई लोग इसे व्हाट्सएप यूनिवर्सिटी कहते हैं। इस लिहाज

से तो फिल्मों को भी अब यूनिवर्सिटी का दर्जा मिल ही जाना चाहिए। एक जमाना था, जब फिल्मों पर इश्क-मोहब्बत का पाठ पढ़ाने का जिम्मा था। फिल्मी गाने तो खैर इश्क-मोहब्बत की कुंजियां ही थे। फिर फिल्में अपराध विज्ञान पढ़ाने लगीं। अपराधी कितनी तरह के हो सकते हैं-यह हमें फिल्मों ने ही बताया। लेकिन इधर फिल्मों पर इतिहास पढ़ाने का जिम्मा आ गया है। कुछ लोग इसे व्हाट्सएप की प्रतिद्वंद्विता में खड़ा किया उद्यम भी मान सकते हैं। वैसे इसे सहयोगी संस्थान मानना ज्यादा बेहतर होगा। वैसे ही जैसे बड़े उद्योगों की सब्सीडियां होती हैं। यूं इतिहास पर फिल्में पहले भी बनती थी और खूब बनती थी। बल्कि कहना चाहिए कि सबसे ज्यादा तो इतिहास से संबंधित फिल्में ही बनती थी। कहीं मुगलेआजम बन रही थी, तो कहीं ताजमहल बन रही थी, कहीं लाल किला बन रही थी, कहीं सिकंदर बन रही थी। कहीं आलमआरा बन रही थी, तो कहीं हलाकू बन रही थी। मतलब इतिहास को लेकर अनगिनत फिल्में बनीं। लेकिन किसी ने भी उन फिल्मों के इतिहास को इतिहास नहीं माना। कोई उन्हें प्यार-मोहब्बत की कहानी मान लेता था तो कोई उसे अच्छी किस्सागोई मान लेता था। कुल मिलाकर वे मनोरंजन का साधन ही बनी रहीं। इतिहास का विकल्प नहीं बनी। लेकिन इधर उन्हें इतिहास का विकल्प मान लिया गया है, बना दिया गया है। अब इतिहास को लेकर बनी फिल्मों को इतिहास के मामले में बिल्कुल शास्त्रों वाला दर्जा मिल रहा है। हालांकि यह दर्जा पहले व्हाट्सएप को मिल चुका है। जैसे पहले कहा जाता था कि सब कुछ शास्त्रों में लिखा है। वैसे ही अब इतिहास के बारे में कहा जा सकता है कि ऐसा इस या उस फिल्म ने दिखाया है। वैसे ही जैसे यह कहा जाता है कि ऐसा व्हाट्सएप में आया था।

भाविश अग्रवाल की ओला इलेक्ट्रिक फिर कर रही छंटनी, 1000 लोग होंगे बेरोजगार

परिवहन विशेष न्यूज

ओला इलेक्ट्रिक करीब 1000 कर्मचारियों की छंटनी करने जा रही है। कंपनी लागत घटाकर मुनाफे में सुधार करना चाहती है। यह छंटनी प्रोक्योरमेंट कस्टमर रिलेशन और चार्जिंग इन्फ्रास्ट्रक्चर विभागों में होगी। तीसरी तिमाही में कंपनी का घाटा ₹564 करोड़ पहुंच गया जबकि आय घटकर ₹1045 करोड़ रह गई। कंपनी अपने वेयरहाउस बंद कर 4000 रिटेल स्टोर्स के जरिए इन्वेंट्री मैनेजमेंट करेगी।

नई दिल्ली। अरबपति कारोबारी भाविश अग्रवाल के मालिकाना हक वाली ओला इलेक्ट्रिक मोबिलिटी (Ola Electric Mobility) करीब 1,000 कर्मचारियों की छंटनी करने जा रही है। पिछले साल भी कंपनी ने 500 कर्मचारियों को निकाला था। इस कॉस्ट कटिंग के साथ ओला इलेक्ट्रिक अपने घाटे को कम करना चाहती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, प्रोक्योरमेंट, फुलफिलमेंट, कस्टमर रिलेशन और चार्जिंग इन्फ्रास्ट्रक्चर जैसे विभागों में छंटनी का असर पड़ सकता है। इस खबर के बाद ओला इलेक्ट्रिक के शेयरों में गिरावट भी देखने को मिली। यह 3.40 फीसदी की गिरावट के साथ 54.90 रुपये पर बंद हुआ, जो इसका 52 वीक का लो-लेवल है। ओला इलेक्ट्रिक इस छंटनी पर सीधे टिप्पणी करने से बचते हुए कहा कि यह बदलाव ऑटोमेशन और फ्रंट-एंड ऑपरेशंस के रिस्ट्रक्चरिंग का नतीजा है। ओला इलेक्ट्रिक के प्रवक्ता ने कहा, "हमने अपने फ्रंट-एंड ऑपरेशंस को रिस्ट्रक्चर और ऑटोमेटेड किया है। इससे मार्जिन में सुधार, लागत में कटौती और ग्राहक अनुभव को बेहतर बनाने में मदद मिली है। इसमें गैर-जरूरी पदों को खत्म करके प्रोडक्टिविटी को बढ़ाया गया है।"

ओला इलेक्ट्रिक में छंटनी की वजह

पिछले पांच महीनों में यह दूसरी बार है जब कंपनी कर्मचारियों की छंटनी कर रही है। कंपनी EBITDA (Earnings Before Interest, Taxes, Depreciation, and Amortization) मार्जिन में लगभग 10 प्रतिशत की वृद्धि करने, इन्वेंट्री मैनेजमेंट को बेहतर बनाने और कस्टमर डिलीवरी को तेज करने की रणनीति पर काम कर रही है।

ओला इलेक्ट्रिक ने अपने देशभर के रीजनल वेयरहाउस को खत्म करने का फैसला लिया है। अब वह अपने 4,000 से अधिक रिटेल स्टोर्स के जरिए व्हीकल इन्वेंट्री, स्पेयर पार्ट्स और एक्सेसरीज को स्टोर करने और डिलीवरी का काम करेगी। इसके अलावा वाहन पंजीकरण (Vehicle Registration) प्रक्रिया को आसान बनाने के लिए एजेंसियों के साथ नए सिरे से करार किया गया है। इसका मकसद भी लागत को और कम करना है।

ओला इलेक्ट्रिक की वित्तीय स्थिति

31 दिसंबर 2024 को खत्म तीसरी तिमाही में कंपनी का समेकित शुद्ध घाटा (Net Loss) 564 करोड़ रुपये तक पहुंच गया। यह पिछले साल की इसी तिमाही के 376 करोड़ रुपये की तुलना में अधिक है। इसकी प्रमुख वजह बढ़ती प्रतिस्पर्धा और ग्राहकों से जुड़ी सर्विस समस्याओं को हल करने में आई एकमुश्त लागत रही।

कंपनी की कुल आय भी घटी है। तीसरी तिमाही में कंपनी की ऑपरेशनल इनकम 1,045 करोड़ रुपये रही, जो पिछले साल इसी अवधि में 1,296 करोड़ रुपये थी।

ग्राहकों की शिकायतों पर जांच

पिछले साल, सेंट्रल कंज्यूमर प्रोटेक्शन अथॉरिटी (CCPA) ने ओला इलेक्ट्रिक की इलेक्ट्रिक दोपहिया गाड़ियों और सर्विस से जुड़ी शिकायतों की गहन जांच का आदेश दिया था। कंपनी ने बताया कि उसे CCPA से कुल 10,644 शिकायतें मिली थीं, जिनमें से 99.1% शिकायतों को हल कर दिया गया है।

हालांकि, इस साल जनवरी में CCPA ने ओला इलेक्ट्रिक से अतिरिक्त दस्तावेज और जानकारी मांगी है, जिससे यह मामला अभी भी पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है।

सोना 200 रुपये बढ़कर 87900 रुपये प्रति 10 ग्राम पर पहुंचा, चांदी की कीमतों में भी उछाल

अखिल भारतीय सर्राफा संघ के अनुसार आभूषण विक्रेताओं और खुदरा विक्रेताओं की ताजा खरीदारी और रुपये में कमजोरी जारी रहने के बीच राष्ट्रीय राजधानी में सोमवार को सोने का भाव 200 रुपये बढ़कर 87,900 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गया।इसके अलावा चांदी की कीमत भी 100 रुपए बढ़कर 96,500 रुपए प्रति किलोग्राम हो गई।

अखिल भारतीय सर्राफा संघ के अनुसार आभूषण विक्रेताओं और खुदरा विक्रेताओं की ताजा खरीदारी और रुपये में कमजोरी जारी रहने के बीच राष्ट्रीय राजधानी में सोमवार को सोने का भाव 200 रुपये बढ़कर 87,900 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गया। शुक्रवार को 99.9 प्रतिशत शुद्धता वाली यह बहुमूल्य धातु 87,700 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुई थी। 99.5 प्रतिशत शुद्धता वाले सोने का भाव 200 रुपए बढ़कर 87,500 रुपए प्रति 10 ग्राम हो गया। पिछले कारोबारी सत्र में सोना 87,300 रुपए प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ था। इसके अलावा चांदी की कीमत भी 100 रुपए बढ़कर 96,500 रुपए प्रति किलोग्राम हो गई।

वायदा कारोबार में भी सोने की कीमतों में तेजी

एमसीएक्स पर वायदा कारोबार में अप्रैल डिलीवरी वाले सोने के अनुबंध की कीमत 698 रुपये बढ़कर 84,917 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गई। एलकेपी सिक्योरिटीज के वाइस प्रेसिडेंट रिसर्च एनालिस्ट - कमोडिटी एंड करेंसी, जतीन त्रिवेदी, ने कहा, "पिछले सप्ताह 1.60 प्रतिशत मुनाफावसूली के बाद सोने में तेजी बनी हुई है। यह ताजा तेजी ऐसे समय में आई है, जब वैश्विक अनिश्चितता बनी हुई है, साथ ही अमेरिका और यूक्रेन के नेताओं के बीच सौदे की बातचीत को लेकर तनाव भी बना हुआ है।"

डॉलर में उतार-चढ़ाव के कारण सोने में निवेश को सुरक्षित माना जा रहा

त्रिवेदी के अनुसार, मौजूदा टैरिफ चिंताओं और डॉलर में उतार-चढ़ाव के कारण सोने में निवेश को अब भी सुरक्षित मान रहे हैं। हालांकि, रूस-यूक्रेन संबंधों या वैश्विक व्यापार टैरिफ में कोई भी सकारात्मक विकास कीमतों पर दबाव डाल सकता है। इसके अलावा, मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर मई अनुबंध के लिए चांदी वायदा कीमत 1,193 रुपये या 1.26 प्रतिशत बढ़कर 95,521 रुपये प्रति किलोग्राम हो गई।

भारत में घटा विदेशी निवेश, किस बात से डर रहे ग्लोबल इन्वेस्टर?

परिवहन विशेष न्यूज

भारत में अक्टूबर-दिसंबर 2024 में FDI 5.6% घटकर $10.9 अरब रहा लेकिन अप्रैल-दिसंबर 2024 में 27% बढ़कर $40.67 अरब हो गया। सिंगापुर और अमेरिका से निवेश बढ़ा जबकि मॉरीशस जापान और ब्रिटेन से घटा। सर्विस सेक्टर कंप्यूटर टेलीकॉम और रिन्यूएबल एनर्जी को ज्यादा निवेश मिला। महाराष्ट्र गुजरात और कर्नाटक शीर्ष राज्यों में रहे। कुल मिलाकर भारत में विदेशी निवेशकों की दिलचस्पी बनी हुई है।

नई दिल्ली। भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) अक्टूबर-दिसंबर 2024 की तिमाही में 5.6 फीसदी घटकर 10.9 अरब डॉलर रह गया। इसकी मुख्य वजह वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताएं मानी जा रही हैं। पिछले साल की इसी तिमाही में यह निवेश 11.55 अरब डॉलर था।

हालांकि, पूरे वित्त वर्ष 2024-25 (अप्रैल-दिसंबर) के दौरान एफडीआई प्रवाह 27% बढ़कर 40.67 अरब डॉलर हो गया, जो पिछले साल की इसी अवधि में 32 अरब डॉलर था। कुल एफडीआई (जिसमें इक्विटी निवेश, पुनर्निवेशित आय और अन्य पूंजी शामिल हैं) भी 21.3% बढ़कर 62.48 अरब डॉलर पहुंच गया।

किन देशों से आया ज्यादा निवेश?

अप्रैल-दिसंबर 2024-25 के दौरान कुल विदेशी निवेश में 27% की बढ़ोतरी दर्ज की गई, जो 40.67 अरब डॉलर तक पहुंच गया। इस दौरान सिंगापुर, अमेरिका, नीदरलैंड और यूएई जैसे देशों से निवेश बढ़ा, लेकिन मॉरीशस, जापान, यूके और जर्मनी से निवेश में गिरावट देखने को मिली। प्रमुख क्षेत्रों की बात करें तो सेवाएं, कंप्यूटर सॉफ्टवेयर, टेलीकॉम, ऑटोमोबाइल और केमिकल सेक्टर में निवेश बढ़ा है।

सिंगापुरः 12 अरब डॉलर (पिछले साल 7.44 अरब डॉलर)

अमेरिकाः 3.73 अरब डॉलर (पिछले साल 2.83 अरब डॉलर)

नीदरलैंड्स, यूएई, साइप्रस और सायमन आइलैंड्स से भी निवेश बढ़ा।

मॉरीशस, जापान, ब्रिटेन और जर्मनी से आने वाला निवेश घट गया।

किन सेक्टर्स में निवेश बढ़ा?

सेवा क्षेत्र (सर्विस सेक्टर): 7.22 अरब डॉलर (पिछले साल 5.18 अरब डॉलर)

कंप्यूटर सॉफ्टवेयर, हार्डवेयर, ट्रेडिंग, टेलीकॉम, ऑटोमोबाइल और केमिकल सेक्टर

नवीकरणीय ऊर्जा (रिन्यूएबल एनर्जी): 3.5 अरब डॉलर का निवेश मिला।

किन राज्यों को सबसे ज्यादा निवेश?

महाराष्ट्र एफडीआई आकर्षित करने में सबसे आगे रहा, जहां 16.65 अरब डॉलर का निवेश आया। इसके बाद गुजरात (5.56 अरब डॉलर) और कर्नाटक (4.5 अरब डॉलर) का स्थान रहा।

निवेश घटने की क्या वजह रही?

विशेषज्ञों का मानना है कि वैश्विक मंदी की आशंकाओं, अमेरिकी बॉन्ड यील्ड में बढ़ोतरी और कुछ देशों की सख्त नीतियों के कारण भारत में एफडीआई प्रवाह पर असर पड़ा है। हालांकि, सरकार की ओर से निवेशकों को आकर्षित करने के लिए लगातार नीतिगत सुधार किए जा रहे हैं, जिससे आने वाले महीनों में स्थिति में सुधार हो सकता है।

क्या कहते हैं ये आंकड़े?

हालांकि इस तिमाही में एफडीआई थोड़ा घटा है, लेकिन कुल मिलाकर निवेश बढ़ रहा है। भारत में विदेशी निवेशकों की दिलचस्पी बनी हुई है, खासकर टेक और सेवा क्षेत्रों में। लेकिन कुछ देशों से निवेश में गिरावट चिंता का विषय हो सकती है। आने वाले महीनों में सरकार की नीतियां और वैश्विक परिस्थितियां इसमें बड़ा बदलाव ला सकती हैं।

फरवरी में महिंद्रा और मारुति की बढ़ी ब्रिकी, टाटा, किआ का कुछ ऐसा रहा हाल

घरेलू बाजार में महिंद्रा के यूटिलिटी वाहनों की बिक्री 19 प्रतिशत बढ़कर 50420 इकाई रही है। इसी तरह निर्यात 99 प्रतिशत बढ़कर 3061 इकाई रही है। पिछले साल फरवरी में कंपनी ने 1539 वाहनों का निर्यात किया था। मारुति सुजुकी ने पिछले महीने 199400 वाहनों की बिक्री की है। इसमें पिछले वर्ष फरवरी के 197471 वाहनों के मुकाबले मामूली वृद्धि रही है।

नई दिल्ली। इस वर्ष फरवरी में मंहिद्रा एंड महिंद्रा और मारुति सुजुकी की वाहन बिक्री में बढ़ोतरी रही है। महिंद्रा ने शनिवार को बताया कि पिछले महीने उसकी वाहन बिक्री 15 प्रतिशत बढ़कर 83,702 इकाई रही है। फरवरी 2024 में कंपनी ने 72,923 वाहनों की बिक्री की थी।

घरेलू बाजार में कंपनी के यूटिलिटी वाहनों की बिक्री 19 प्रतिशत बढ़कर 50,420 इकाई रही है। इसी तरह निर्यात 99 प्रतिशत बढ़कर 3,061 इकाई रही है। पिछले वर्ष फरवरी में कंपनी ने 1,539 वाहनों का निर्यात किया था। मारुति सुजुकी ने पिछले महीने 1,99,400 वाहनों की बिक्री की है। इसमें पिछले वर्ष फरवरी के 1,97,471 वाहनों के मुकाबले मामूली वृद्धि रही है।

कंपनी ने शनिवार को बताया कि इस वर्ष फरवरी में घरेलू बाजार में यात्री वाहन बिक्री 1,60,791 इकाई रही है। पिछले महीने आल्टो और एसप्रेसो जैसी छोटी कारों की बिक्री घटकर 10,226 इकाई रही है, जो पिछले वर्ष समान अवधि में 14,782 इकाई थी।

हालांकि, कांपेक्ट कारों की बिक्री मामूली बढ़कर 72,942 इकाई रही है जो पिछले वर्ष फरवरी में 71,627 इकाई थी।

अन्य कंपनियों की स्थिति

टाटा मोटर्स की कुल बिक्री आठ प्रतिशत घटकर 78,344 इकाई रही है।

किआ इंडिया ने पिछले महीने 25,026 वाहनों की बिक्री की।

टोयोटा किर्लोस्कर मोटर की बिक्री 13 प्रतिशत बढ़कर 28,414 वाहन रही।

हुंडई मोटर इंडिया ने 58,727 वाहन बेचे और इसमें तीन प्रतिशत की कमी रही।

जेएसडब्ल्यू एमजी मोटर इंडिया की बिक्री 16.3 प्रतिशत बढ़कर 4,956 इकाई रही।

गिरावट वाले बाजार में भी उछला ये कॉफी स्टॉक, 20 फीसदी का लगा अपर सर्किट

परिवहन विशेष न्यूज

कैफे कॉफी डे (Coffee Day Enterprises) के शेयरों में 20% का अपर सर्किट लगा क्योंकि NCLAT ने कंपनी के खिलाफ दिवाला प्रक्रिया रद्द कर दी। पहले NCLT ने ₹228.45 करोड़ के कर्ज में डिफॉल्ट के कारण दिवाला प्रक्रिया शुरू की थी। कंपनी के खिलाफ केस सुप्रीम कोर्ट तक गया लेकिन अब उसे राहत मिली है। बाजार ने इस खबर को सकारात्मक रूप में लिया जिससे शेयरों में जबरदस्त तेजी आई।

नई दिल्ली। कैफे कॉफी डे (CCD) की मालिक कंपनी Coffee Day Enterprises (CDEL) के शेयरों में सोमवार को जबरदस्त उछाल देखने को मिला। नेशनल कंपनी लॉ अपीलेट ट्राइब्यूनल (NCLAT) ने कंपनी के खिलाफ चल रही दिवाला प्रक्रिया (Insolvency Proceedings) को रद्द करने का फैसला दिया है। इसके बाद कंपनी के शेयरों में 20 फीसदी का अपर सर्किट लगा है।

BSE और NSE पर कंपनी के शेयर 19.97% उछलकर क्रमशः ₹25.65 और ₹25.53 पर पहुंच गए। यह Coffee Day Enterprises के शेयरों का 52 हफ्तों का उच्चतम स्तर है। इससे पहले लगातार चार सत्रों तक CDEL के शेयर 5% लोअर सर्किट में फंसे हुए थे।

बाजार में गिरावट के बीच CDEL में तेजी

जहां एक तरफ संवेदी सूचकांक (Sensex) और निफ्टी (Nifty) लाल निशान में कारोबार कर रहे थे, वहीं Coffee Day Enterprises ने इस नकारात्मक बाजार के बीच शानदार प्रदर्शन किया। BSE सेंसेक्स 360.20 अंक गिरकर 72,837.90 पर पहुंच गया। NSE निफ्टी 103.05 अंक फिसलकर 22,021.65 पर कारोबार कर रहा था।

कंपनी की कैसे बदली तकदीर?

गुरुवार को NCLAT की चेन्नई पीठ ने बेंगलुरु NCLT के उस आदेश को रद्द कर दिया, जिसके तहत CDEL के खिलाफ दिवाला प्रक्रिया शुरू की गई थी। हालांकि, इस फैसले का विस्तृत आदेश आना अभी बाकी है।

कंपनी पर कर्ज और कानूनी लड़ाई

CDEL कैफे कॉफी डे चेन की पैरेंट कंपनी है। यह पिछले कुछ साल से गंभीर वित्तीय संकट का सामना कर रही है। कंपनी ने रिजॉर्ट्स, कंसल्टेंसी सर्विसेज और कॉफी बीन्स के व्यापार में भी हाथ आजमाया है। लेकिन फाउंडर वीजी सिद्धार्थ की जुलाई 2019 में दुखद मौत के बाद कंपनी की वित्तीय स्थिति और खराब हो गई।

कर्ज और अदालत का खेल

अगस्त 2023 में, बेंगलुरु NCLT ने IDBI ट्रस्टीशिप सर्विसेज लिमिटेड (IDBITSL) द्वारा दायर याचिका को स्वीकार किया था। IDBITSL ने ₹228.45 करोड़ के कर्ज में डिफॉल्ट का दावा किया था। इसके बाद NCLT ने एक अंतरिम समाधान पेशेवर (IRP) नियुक्त किया, जिसने कंपनी के संचालन को अपने हाथ में ले लिया। लेकिन CDEL के निलंबित बोर्ड ने NCLAT में इस फैसले को चुनौती दी, और 14 अगस्त 2024 को NCLAT ने दिवाला प्रक्रिया पर रोक लगा दी। IDBITSL ने NCLAT के इस आदेश को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी।

31 जनवरी 2025 को सुप्रीम कोर्ट ने आदेश दिया कि अगर NCLAT 21 फरवरी 2025 तक CDEL की अपील पर फैसला नहीं करता, तो NCLAT द्वारा दी गई स्टे ऑटोमैटिकली खत्म हो जाएगी। NCLAT ने सुनवाई तो पूरी कर ली, लेकिन सुप्रीम कोर्ट की तय समयसीमा में आदेश नहीं दे पाया। नतीजतन, दिवाला प्रक्रिया फिर से शुरू हो गई थी।

फरवरी में भारतीय स्टार्टअप्स को मिला फंडिंग का जबरदस्त बूस्ट, पर चिंता भी बढ़ी

फरवरी 2025 में भारतीय स्टार्टअप्स ने $1.65 बिलियन फंडिंग जुटाई जो जनवरी से 19.5% अधिक है लेकिन फरवरी 2024 से कम। बेंगलुरु और मुंबई सबसे बड़े फंडिंग हब रहे। Oxyzo ने $1 बिलियन जुटाकर सबसे बड़ी डील की। 16 कंपनियों के IPO लिस्ट हुए। हालांकि FY25 में अब तक $25.4 बिलियन की फंडिंग मिली लेकिन 2024 की तुलना में स्टार्टअप फंडिंग में गिरावट जारी है।

नई दिल्ली। भारत के स्टार्टअप इकोसिस्टम के लिए फरवरी 2025 मिलाजुला महीना साबित हुआ। इस दौरान भारतीय स्टार्टअप्स ने कुल $1.65 बिलियन (लगभग ₹14,418 करोड़) की फंडिंग जुटाई। हालांकि, यह आंकड़ा जनवरी 2025 की $1.38 बिलियन की तुलना में 19.5% ज्यादा है, लेकिन फरवरी 2024 के $2.06 बिलियन के मुकाबले गिरावट दर्ज की गई।

FY25 में अब तक जुटाए $25.4 बिलियन

Traxcn की रिपोर्ट के मुताबिक, फिस्कल ईयर 2025 (अप्रैल 2024 - फरवरी 2025) में भारतीय स्टार्टअप्स ने अब तक कुल $25.4 बिलियन की फंडिंग हासिल की, जो 2,200 से अधिक राउंड्स में फैली हुई है।

बेंगलुरु और मुंबई सबसे आगे

देश की स्टार्टअप कैपिटल बेंगलुरु ने फरवरी में $353 मिलियन की फंडिंग हासिल की, जहां औसतन एक राउंड का साइज $2 मिलियन रहा। वहीं, मुंबई के स्टार्टअप्स ने $102 मिलियन जुटाए, लेकिन यहां औसत राउंड साइज $5 मिलियन रहा, जो बेंगलुरु से काफी बड़ा था।

फरवरी में सबसे ज्यादा फंडिंग पाने वाले स्टार्टअप्स

Oxyzo (फिनटेक स्टार्टअप): इस महीने की सबसे बड़ी डील रही। Oxyzo ने $1 बिलियन का कन्वेंशनल डेट राउंड उठाया।

Udaan (B2B ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म): कंपनी ने Series G फंडिंग राउंड में $75 मिलियन जुटाए, जिसका अगुआई M&G Plc ने किया।

अन्य प्रमुख डील्सः SpotDraft, Cashfree Payments, Zeta, और Geniemode जैसे स्टार्टअप्स ने भी अच्छी फंडिंग हासिल की।

मीडिया राउंड साइज (औसत फंडिंग राशि): फरवरी 2025 में स्टार्टअप्स के लिए मीडिया राउंड साइज $1.92 मिलियन रहा।

अधिग्रहण और IPOs भी चर्चा में रहे

इस महीने कई बड़े अधिग्रहण देखने को मिले। Head Digital Works ने Adda52 की पेरेंट कंपनी Deltatech Gaming को ₹491 करोड़ में खरीदा। वहीं, SaaS फर्म Perfios ने फ्रॉड डिटेक्शन प्लेटफॉर्म Clari5 का अधिग्रहण किया। MO Alts (Motilal Oswal Alternate Investment Advisors) ने Megafine Pharma में मेजोरिटी स्टेक हासिल कर लिया, जिसकी कीमत ₹460 करोड़ बताई जा रही है।

IPO मार्केट में भी बड़ी हलचल

फरवरी 2025 में 16 नई कंपनियों के IPO लिस्ट हुए। इनका मीडिया मार्केट कैप $26.5 मिलियन रहा। कुछ बड़े IPOs में Hexaware, AJAX, Ken India, Dr. Agarwal's Eye Hospital, और Royal Arc शामिल रहे।

इन्वेस्टर्स और वेंचर कैपिटल फर्म्स की टॉप लिस्ट

फरवरी में जिन निवेशकों ने सबसे ज्यादा स्टार्टअप्स में पैसा लगाया, उनमें शामिल हैं:

शार्क टैंक फेमः रितेश अग्रवाल (OYO), अनुपम मित्तल (Shaadi.com), अमन गुप्ता (boAt), और Peyush Bansal (Lenskart)।

टॉप वेंचर कैपिटल फर्म्सः Blume Ventures, Eximius Ventures, Unicorn India Ventures, Peak XV, Accel, और Nexus Venture Partners।

2024 में स्टार्टअप फंडिंग में आई गिरावट

हालांकि 2024 में भारतीय स्टार्टअप्स ने $30.4 बिलियन जुटाए, लेकिन यह 2023 में हासिल किए गए $32.5 बिलियन से 6.5% कम रहा। यह गिरावट बताती है कि भले ही स्टार्टअप्स में निवेश जारी है, लेकिन पिछले साल की तुलना में यह थोड़ा धीमा पड़ गया है।

पच्चास साल बाद होने वाली परिसीमन को लेकर चिंताएं...

डॉ सत्यवान सौरभ

उचित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए अधिक आबादी वाले राज्यों के लिए अधिक सीटें जोड़ते हुए वर्तमान सीट अनुपात को बनाए रखना महत्त्वपूर्ण है। राज्यसभा के समान एक मॉडल प्रगतिशील राज्यों को नुक़सान पहुँचाए बिना एक संतुलित दृष्टिकोण प्रदान कर सकता है। सीटों का पुनर्वितरण करते समय, हमें आर्थिक योगदान, विकास मीट्रिक और शासन प्रभावशीलता को ध्यान में रखना चाहिए। सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को प्राप्त करने वाले राज्यों को विशेष राजनीतिक प्रतिनिधित्व दिया जा सकता है, जो अच्छे शासन को पुरस्कृत करता है। क्षेत्रीय संतुलन बनाए रखने और तेजी से बढ़ते राज्यों के प्रभुत्व को रोकने के लिए कानूनी उपाय किए जाने चाहिए। संसद के भीतर एक क्षेत्रीय परिषद की स्थापना से कम प्रतिनिधित्व वाले राज्यों के हितों की वकालत करने में मदद मिल सकती है।

2031 की जनगणना के बाद एक क्रमिक दृष्टिकोण हितधारकों के साथ चर्चा और एक सहज संक्रमण की अनुमति देगा। किसी भी परिसीमन से पहले, एक राष्ट्रीय आयोग को संभावित प्रभावों का आकलन करना चाहिए और आवश्यक सुरक्षा उपाय सुझाने चाहिए। राज्य सरकारों के लिए स्थापित चैनलों के माध्यम से परिसीमन वार्ता में सक्रिय रूप से भाग लेना महत्त्वपूर्ण है। सहकारी संघवाद को प्रोत्साहित करने के लिए किसी भी सीट पुनर्वितरण को अंतिम रूप देने से पहले अंतर-राज्य परिषद के साथ अनिवार्य परामर्श होना चाहिए। एक सुनियोजित परिसीमन प्रक्रिया जनसांख्यिकीय वास्तविकताओं को संघवाद की अखंडता से जोड़ सकती है। क्षेत्रीय असमानताओं से बचने के लिए, हमें दोहरे प्रतिनिधित्व मॉडल, भारित मतदान या राज्यसभा की शक्तियों को बढ़ाने जैसी नवीन रणनीतियों पर विचार करना चाहिए।

राजकोषीय संघवाद और संस्थागत ढांचे को मज़बूत करके, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि राजनीतिक निष्पक्षता जनसांख्यिकीय परिवर्तनों के साथ संरेखित हो, जिससे एक सुसंगत और एकजुट भारत को बढ़ावा मिले। लोकसभा सीटों की संख्या बढ़ाने से नागरिकों को बेहतर प्रतिनिधित्व मिलेगा, जिससे निर्वाचन क्षेत्रों का आकार छोटा होगा और शासन में सुधार होगा। संसदीय सीटों को 543 से बढ़ाकर 800 से अधिक करने से संसद सदस्य मतदाताओं की ज़रूरतों को अधिक प्रभावी ढंग से सम्बोधित कर सकेंगे। निश्चित सीट आवंटन के कारण उत्तरी राज्यों को कम प्रतिनिधित्व का सामना करना पड़ा है और परिसीमन इन ऐतिहासिक असंतुलनों को सुधारने का एक मौका प्रदान करता है।

बिहार का प्रतिनिधित्व अभी भी 1971 के आँकड़ों पर आधारित है, बावजूद इसके कि इसकी जनसंख्या में काफ़ी वृद्धि हुई है। नवीनतम जनगणना आँकड़ों के अनुसार निर्वाचन क्षेत्रों को संशोधित करने से लोकतांत्रिक समानता को बढ़ावा मिलेगा और चुनावी प्रतिनिधित्व में जनसंख्या असमानताओं को रोका जा सकेगा। झारखंड, जिसे 2000 में बिहार से अलग कर दिया गया था, अभी भी पुरानी निर्वाचन संरचना का पालन कर रहा है, जो राजनीतिक स्पष्टता को कम करता है। अधिक आबादी वाले राज्यों से सांसदों की संख्या में वृद्धि विकास सम्बंधी असमानताओं की ओर ध्यान आकर्षित करेगी, जिससे यह सुनिश्चित होगा कि नीतिगत हस्तक्षेप अविकसित क्षेत्रों की ओर लक्षित हों। मध्य प्रदेश और राजस्थान जैसे राज्यों के लिए अधिक संख्या में सांसदों से बेहतर बुनियादी ढाँचा नियोजन और निवेश का बेहतर आवंटन हो सकता है।

प्रगतिशील राज्यों की घटती भूमिका संघवाद और निष्पक्ष राजनीतिक प्रतिनिधित्व को नुक़सान पहुँचाती है। प्रभावी शासन वाले दक्षिणी राज्यों का प्रभाव कम हो सकता है, जिससे ठोस नीति प्रबंधन के लिए प्रेरणा कम हो सकती है। केरल की उच्च साक्षरता दर से प्रेरित विकास पर्याप्त सीट आवंटन में तब्दील नहीं हो सकता है, जिससे अन्य राज्य समान रणनीति अपनाने से हतोत्साहित हो सकते हैं। अधिक आबादी वाले राज्यों के लिए अधिक प्रतिनिधित्व केंद्रीकृत नीति निर्माण की ओर रुझान को जन्म दे सकता है, जो क्षेत्रीय शासन स्वायत्तता को प्रतिबंधित कर सकता है। कृषि राज्यों के पक्ष में विधायी समायोजन औद्योगिक क्षेत्रों की ज़रूरतों की उपेक्षा कर सकते हैं, जिससे आर्थिक संतुलन बाधित हो सकता है। यह राजनीतिक पुनर्संरेखण वित्त आयोग द्वारा करों के आवंटन को प्रभावित कर सकता है, जो संभावित रूप से बड़ी आबादी वाले राज्यों के पक्ष में हो सकता है।

अपने महत्त्वपूर्ण आर्थिक इनपुट के बावजूद, तमिलनाडु और महाराष्ट्र कम प्रतिनिधित्व के कारण अपने राजकोषीय हितों की रक्षा करने के लिए संघर्ष कर सकते हैं। केवल जनसंख्या के आधार पर प्रतिनिधित्व में वृद्धि उत्तर और दक्षिण के बीच विभाजन को बढ़ा सकती है, जिससे क्षेत्रीय तनाव पैदा हो सकता है। तमिलनाडु में राजनीतिक दल परिसीमन के खिलाफ हैं, उन्हें डर है कि अधिक हिन्दी भाषी आबादी वाले राज्यों को सत्ता का नुक़सान होगा, जिससे राजनीतिक परिदृश्य और अधिक विखंडित हो सकता है। निष्पक्ष प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए अधिक आबादी वाले राज्यों के लिए अधिक सीटें जोड़ते हुए वर्तमान सीट अनुपात को बनाए रखना महत्त्वपूर्ण है। राज्यसभा जैसा मॉडल प्रगतिशील राज्यों को नुक़सान पहुँचाए बिना संतुलित दृष्टिकोण प्रदान कर सकता है।

सीटों का पुनर्वितरण करते समय, हमें आर्थिक योगदान, विकास मीट्रिक और शासन प्रभावशीलता को ध्यान में रखना चाहिए।

सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को प्राप्त करने वाले राज्यों को विशेष राजनीतिक प्रतिनिधित्व दिया जा सकता है, जो अच्छे शासन को पुरस्कृत करता है। क्षेत्रीय संतुलन बनाए रखने और तेजी से बढ़ते राज्यों के प्रभुत्व को रोकने के लिए कानूनी उपाय किए जाने चाहिए। संसद के भीतर एक क्षेत्रीय परिषद की स्थापना से कम प्रतिनिधित्व वाले राज्यों के हितों की वकालत करने में मदद मिल सकती है। 2031 की जनगणना के बाद एक क्रमिक दृष्टिकोण हितधारकों के साथ चर्चा और एक सहज संक्रमण की अनुमति देगा। किसी भी परिसीमन से पहले, एक राष्ट्रीय आयोग को संभावित प्रभावों का आकलन करना चाहिए और आवश्यक सुरक्षा उपाय सुझाने चाहिए। राज्य सरकारों के लिए स्थापित चैनलों के माध्यम से परिसीमन वार्ता में सक्रिय रूप से भाग लेना महत्त्वपूर्ण है। सहकारी संघवाद को प्रोत्साहित करने के लिए किसी भी सीट के पुनर्वितरण को अंतिम रूप देने से पहले अंतर-राज्य परिषद के साथ अनिवार्य परामर्श होना चाहिए।

एक सुनियोजित परिसीमन प्रक्रिया जनसांख्यिकीय वास्तविकताओं को संघवाद की अखंडता से जोड़ सकती है। क्षेत्रीय असमानताओं से बचने के लिए, हमें दोहरे प्रतिनिधित्व मॉडल, भारित मतदान या राज्यसभा की शक्तियों को बढ़ाने जैसी नवीन रणनीतियों पर विचार करना चाहिए। राजकोषीय संघवाद और संस्थागत ढांचे को मज़बूत करके, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि राजनीतिक निष्पक्षता जनसांख्यिकीय परिवर्तनों के साथ संरेखित हो, जिससे एक सुसंगत और एकजुट भारत को बढ़ावा मिले।

गुरव समाज कल्याण संघ की त्रैमासिक बैठक संपन्न, प्रतीक चिन्ह का किया विमोचन

समाज के वरिष्ठजनों का सम्मान करने एक विशेष आयोजन किया जाएगा,

परिवहन विशेष न्यूज

भोपाल। स्थानीय गुरव समाज के प्रादेशिक संगठन गुरव समाज कल्याण संघ की त्रैमासिक बैठक का आयोजन रविवार को सनावद में प्रदेश अध्यक्ष बलराम काले, सनावद अध्यक्ष जुगनू सवनेर की अध्यक्षता में संपन्न हुई। जिसमें मध्यप्रदेश के विभिन्न जिलों हरदा, खरगोन, सनावद, इंदौर, बड़वानी, टिमरनी, बड़वाह, सेंधवा, अन्य से गुरव समाज कल्याण संघ के 60 से अधिक सदस्य, पदाधिकारी शामिल हुए। बैठक में सर्वप्रथम महर्षि दधीचि के चित्र पर माल्यार्पण कर किया गया। तदपश्चात बैठक में उपस्थित सदस्यों ने अपना परिचय दिया।

तथा नवनियुक्त सदस्यों का स्वागत सम्मान किया गया। तथा तीन सदस्यों की नवनियुक्ति की गई। जिसमें उमेश चोलकर को प्रदेश प्रवक्ता और जयंत भद्रवाले को कार्यालय मंत्री, कार्यकारिणी प्रमुख मनीष निमाडे को नियुक्त किया गया। प्रिंट मीडिया प्रभारी हेमंत मोराने ने बताया कि बैठक दो सत्रों में गुरव समाज मांगलिक भवन राज मंदिर के पास सम्पन्न हुई। इस अवसर पर संघ के प्रतीक चिन्ह का विमोचन किया गया। त्रैमासिक बैठक में कल्याण संघ के वर्ष 2025 में आगामी आयोजित होने वाले कार्यकमों, आयोजनों की रूपरेखा पर चर्चा की गई और संघ के पूर्व के लंबित कार्यों पर निर्णय लिए गए। साथ ही आगामी माह में समाज के 60 वर्ष से ऊपर के वरिष्ठजनों जिन्होंने पूर्व में समाज के लिए अपना योगदान दिया था उन्हें एक विशेष बड़े आयोजन के माध्यम से सम्मानित करने का निर्णय लिया गया। बैठक में समाज में नशा मुक्ति अभियान चलाने, सामाजिक जनगणना, समाज जनों को शासन की योजनाओं के लाभ दिलवाया जाना, पंचायतों का रजिस्ट्रेशन करवाना, आर्थिक रूप से मजबूती प्रदान करना, नवीन पंचायतों का गठन करना जैसे मुद्दों पर चर्चा हुई। इस अवसर पर सनावद गुरव समाज महिला अध्यक्ष सदस्यों सहित उपस्थित थी। इंदौर गुरव समाज से महेश पांजरे, सुनील शर्मा, लिलेश भद्रवाले, दिनेश बड़ोदिया, आलोक पंजारे, गोपीकृष्ण सेवारिक शामिल रहे।

मार्च 1982 टाटा स्टील प्लेटिनम जुबली समारोह में इंदिरा गांधी थी मुख्य अतिथि

जे एन टाटा की जमशेदपुर में आयोजित जयंती पर विशेष

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

जमशेदपुर। 3 मार्च, इसे झारखंड का औधौगिक उत्सव कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी। झारखंड राज्य में टाटा समुह के जनक जमशेदजी टाटा की 186वां जयंती आज मन रही है आज। जी हां, झारखंड का यह वही शहर है जिसे कभी लार्ड चेम्सफोर्ड ने उनके सम्मान में साकची का नाम बदलकर जमशेदपुर रख दिया था। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने यहां जुबली पार्क का उद्घाटन किया था। पर इतिहास गवाह है धालभूम, मयूरभंज तथा सरायकेला के ओडिया राजाओं से जमीन, श्रमशक्ति एवं लौह अयस्क की खानों को लेकर गत सदी के आरंभ में अपना कारोबार का जाल बिछाया था यह कंपनी जब देश को आजादी नहीं मिली थी।

इतना ही नहीं आज से लगभग 42-43 वर्ष पूर्व।02 मार्च, 1982 को संस्थापक दिवस समारोह की पूर्व संध्या पर, जमशेदपुर शहर ने टाटा स्टील के प्लेटिनम जुबली वर्ष का स्वागत करने और तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी का स्वागत करने के लिए खुद को रोशनी और सजावट से सजाया, जो उत्सव में शामिल होने के लिए नई दिल्ली से आई थीं - एक उल्लेखनीय व्यक्ति और उनके द्वारा स्थापित उल्लेखनीय उद्योग के सम्मान में एक दुर्लभ इशारा। इंदिरा गांधी का स्वागत करते हुए, जेआरडी टाटा ने कहा, ₹हम उनके निमंत्रण पर उनकी विनम्र प्रतिक्रिया को इस बात की मान्यता के रूप में देखते हैं कि जमशेदपुर, टाटा स्टील, इसके श्रमिकों और इसके प्रबंधन के बारे में कुछ खास है₹। गोल्फ ग्राउंड में, एक सार्वजनिक बैठक के स्थल पर, इंदिरा गांधी ने कहा, "जमशेदपुर भारत के इतिहास में गौरवपूर्ण स्थान रखता है क्योंकि इसने देश में इस्पात निर्माण में अग्रणी भूमिका निभाई है। मैं यहां काम करने वाले लोगों को उनके अच्छे काम के लिए और साथ ही मित्रता और सौहार्द की भावना के लिए बधाई देती हूं जो मौजूद है और मतभेदों को शांतिपूर्ण तरीके से हल करने में मदद करती है।"

सनद रहे कि कि कभी तीन ओडिया देशी रियासत धालभूम, मयूरभंज तथा सरायकेला राजाओं से जमीन, श्रमिक शक्ति एवं एक रूपये लायल्टी पर लौह अयस्क खदान मयूरभंज राजा से लेकर इलाका का विकास महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का वायदा किया परन्तु कालान्तर में आजाद भारत में इलाका उपेक्षित रहा। कारण देशी रियासत खत्म हुआ सरायकेला षड्यंत्र के तहत बिहार में चला गया। इतना ही नहीं काली माटी जो सरायकेला स्टेट का सीमा पर था उस में बना रेल स्टेशन का नाम काली माटी से बदल कर टाटानगर कर दिया गया। साथ ही सरायकेला अन्तिम शासक महाराजा आदित्य प्रताप के नाम से सटा आदित्यपुर इलाका झारखंड का सबसे बड़ा औद्योगिक क्षेत्र है, पर अन्तिम शासक राजा का एक मूर्ति तक नहीं जिनके नाम से आदित्यपुर बना !! सनद रहे कि पूर्व प्रधानमंत्री श्री मती इंदिरा गांधी, राजीव गांधी इन इलाकों मे आजादी समय एवं बाद की घटनाओं को तथा उससे जूडे राजघरानों कुछ महत्वपूर्ण लोगों को व्यक्तिगत रूप से जानते थे।

प्रेम रावत ने जे.के. रोलिंग का बुक रिडिंग रिकॉर्ड में तोड़े सारे रिकॉर्ड

परिवहन विशेष न्यूज

मिर्जापुरः रविवार को अंतर्राष्ट्रीय लेखक प्रेम रावत और भारतीय लेखक विपुल रिखी ने एक साथ सबसे बड़े 'एक से अधिक लेखक पुस्तक वाचन' का नया गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया। मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश में राज विद्या केंद्र द्वारा आयोजित इस ऐतिहासिक कार्यक्रम में 1,33,234 लोगों की विशाल समूह को संबोधित किया। यह संख्या जे.के. रोलिंग और कनाडा के दो लेखकों द्वारा वर्ष 2000 में बनाए गए 20,264 लोगों के पिछले रिकॉर्ड से लगभग 1,13,000 अधिक है। प्रेम रावत, जो न्यूयॉर्क टाइम्स के बेस्टसेलिंग लेखक हैं और ₹स्वयं की आवाज ₹ जैसी चर्चित पुस्तक लिख चुके हैं, ने अपनी नई पुस्तक ₹श्वास : जीवन के प्रति जागरुक हों ₹ के अंश पढ़े। यह पुस्तक अंग्रेजी में पैन मैकमिलन और (हिंदी में हार्पर कॉलिन्स) इंडिया द्वारा प्रकाशित की गई है। उन्होंनें अपनी पुस्तक से पढ़ कर सुनाया किः ₹श्वास आपके अंदर आती है और आप जीवित रहते हैं। जो शक्ति पूरे ब्रह्मांड में व्याप्त है, वही श्वास के रूप में आपके अंदर आती है और आपको जीवन देती है। जो अविनाशी है, अनंत है उसको महसूस करें। और जब आप उससे जुड़ जाते हैं, उस पल यह श्वास अनंत हो जाती है। अंदर की ओर मुड़िए, इस श्वास को महसूस कीजिए। यही सबसे अविश्वसनीय चमत्कार है। जिस आनंद को आप खोज रहे हैं, वह बाहर नहीं, बल्कि आपके अंदर मौजूद है। इस आयोजन में विपुल रिखी ने भी अपनी पुस्तक (ड्रंक ऑन लव) : कबीर की रचनाओं की काव्यात्मक व्याख्या₹, के अंश पढ़े। यह पुस्तक भी हार्पर कॉलिन्स इंडिया द्वारा प्रकाशित की गई है। उन्होंने कबीर के इस दोहे का अनुवाद सुनाया। 'स्वांस स्वांस में नाम ले विरथा स्वांस मत खोये, ना जाने इस स्वांस का फिर आवन होये ना होये' हर साँस में उसके नाम को याद करो, एक भी साँस व्यर्थ न जाने दो। कौन जानता है कि अगला पल आएगा या नहीं, अगली साँस मिलेगी या नहीं। यह प्रेम रावत का तीसरा गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड है। इससे पहले, उन्होंने 2023 में दो रिकॉर्ड बनाए थे – 'एक लेखक पुस्तक वाचन' में सबसे बड़ी दर्शक संख्या, जिसमें 1,14,704 लोग शामिल हुए थे, और सबसे बड़े 'व्याख्यान (लेक्चर)' में भाग लेने वाली दर्शक संख्या, जिसमें 3,75,603 लोग उपस्थित थे। यह नया रिकॉर्ड उनकी प्रेरणादायक शांति और आशा के संदेश की विश्वविख्यात लोकप्रिय को दर्शाता है। जिससे भारत ओर दुनिया भर में लाखों लोग प्रभावित हो रहे है। इस ऐतिहासिक आयोजन की इतनी बड़ी शानदार प्रतिक्रिया देकर हम बेहद उत्साहित है। राज विद्या केंद्र और अंतरराष्ट्रीय संगठन ₹ वल्ड्र्स ऑफ पीस ग्लोबल के प्रवक्ता लोहित शर्मा ने कहा। यह कार्यक्रम दर्शाता है कि प्रेम रावत का संदेश लोंगो को शांति की ओर प्रेरित करने में कितना प्रभावशाली है जो आज की दुनिया के लिए बहुत जरूरी है। प्रेम रावत 1970 के दशक में एक बाल प्रतिभा और युवा आइकान के रूप में शुरूआत करने वाले और बाद में शांति दूत एवं नूयॉक टाइम्स के बेस्टसेलिंग लेखक व गिनीज वल्ड रिकॉर्ड धारक बने। उन्होंने लाखों लोगों को प्रेरणा स्पष्टता, और जीवन की गहरी समझ दी है। मात्र 4 वर्ष की उम्र में उनका पहला भाषण प्रकाशित हुआ था। प्रेम रावत अमेरिका में रहते है लेकिन वर्ष में 9 महीने अंतर्राष्ट्रीय यात्रा करते है, जहां वे लोगो को आतंरिक शांति का अनुभव करने की दिशा में प्रेरित करते है। प्रेम रावत न्यूयॉर्क टाइम्स के बेस्टसेलिंग लेखक है और उनकी चर्चित पुस्तक ₹ स्वय की आवाज₹ दुनिया भर में लोकप्रिय रही है। उनके व्याख्यानों पर आधारित ₹पीस एजुकेशन प्रोग्राम₹ को 87 देशों में दिखाया जा रहा है। उन्होंने दो गिनीज वल्ड रिकार्ड बनायें है सबसे बड़े ₹एक लेखक पुस्तक वाचन ₹ में 1,14,704 लोगो की उपस्थिति और सबसे बड़े व्याख्यान (लेक्चर) में 3, 75,603 लोगों की भागेदारी। उनकी नई पुस्तक ₹ श्वासः जीवन के प्रति जागरुक होंर₹ जो पैन मैकमिलन द्वारा अंग्रेजी में और हार्पर इंडिया द्वारा हिन्दी में प्रकाशित की गई है।हाल ही में रिकॉर्ड-ब्रेकिंग कार्यक्रम में पढ़ी गई है।

मयूरभंज में छऊ स्मारिका हेतु निकला आदेश पर सरायकेला में हवा-हवाई...

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

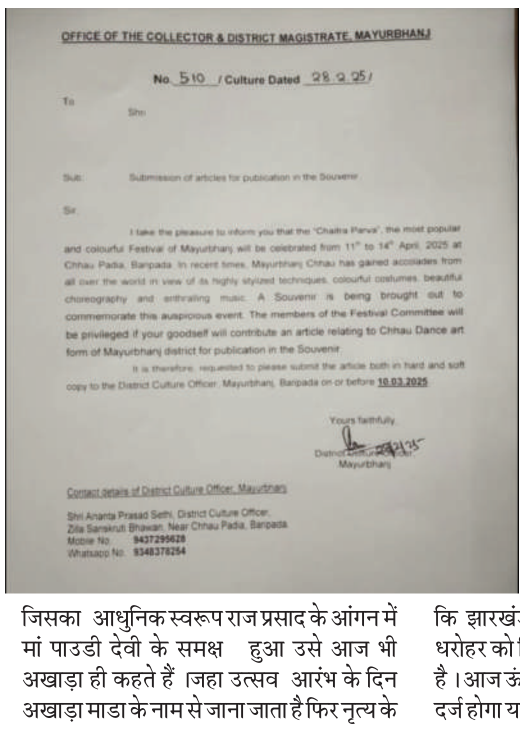

OFFICE OF THE COLLECTOR & DISTRICT MAGISTRATE, MAYURBHANJ

No. 510 / Culture Dated 28.2.25

To
Shri

Sub: Submission of articles for publication in the Souvenir

Sir,

I take the pleasure to inform you that the 'Chaitra Parva', the most popular and colourful Festival of Mayurbhanj will be celebrated from 11th to 14th April, 2025 at Chhau Padia, Baripada. In recent times, Mayurbhanj Chhau has gained accolades from all over the world in view of its highly stylized techniques, colourful costumes, beautiful choreography and enthralling music. A Souvenir is being brought out to commemorate this auspicious event. The members of the Festival Committee will be privileged if your goodself will contribute an article relating to Chhau Dance art form of Mayurbhanj district for publication in the Souvenir.

It is therefore, requested to please submit the article both in hard and soft copy to the District Culture Officer, Mayurbhanj, Baripada on or before 10.03.2025

Yours faithfully,
District Culture Officer,
Mayurbhanj

Contact details of District Culture Officer, Mayurbhanj
Shri Ananta Prasad Sethi, District Culture Officer,
Zilla Sanskruti Bhawan, Near Chhau Padia, Baripada
Mobile No. 9437295628
Whatsapp No. 9348378254

सरायकेला, आगामी अप्रैल मे सरायकेला, सिंहभूम एवं मयूरभंज में ऐतिहासिक विश्वप्रसिद्ध छऊ नृत्य उत्सव सरकार की तरफ से ओडिशा एवं झारखंड में मनाये जाने वाला है। उत्तर कलिंग माटी का यह ओडिया जन मानस का उत्सव उस गौरवमय गाथा का इतिहास रहा है जो राजकीय सामरिक कला संस्कृति को लेकर ओत प्रोत है। परन्तु मयूरभंज जिले में ओडिशा सरकार की तरफ से वाहां का प्रशासन इस उत्सव पर निकलने वाली स्मारिका हेतु लेख आमंत्रित करने का आदेश विधिवत जिला प्रशासन मयूरभंज जारी कर दी है, वहीं झारखंड सरकार की तरफ से सरायकेला खरसावां जिला प्रशासन या पश्चिम सिंहभूम द्वारा उत्सव विशेषांक या स्मारिका निकालने हेतु कोई आदेश नहीं निकलना सर्वत्र चर्चा का विषय है, यद्यपि छऊ की जन्म स्थली ही सरायकेला रही।

उल्लेखनीय की 16 कला की ऐतिहासिक नगरी सरायकेला के देशी रियासत के छावनियों के अखाड़ों से समर कला के रूप में विकसित होकर छऊ का सृजन हुआ था कभी। इतिहास गवाह है कि सरायकेला में कभी भी मुगल, मराठा अंग्रेजों ने अपना परचम नहीं लहराया। इस महत्वपूर्ण कला जिसका आधुनिक स्वरूप राज प्रसाद के आंगन में मां पाउडी देवी के समक्ष हुआ उसे आज भी अखाड़ा ही कहते हैं।जहा उत्सव आरंभ के दिन अखाड़ा माडा के नाम से जाना जाता है फिर नृत्य के समय अनेक धार्मिक सांस्कृतिक अनुष्ठान होते रहते हैं।

परन्तु सरायकेला का विश्वप्रसिद्ध कला आज याहां पुरी तरह उपेक्षित है।विगत तीन दशकों से न तो बिहार सरकार नही झारखंड सरकार ने एक

पूर्णकालिक निदेशक दे पाये है। नतीजा स्वर्ण रेखा प्रोजेक्ट से आया लिपिक तपन पट्टनायक कैसे प्रभारी निदेशक बन बैठे जहां यह मसला उच्चस्तरीय जांच का विषय है कहीं उससे भी महत्वपूर्ण वर्तमान समय में इस ओडिया कला का संस्थान का ही ठप रहना। सनद रहे कि विगत डेढ़ दो वर्ष से इस सरकारी संस्था बंद था, विगत वर्ष पूर्व अनुमंडल पदाधिकारी सुनील कुमार प्रजापति के प्रयास से खुलाक्ष। इससे साफ जाहिर होता उस कि झारखंड में इस ओड़िया लोगों की अमुल्य धरोहर को कितनी तरहीज हर सरकार देती आयी है। आज ऊंट करबट लोंगा इतिहास के पन्नों में क्या दर्ज होगा यह सर्वाधिक चर्चित विषय है।

राजधानी में कार में युवती की हत्या का प्रयास ! पुलिस स्टेशन में मामला दर्ज

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वरः पुरानी रंजिश के चलते कार में युवती की हत्या के प्रयास का आरोप। युवती ने इसकी सूचना थाने में दी। ऐसी ही एक घटना शहीदनगर थाना क्षेत्र में घटी।जानकारी के अनुसार, शहीदनगर में महर्षि कॉलेज रोड पर जब युवती अपनी स्कूटी से जा रही थी, तभी कुछ युवकों ने पहले उसकी स्कूटी को धक्का मारा और फिर भाग गए।युवती जमीन पर गिर गई और उसका हाथ भी टूट गया। बाद में, दो अन्य युवक उसी स्थान पर युवती के पास पहुंचे, उसे धमकाया और घटनास्थल से भागने से पहले उससे कहा कि वह उसे कुचलकर आत्महत्या कर ले। हालांकि, घटना के बाद युवती तुरंत शहीदनगर थाने पहुंची और आत्मसमर्पण कर दिया। इसके बाद पुलिस ने जांच शुरू की।

पता चला है कि युवती के पिता बड़ागढ़ इलाके में जिम के मालिक हैं। इससे पहले इस जिम भवन के मालिक के साथ किराये को लेकर विवाद हुआ था। युवती ने बताया कि उसने बड़ागढ़ थाने में शिकायत भी दर्ज कराई है। युवती ने यह भी आरोप लगाया है कि एफआईआर के कारण वे उसे जान से मारने की कोशिश कर रहे हैं।

परिवहन घोटाला मामला: सौम्या शंकर EOW में

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वरः EOWB में सौम्या शंकर चक्र। गंधमर्दन लोडिंग एंड कोऑपरेटिव सोसायटी के घोटाले पर उठे सवाल। EOWB ने सौम्या समेत 6 लोगों को नोटिस जारी कर हाजिर होने को कहा है। EOWB ने इस मामले में पहले पूर्व अध्यक्ष मानस बारिक को गिरफ्तार किया था। गंधमर्दन के संपादक उत्कल दास को भी गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया गया था। EOWB ने 8 फरवरी को दो लोगों को गिरफ्तार किया था।

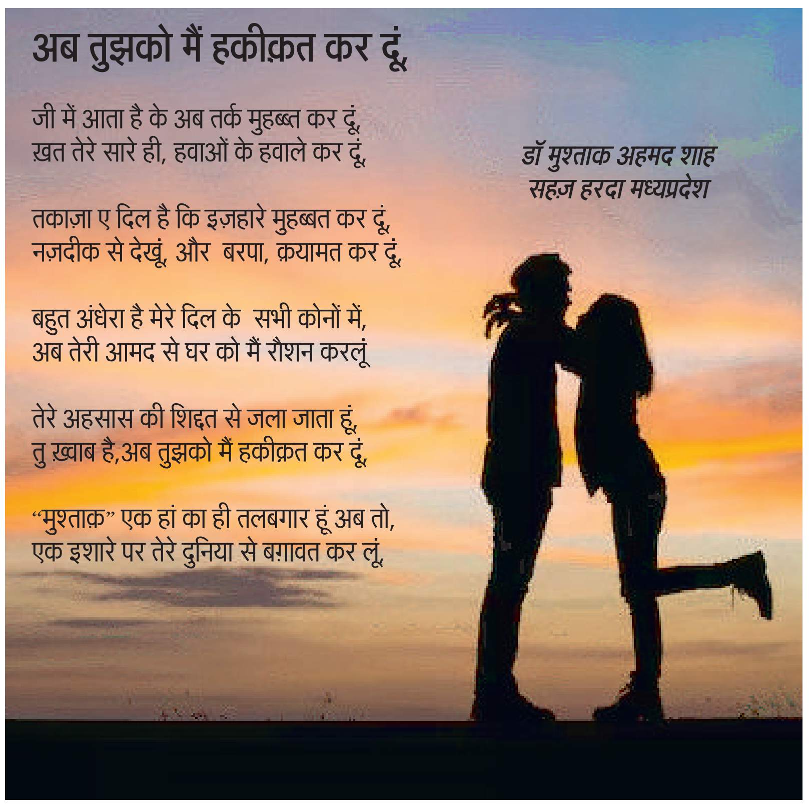

न कहना ये 'घर', 'बेच दो'...!

किसी ने सिर्फ कहा ही ये 'घर' बेच दो,
कहीं और दूसरा 'नया घर' खरीद लो।
यहॉ पूरा बचपन, पूरी जवानी बीत गई,
कब कितनी बिगड़ी बातें भी सध गई।
कितनी कीलें ठोकी, ये कितनी बच गई,
यहॉ कितनी दीवारें तस्वीरों से भर गई।

किसी ने सिर्फ कहा ही ये 'घर' बेच दो,
कहीं और दूसरा 'नया घर' खरीद लो।
जब कोई कहता हमारे घर आकर रहता,
'तुम्हारे यहॉ आकर हमें अच्छा लगता।
मन हमारा खुश होकर आनंदित हो जाता,
इस घर में हमको प्रेम, स्नेह मिल जाता।

किसी ने सिर्फ कहा ही ये 'घर' बेच दो,
कहीं और दूसरा 'नया घर' खरीद लो।
अथक परिश्रम और तरी की इसमें हमने,
माता-पिता के खून-पसीने से लगा रमने।
मुझे इससे कितना मोह है लगा हूँ समझने,
ऐसे-कैसे छोड़ दूँ इसको मन लगा तड़पने।
न कहना 'बेच दो' पहले 'बनाकर' दिखाओं?

संजय एम तराणेकर

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023